शोधशौर्यम्

ISSN - 2581-6306

Peer Reviewed and Refereed
International
Scientific Research Journal

website : www.shisrrj.com

SHODHSHAURYAM
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED RESEARCH JOURNAL

Volume 6, Issue 2, March-April-2023

Email: editor@shisrrj.com, shisrrj@gmail.com

शोधशौर्यम्

Shodhshauryam

International Scientific Refereed Research Journal

[Frequency: Bimonthly]

ISSN : 2581-6306

Volume 6, Issue 2, March-April-2023

International Peer Reviewed, Open Access Journal
Bimonthly Publication

Published By
Technoscience Academy

Website URL : www.technoscienceacademy.com

Advisory / Editorial Board

Advisory Board

- **Prof. Radhavallabh Tripathi**
  Ex-Vice Chancellor, Central Sanskrit University, New Delhi, India
- **Prof. B. K. Dalai**
  Director and Head. (Ex) Centre of Advanced Study in Sanskrit. S P Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Divakar Mohanty**
  Professor in Sanskrit, Centre of Advanced Study in Sanskrit (C. A. S. S.), Savitribai Phule Pune University, Ganeshkhind, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Ramakant Pandey**
  Director, Central Sanskrit University,Bhopal Campus.Madhya Pradesh, India
- **Prof. Parag B Joshi**
  Professor & OsD to VC, Department of Sanskrit Language & Literature, HoD, Modern Language Department, Coordinator, IQAC, Director, School of Shastric Learning, Coordinator, research Course, KKSU, Ramtek, Nagpur, India
- **Prof. Sukanta Kumar Senapati**
  Director, C.S.U., Eklavya Campus, Agartala, Central Sanskrit University,Janakpuri, New Delhi, India
- **Prof. Sadashiv Kumar Dwivedi**
  Professor, Department of Sanskrit, Faculty of Arts, Coordinator, Bharat adhyayan kendra, Banaras Hindu University, Varanasi Uttar Pradesh, India
- **Prof. Dinesh P Rasal**
  Professor, Department of Sanskrit and Prakrit, Savitribai Phule Pune University, Pune, Maharashtra, India
- **Prof. Kaushalendra Pandey**
  Head of Department, Department of Sahitya, Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Manoj Mishra**
  Professor, Head of the Department, Department of Vedas, Central Sanskrit University, Ganganath Jha Campus, Azad Park, Prayagraj, Uttar Pradesh, India

- **Prof. Ramnarayan Dwivedi**
  Head, Department of Vyakarana Faculty of Sanskrit Vidya Dharma Vigyan, BHU, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Prof. Ram Kishore Tripathi**
  Head, Department of Vedanta, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
- **Dr. Pankaj Kumar Vyas**
  Associate Professor, Department- Vyakarana, National Sanskrit University (A central University), Tirupati, India

---

Editor-In-Chief

- **Dr. Raj Kumar**
  SST, Palamu, Jharkhand, India
  Email : editor@shisrrj.com

Associate Editor

- **Prof. Dr. H. M. Srivastava**
  Department of Mathematics and Statistics, University of Victoria, Victoria, British Columbia, Canada
- **Prof. Daya Shankar Tiwary**
  Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Prof. Satyapal Singh**
  Department of Sanskrit, Delhi University, Delhi, India
- **Dr. Ashok Kumar Mishra**
  Assistant Professor (Vyakaran), S. D. Aadarsh Sanskrit College Ambala Cantt Haryana, India
- **Dr. Somanath Dash**
  Assistant Professor, Department of Research and Publications, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

- **Dr. Raj Kumar Mishra**
  Assistant Professor, Department of Sahitya, Central Sanskrit University Vedavyas Campus Balahar Kangara Himachal Pradesh, India

---

Executive Editor

- **Dr. Sheshang D. Degadwala**
  Associate Professor & Head of Department, Department of Computer Engineering, Sigma University, Vadodara, Gujarat

---

Editors

- **Dr. Ekkurti Venkateswarlu**
  Assistant Professor in Education, Sri Lal bahadur Sashtri National Sanskrit University, (Central University), New Delhi, India
- **Rajesh Mondal**
  Department of Vyakarana, National Sanskrit University, Tirupati, Andhra Pradesh, India

---

Assistant Editors

- **Dr. Virendra Kumar Maurya**
  Assistant Professor- Sanskrit, Government P.G. College Alapur, Ambedkarnagar, Uttar Pradesh, India

---

International Editorial Board

- **Dr. Agus Purwanto, ST, MT**
  Assistant Professor, Pelita Harapan University Indonesia, Pelita Harapan University, Indonesia

- **Dr. Morve Roshan K**
  Lecturer, Teacher, Tutor, Volunteer, Haiku Poetess, Editor, Writer, and Translator
  Honorary Research Associate, Bangor University, United Kingdom

- **Vaibhav Sundriyal**
  Research Scientist, Old Dominion University Research Foundation, USA

- **Dr. Elsadig Gamaleldeen**
  Assistant Professor, Omdurman Ahlia University, Sudan

- **Frank Angelo Pacala**
  Samar State University, Samahang Pisika ng Pilipinas

- **Thabani Nyoni**
  Department of Economics Employers Confederation of Zimbabwe (EMCOZ) ,
  University of Zimbabwe, Zimbabwe

- **Md. Amir Hossain**
  IBAIS University/Uttara University, Dhaka, Bangladesh

- **Mahasin Gad Alla Mohamed**
  Assistant Professor, Kingdom Saudi Arabia, Jazan University, Faculty of Education - Female Section, Sabya

CONTENT

SR. NO	ARTICLE/PAPER	PAGE NO
1	**हिन्दी आत्मकथा-साहित्य में महिला आत्मकथा का स्थान** ओम प्रकाष वत्स	01-08
2	**श्रमजीवी महिलाएँ एवं पारिवारिक संगठन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)** डॉ. शाहेदा सिद्दीक़ी	09-23
3	**Tachinid Fly, Sturmia Species : A Major Larval Parasitoid of Teak Defoliator, Hyblaea Puera** N. Roychoudhury, Rajesh Kumar Mishra	23-26
4	**Occurrence of Larval Parasitoid, Apanteles Rudius on Teak Defoliator, Hyblaea Puera** N. Roychoudhury, Rajesh Kumar Mishra	27-30
5	**Assessing the Effect of Stress on the Consumption of Various Food Groups by Adolescent Girls at Banaras Hindu University** Mahajabi Fatma, Garima Upadhyay	31-39
6	**रामायण का आदिकाव्यत्व एवं उसका सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व** डॉ. दिलीप कुमार	40-42
7	**महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा, प्रकृति कारण एवं निवारण** डॉ. वंचना सिंह परिहार	43-65
8	**To Study the Ecology and Effect of Pollution on Kanh River Indore** Shatakshi Singh	66-81

9	**माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता: सर्वेक्षणात्मक अध्ययन** डॉ. विद्या प्रकाश सिंह	82-86
10	**महाकाव्यजानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययोः राजनीतिः, अर्थनीतिः, राजधर्मः, सार्वभौमत्वं विज्ञानम्** डॉ. सीता राम शर्मा	87-94
11	**अनुसूचितजाति-जनजातिच्छात्राणां शैक्षिकसामाजिकविकासे पर्यावरणस्य महत्त्वम्** प्रमोद कुमार दास	95-98

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

हिन्दी आत्मकथा–साहित्य में महिला आत्मकथा का स्थान

ओम प्रकाष वत्स

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, ति. माँ. भा. वि. वि., भागलपुर

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 01-08

Article History
Received : 01 March 2023
Published : 15 March 2023

सारांश साहित्य कला है, समाज का दर्पण है, परंतु स्त्री साहित्य इसके साथ–साथ व्यक्ति की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का साहित्य है, जहाँ लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना होती है। अतः यह सही ही कहा गया है कि जहाँ दमन है, आतंक है, भय है, संताप है तथा शोषण है, वहीं उसके विरोध में स्त्री साहित्य सामने है। परिवर्तन एकदम नहीं होता। परिवर्तन की एक प्रक्रिया होती है। स्त्री की स्वतंत्रता का पहला चरण यही है कि वह दूसरों द्वारा दी गई देह की अवधारणा से मुक्त हो। अपनी देह के फैसले खुद ले। नारी की चेतना की पैरवी रचनात्मक जगत में तब तक अधूरी, बे मायने, सतही और अयथार्थवादी होगी जब तक देश की आधी आबादी की शेष पैंतालीस प्रतिशत उत्पीड़ित ग्रामीण स्त्रियों की बुनियादी समस्याएँ उकेरी नहीं जाएँगी। स्त्रीत्ववादी लेखन ने दो बातें तय कर दी है। पहली, कि वह एक स्वतंत्र साहित्यिक प्रकार्य है। यह भले ही हिन्दी में कोई आक्रामक आन्दोलन नहीं बना है, लेकिन इसने साहित्येतिहास के मर्दवादी पाठ को विखण्डित कर दिया है। दूसरी यह कि आलोचना के चालू औजार उसे पढ़ने में नाकामयाब हैं। इसलिए नारी जाति को चाहिए कि अपनी मुक्ति के सवाल को प्राथमिकता दें और सोचें कि हमारे जीवन का प्रमुख लक्ष्य क्या है? उसको पाने की हममें कितनी क्षमताएँ और संभावनाएँ हैं और उन्हें साकार करने के लिए हमें क्या करना है? अतः ऐसे में यह जरुरी है पूँजीवाद एवं पितृसत्ता से एक साथ लड़ा जाये। फिर तो पुरुष वर्ग महिलाओं के समर्थन में आयेगें।

भारतीय संस्कृति में आदिकाल से नारी समाज एवं साहित्य का केन्द्र बिन्दु बनी हुई है, बावजूद नारी अस्मिता का प्रश्न अनादि काल से अनेक रूढ़ियों और परम्पराओं या मर्यादा के अनुसरण में दबता आया है। हर काल में उन्हें अलग–अलग दृष्टिकोण और उपमों से नवाजा गया है। आदिकाल में उसे 'देवी' या 'शक्ति' कहा गया, तो

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भक्तिकाल में उसे 'माया', रीतिकाल में उसे 'श्रृंगार' और 'भोग' की वस्तु तो आधुनिक काल में उसे केन्द्र बिन्दु बनाकर उस पर विमर्श किये गये। जबकि नारी भी पुरुष के समान एक विचारशील है। उनका भी अपना निजी सोच एवं व्यवहार है और उस सोच के अनुरूप समाज का निर्माण करना चाहती है। समय के प्रवाह के साथ परिस्थितियों में बदलाव आया और स्वयं नारी ने भी जागृत होकर अपनी आत्मवेदना को व्यक्त करने के लिए साहित्य जगत में प्रवेश किया। हिंदी साहित्य में पिछले तीन–चार दशक में महिला लेखिकाओं ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है। जिसमें मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, अमृता प्रीतम, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा उल्लेखनीय हैं। ज्ञातव्य है कि कुछ समय पूर्व तक स्त्री लेखन पर यह आरोप लगाया जाता था कि यह सीमित दृष्टि का साहित्य है, जो परिवार के दायरे से बाहर नहीं निकलता। यह समय समाज के उन पेचीदा आयामों को नहीं उठाता जो कि समकालीन जीवन को परिभाषित कर सके। लेकिन धीरे–धीरे इन आरोपों का अनौचित्य स्वतः सिद्ध होता चला गया। आत्माभिव्यक्ति की आकांक्षा के साथ–साथ आत्मसजगता का रेखांकन पिछले कुछ वर्षों में महिला लेखन का केन्द्र बिन्दु रहा है। हिंदी कथा साहित्य नई सदी में अधिक से अधिक स्त्री केन्द्रित बना है। कथालेखन के क्षेत्र में स्त्री लेखिकाओं ने अपने कथा लेखन को अधिक प्रासंगिक स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने विषयवस्तु की दृष्टि से नई जमीनों को तलाशा है और समस्याओं को सरोकार के नये कोणों से प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य विशेषकर महिला लेखिकाओं द्वारा स्त्री जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं को उजागर करने में समर्थ हुई हैं, जिनका कि स्वरूप पहले स्पष्ट नहीं था। आज स्त्री लेखन में आंचलिक परिवेश में संघर्षशील स्त्री के नये और बदलते चित्र दिखाई दे रहे हैं। आज देखें तो गीतांजलि श्री, अलका सरावगी, प्रभा खेतान, जया जादवानी, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, मधु कांकरिया, महुआ माँझी, अनामिका आदि लेखिकाओं ने पहले से मौजूद स्त्रीवादी लेखन को नये सन्दर्भो में नयी अभिव्यक्ति और नये मुहावरों को सर्जित करते हुए प्रभावशाली स्वरुप देने में समर्थ दिखती हैं। पारंपरिक स्त्रीवादी विचारधारा से अलग नारी की दैहिक स्वतंत्रता के प्रश्न को पीछे छोड़ते हुए स्त्री व्यक्तित्व को पुरुष निरपेक्ष दृष्टि से प्रस्तुत करने का नूतन प्रयास नवागन्तुक लेखिकाओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है। कथा साहित्य की विषयवस्तु के चयन में समकालीन बोध के साथ–साथ शिल्प विधान में भी पर्याप्त नवीनता दिखाई देती है। अभिव्यक्ति की धारदार शैली नई सदी के महिला लेखन की विशिष्टता है। भारतीय समाज में स्त्री के नित बदलते हुए स्वरूप तथा उसकी बदलती हुई भूमिका को इन लेखिकाओं ने विस्मयकारी साहस के साथ प्रस्तुत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इसी संदर्भ में महिलाओं द्वारा रचित आत्मकथा लेखन ने भी साहित्य जगत को उद्वेलित किया है। अकस्मात् महिला आत्मकथा लेखन में गौरतलब वृद्धि हुई है। इन आत्मकथाओं ने स्त्री विमर्श को परखने के लिए नयी दृष्टि प्रदान की है।

अद्यतन हिन्दी साहित्य में महिला–लेखन में एक तरह से बाढ़–सी आ गई है, चाहे वह लेखन का कोई भी विधा क्यों न हो। एक से बढ़कर एक आत्मकथा सामने आ रही है। यथा – अमृता प्रीतम की रचना

''रसीदी टिकट', मन्नू भंडारी कृत ''एक कहानी यह भी'', कृष्णा अग्निहोत्री की, ''लगता नहीं है दिल मेरा'', कृष्णा सोबती कृत, 'सोबती–वैद संवाद'', चन्द्रकिरण सोनरिक्शा कृत 'पिंजरे की मैना'', पद्मा सचदेव कृत 'बूँद बावड़ी'', प्रभा खेतान की ''अन्या से अनन्या'', मैत्रेयी पुष्पा रचित, ''कस्तूरी कुंडल बसै' तथा ''गुड़िया भीतर गुड़िया'', तहमीना दुरानी, ''मेरे आका'', रमणिका गुप्ता कृत ''हादसे'', कौशल्या बैसंत्री की ''दोहरा अभिशाप'', बेबी हाल्दार रचित, ''आलो अंधारी'', तस्लीमा नसरीन कृत ''मेरे बचपन के दिन'', इत्यादि हिन्दी साहित्य के अमूल्य आत्मकथाएं हैं। महिला रचनाकारों ने अपने आत्मकथा द्वारा जो मर्दों के चेहरे से नकाब उतारा है, उससे मर्दवादी सोच में बौखलाहट देखा जा सकता है। इस बौखलाहट का परिणाम है विभूतिनारायण राय का वह इंटरव्यू जो राकेश मिश्र के द्वारा लिया गया था, उसमें – ''लेखिकाओं के लिए अमर्यादित शब्द 'छिनाल' का आरोप तक लगाया गया।''[1] फिलहाल स्त्री–विमर्श बेवफाई के विराट उत्सव की तरह है। यों तो रायजी के इस हमले में कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, रमणिका गुप्ता आदि सभी लेखिकाएँ आती हैं, मगर यहाँ निश्चय ही इशारा मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा ''गुड़िया भीतर गुड़िया' की ओर है। कितना दोरंगी नीति है कि जब पुरुष स्त्रियों पर लिखे तो सब कुछ ठीक है और यदि नारी ने अपनी भाषा तथा अपनेनुसार लिखना शुरू किया तो पहाड़ गिर पड़ा। वस्तुतः रचनात्मक जवाब देने की जब शक्ति–प्रतिभा नहीं होती तो ऐसी मर्दवादी लफंगई शुरू हो जाती है। महिलाएँ भी अब चुपचाप कहाँ रहने वाली थी। प्रतिक्रियास्वरुप महिला नेताओं, बुद्धिजीवियों और लेखिकाओं का ऐसा जबरदस्त विरोध आरंभ हुआ कि रायजी जैसे मानसिकतावादी लोगों को तत्कालीन को मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल और अनेक महिला संगठनों से अपने इस ''दुर्भाग्यपूर्ण शब्द–चुनाव के लिए'' माफी माँगनी पड़ी।

स्त्री लेखन का विषय–वस्तु पूरे समाज और देश की हालात से संबंद्ध होने के बावजूद इसका केन्द्रीय मुद्दा महिलाओं से जुड़ा है। ऐसा होना इसलिए स्वभाविक है कि स्त्री समुदाय सदियों की पीड़ा को भुगतती रही है। कुल मिलाकर रचनात्मक साहित्य सृजन में महिलाओं की भागीदारी में निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। पर कुछ नारी लेखक के समालोचनात्मक विद्वानों का कहना है कि नारी का लेखन का विषय वस्तु सीमित अथवा बंधा हुआ है। मुख्यतः अपने लेखनी में पारिवारिक, सामाजिक एवं निजी समस्याओं से संबंधित मुद्दों को ही उठाती हैं। पर ऐसा आरोप लगाना उचित नहीं माना जा सकता है। यह स्वाभाविक है कि जिन समस्याओं एवं परिस्थितियों से उन्हें इसलिए गुजरना पड़ता है, उस विषय को प्राथमिकता मिलेगी ही। फिर आज कोई ऐसा बंदिश नहीं दिखता जहाँ पर मान लिया जाए कि लेखनी का यह क्षेत्र स्त्री और पुरुष के लिए सुनिश्चित है। लिखने में स्त्री पुरुष के विषयों का बँटवारा अथवा निर्धारण पूरी तरह आज अप्रासंगिक हो चुका है। यह कहा जा सकता है कि भले ही महिलाओं के लेखन की अपनी कुछ सीमाएँ हो, पुरुषों की सत्ता को खुलकर चुनौती देने में उन्हें संशय होता हो, कुछ लोग उनकी बेबाकी को कुंठा एवं परंपरा के विरुद्ध मानते हो, तो कुछ लोग यह

आरोप लगाते है कि जिस तरह से सेक्स पर बेबाकी से राय रखती हैं उससे साहित्य भी विकृत हो रहा है, यह महिला साहित्यकारों एवं साहित्य दोनों के लिए ही चुनौती है। पर इन सबके बावजूद आज महिलाएँ बढ़–चढ़ कर लेखन कार्य में जुड़ी हुई है और अच्छा–खासा पाठक वर्ग भी उनकी रचनाओं को हौसला अफजाई कर रहा। वस्तुतः स्त्री–पुरुष दोनों की लेखनी साहित्य जमात जगत में पूरक है।

महिलाओं में आए जागृति, शिक्षा, स्वावलंबन एवं समाज में आ रहे बदलाव का ही नतीजा है कि महिला लेखन के क्षेत्र में नब्बे दशक से एक नए युग की शुरुआत हुई और यह निरंतरता से कायम है। पहले जहाँ एकाध महिला लेखन कला से अपने को जोड़ती थी अथवा शौक रखते हुए अपना कैरियर बनाती थी, अब वह बहुतायत में दिखी जा सकती है। इसी पृष्ठभूमि में महिलाकृत आत्मकथा लेखन में भी प्रचुरता देखेंने को मिल रही है। आश्चर्य की बात है आत्मकथा लेखन अन्य विधाओं के तुलना में बाद में आई। संभवत इसका कारण यह कहा जा सकता है कि महिलाओं द्वारा रचित आत्मकथा कुछ संस्करण तक सीमित थी। हिन्दीत्तर भाषाओं में उन्नीसवीं सदी से ही महत्त्वपूर्ण आत्मकथाएँ मिलतीं है और जिसमें स्त्री–जीवन और उनकी जटिलताओं से समाज रूबरू होता है। देखें तो अठारहवीं सदी में आत्मकथा का जन्म महान लोगों द्वारा अपनी जीवनी, उनकी गाथाओं, संघर्षों इत्यादि से समाज को परिचय करवाने के लिए हुआ। निश्चित रुप में आत्मकथा में अपनी उपलब्धियों का बखान के बू से इनकार नहीं किया जा सकता था। उस समय ऐसा कोई उदाहरण नहीं दिखता जहाँ की आम व्यक्ति अपनी आत्मकथा को लिखा हो। संभवतः यही कारण है कि स्त्री आत्मकथा का आरंभ देर से हुई और थोड़ी संख्या में उपलब्ध होती है। इस संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि स्त्रियों की पुरूष प्रधान समाज की संरचनाओं में महिलाओं में इस प्रकार का हिम्मत आना आसान नहीं होता था।[2] महिलाओं की इस प्रकार की वस्तु–स्थिति को नकारा नहीं जा सकता, परंतु आज आत्मकथा स्त्रियों की खुद की आवाज बनी है, जिनके माध्यम से उनके विचार एवं जीवन के उनके निजी अनुभव सामने आ रही हैं और वह भी उनकी खुद के नजरिये से।

समकालीन महिला आत्मकथा

जिस प्रकार की भारतीयों की सामाजिक पष्ठभूमि है और लोग बौद्धिक रुप से अभी भी बहुत हद तक पंरपरावादी है, उस परिवेश में महिलाओं के लिए आत्मकथा की रचना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं थी। उन्हें हमेशा समाज में दोयम दर्जे की स्थिति से गुजरना पड़ा है। वे किसी की बहू, बेटी, माँ इत्यादि के नामों से ही पहचानी जाती रहीं हैं। निश्चित रूप से महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए जो आंदोलन किये उनसे पुरूषवादी मानसिकता वाली समाज में पहचान मिली। इस कड़ी में स्त्री–आत्मकथा नारी समुदाय को जगाने एवं उनके प्रति समाज की नजरिया को बदलने में प्रभावी भूमिका निभाया है। महिलाकृत आत्मकथा ने एक तरह से साहित्यिक और सामाजिक दोनों स्तर पर स्त्री बहस को केंद्रीय मुद्दा बना दिया। हालाँकि भले ही

19वीं शताब्दी के अंतिम दशक के बाद आत्मकथा लेखन प्रयोग में आया हो, परंतु इस तरह के विचारों की नींव पूर्व के लेखन में हम देखें सकते हैं। शिवरानी देवी, महादेवी वर्मा इत्यादि के स्मरण में स्त्री के सशक्त रूप को का दर्शन मिलता है। उन्होंने अपनी लेखनी में पुरुषवादी अहंकारी सोच को पूरे आत्मविश्वास के साथ विरोध कर स्त्री के अधिकारों एवं मान– सम्मान की बात कही हैं। आज बखूबी इस परंपरा को मैत्रेयी पुष्पा, रमणिका गुप्ता, मन्नू भंडारी, कौशल्या बैसंत्री जैसी महिलाओं ने अपनी आत्मकथाओं के द्वारा आगे बढ़ाया है। अपने अधिकारों के प्रति सजगता, अपने खिलाफ उठने वाला किसी भी प्रतिरोध का डटकर मुकाबला करना, अपने परिवारों के प्रति दायित्वों का निर्वहन, शिक्षा, स्वावलंबी, जीवन यापन, खुद से निर्णय लेने आदि तमाम पहलुएँ महिलाओं को सशक्त बनाती हैं। इन तमाम मुद्दों को निडरता के साथ महिलाओं ने अपनी आत्मकथा में वर्णित की हैं। आत्मकथा में लेखिका जद्दोजहद करती दिखती है। सही मायने में स्त्री विमर्श से जुड़े तमाम पहलुओं को आत्मकथा में उठाया गया है, जो एक तरफ स्त्रियों की बेचारगी न्याय पाने की अभिलाषा को दर्शाती है तो दूसरी ओर उन में आए हुए आत्मविश्वास को भी दर्शाता है।

'एक कहानी यह भी', 'एक अनपढ़ कथा' 'हादसे', 'दोहरा अभिशाप', 'गुड़िया भीतर गुड़िया', आदि शीर्षक समाज को अनुभव करवाता है कि नारी को किन–किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। इसकी झलक आत्मकथाओं में बखूबी दिखायी देती है। डॉ. प्रतिभा अग्रवाल ने दो भागों में आत्मकथा लिखी है। प्रथम भाग 'दस्तक जिंदगी की है, जो सन् 1980 में प्रकाशित हुआ है। इसमें अपने परिवार की तथा उस परिवारों से जुड़े लोगों का विवरण दिया है। दूसरा भाग 'मोड़ जिंदगी का' प्रकाशित हुआ। इस भाग का सन् 1986 में प्रकाशन हुआ है। इसमें लेखिका ने कलकत्ता आने के बाद अपने पारिवारिक जीवन के सुख दुख के साथ हिंदी तथा बंगला रंगमंच से जुड़े महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के योगदान को तटस्थ रूप से चित्रित किया है। यह सिर्फ आत्मकथा नहीं है बल्कि रंगमंच का इतिहास और नाट्यशास्त्र भी है।

कुसुम अंसल ने 'जो कहा नहीं गया' आत्मकथा लिखी, जो सन् 1986 में प्रकाशित हुई। इस आत्मकथा में आसक्ति–विरक्ति का भाव गहराई से दिखता है। अलीगढ़ के अमीर घर में एकलौती बेटी को 'अनाथ बालिका' की तरह पाला जाता है और उसे संतानहीन दम्पति को गोद लेने के रूप में 'डोनेट' कर दिया जाता है। संतान के रूप में बालिका का स्थान नीचे है, इस धारणावाले समाज की माया ही अपना मकड़जाल फैलाए हुए दिखाई पड़ती है।[4]

चन्द्रकिरण सोनरेक्सा ने 'पिंजरे की मैना' नाम से आत्मकथा लिखीं। यह आत्मकथा सन 2008 में प्रकाशित हुई।[3] इसमें लेखिका ने अपनी वंश–परम्परा एवं पूर्वजों का परिचय दिया है। समाज के सारे दूषण विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से दर्शाए गए है। तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति बड़ी दयनीय थी। लड़कियों को

लड़कों की तुलना में हीन समझा जाता है तथा परिवार उसे शिक्षा से भी वंचित रखने में संकोच नहीं करता। लेखिका ने उन विभिन्न घटनाओं एवं प्रसंगों का जिक्र किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है दिल मेरा' नाम से सन् 1987 में आत्मकथा प्रकाशित हो चुकी है। यह आत्मकथा पुरूष निर्मित पितृसत्तात्मक नैतिक प्रतिमानों की धज्जियाँ उड़ाकर रख देती है। लेखिका ने एक ऐसे समाज में आँखे खोली जहाँ पुत्र के सामने पुत्री कुछ नहीं थी। उसके जन्म पर माता पिता निराश हो जाते हैं। छोटे और बड़े में कोई तालमेल नहीं है। उनकी इच्छाओं और भावनाओं को जानने की कोई कोशिश नहीं करता है। उन पर कड़क नियम लागू किये जाते हैं। इस में दमघोंटू जिंदगी का आवरण प्रस्तुत किया है। इसके बाद लेखिका ने 'और....और....औरत' नाम से आत्मकथा का दूसरा भाग लिखा, जो सन् 2010 में प्रकाशित हो चुका है। इसमें लेखिका ने जहाँ सिर्फ केवल रहस्य या अश्लील प्रेम कथाएं ही नहीं लिखी, वहाँ रोजमर्रा की लड़ाई को अभिव्यक्त किया है। सिर्फ जीवन में रोमांस ही सब कुछ नहीं है। अर्थ, संयम, दैनंदिन की अनिवार्य आवश्यकताओं की भी अपनी अहमियत है।

मन्नू भंडारी ने 'एक कहानी यह भी' नाम से आत्मकथा लिखी, जो सन् 2006 में प्रकाशित हुआ। इसमें मन्नु जी बचपन से लेकर पति के साथ बिताए हुए जीवन को उभारने का प्रयास किया है।

प्रभा खेतान ने अपने जीवन की 'अन्या से अनन्या' नाम से आत्मकथा लिखी, जो सन् 2007 में प्रकाशित हो चुकी है। कलकत्ते के व्यापारिक दृष्टि से संपन्न समझे जानेवाले खेतान परिवार में जन्म लेकर प्रभा ने अपने जीवन में बहुत बड़ी भूल की अपने आयु में दुगुने विवाहित पुरूष से प्रेम करती है। उस परिवार के साथ आए हुए संबंध को उजागर करने का प्रयास किया है। इसमें लेखिका को नियति का इतिवृत्त भले ही हो, भारतीय नारी की दशा–दिशा का दर्पण तो यह निश्चित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने जीवन को दो भाग में चित्रण किया है। प्रथम खंड 'कस्तूरी कुंडल बसे' सन् 2002 में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखिका ने बुंदेलखंडी बोलीबनी के ग्रामीण लहजा को विशिष्ट रूप से पठनीय बनाया है। इसमें लेखिका ने माँ कस्तूरी के विचारों तथा उनके समाज के साथ आए सम्बंधों को चित्रित किया है। 2008 में प्रकाशित दूसरा भाग 'गुड़िया भीतर गुड़िया' एक नारी के अंदर दो नारियाँ किस प्रकार उपस्थित रहती है, उसका चित्रण हुआ है।

सुशीला टाकभौंरे ने 'शिकंजे का दर्द' नाम से आत्मकथा लिखी है, जो सन् 2010 में प्रकाशित हुई है। लेखिका इसमें एक दलित नारी की दारूण यातना की कहानी ही नहीं कहती, उस वर्ण–व्यवस्था के अमानवीय स्वरूप के रेशे रेशे से पाठकों को परिचित कराती है, जिसने करोडों इंसानों की जिंदगी में जहर घोल

रखा है। इसमें लेखिका ने भंगी समाज का वर्णन किया है। साथ ही अपने बाल्यावस्था से लेकर पति के साथ बिताए हुए जीवन को उभारने का प्रयास किया है। भंगी समाज का सुधार 'वाल्मीकी' की पूजा करने या गाँधीवाद की माला जपने से संभव नहीं है। इसके लिए उन्हें आंबेडकर द्वारा बताए हुए मार्ग शिक्षा, संघर्ष एकता पर चलना होगा। यह आत्मकथा दलित नारी की शोषण मुक्ति की संघर्ष–गाथा है, एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम देखें सकते है कि आज महिलाएँ पंरपरागत बंधन को तोड़ते हुए अपने हक–हकूक की बात कह रही हैं और उसे पा भी रही है। अब साहित्य पर पुरुषों का एकाधिकार नहीं रहा। समाज, देश और दुनिया को अपनी दशा, दिशा और उत्थान से रुबरु करने के लिए पुरुषों के लेखनी पर निर्भर नहीं रहना पड़ रहा है। अब वे अपनी तमाम आकांक्षाओं, समस्याओं, अधिकारों अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त कर रहीं हैं। हिंदी साहित्य और लेखन में महिलाएँ अपना स्थान बनाये हुए हैं। लेखिकाओं ने नारी चेतना, नारी अस्मिता और नारी पीड़ा को युक्ति और तर्क के साथ निर्भीक और निडर होकर नारी शक्ति को व्यक्त किया है। मृणाल पांडे, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, कमल कपूर, पदमा सचदेव, जेबा रषीद, अलका सरावगी, राजी सेठ, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया आदि अनेक नाम की बहुत लम्बी सूची है, जिन्होंने अपने लेखन द्वारा काल परिवर्तन का संदेश दे रहीं हैं। सच्चाई तो यह है कि साहित्यिक क्या? महिलाएँ किसी अन्य क्षेत्रों में आज पीछे नहीं है। सभी क्षेत्रों में वे पुरुष के साथ साझेदारी निभाने को तेजी से अग्रसर हैं। उनमें आई चेतना और जागृति समाज में जो पारंपरिक छवि सदियों से बनी थी, उसको तेजी से बदलने में कामयाब हो रही हैं। नारी लेखन के फलक बहुत व्यापक है, यद्यपि उनका लेखन प्रायः नायिका व महिलाओं से संबंधित मुद्दों के इर्द–गिर्द हैं। इसके साथ ही वे समाजिक दायित्वों का भी बखूबी निर्वहन कर रही हैं। अतः महिलाओं ने अपनी रचना में इन विषयों को प्राथमिकताएँ दी। महिला लेखिकाओं ने अपने लेखन के माध्यम से नारी अस्मिता को एक सशक्त रुप प्रदान किये। भारतीय परंपरागत समाज के लिए यह स्त्री संदर्भ में एक नया अहसास था। आज स्त्री की पहली शर्त है, पराधीनता.' चाहे घर के भीतर हो या बाहर यह भलीभाँति महिलाएँ समझ चुकी हैं। अब उन्हें पुरुषों के समान अधिकार चाहिए किसी भी सूरत में कम नहीं। उन्हें पुरुष और सामाजिक हिंसा, दमन, उत्पीड़न और शोषण से मुक्ति चाहिए और वह भी अविलम्ब। नारी आदर्श पत्नी के रूप में समाज द्वारा महिमामंडित कर जब चुपचाप पति या पुरुष का आदेश सिर झुका कर मानते हुए पतियों के जुल्मों को चुपचाप सहने का जमाना लद चुका है और इसकी पुष्टि कई महिला लेखिकाओं के आत्मकथाओं से स्पष्ट होता है।

संदर्भ सूचीः

1. हंसः संपादकीय, ''तुम्हीं ने तो दिए हैं हथियार,'' डॉ राजेंद्र यादव, सितंबर 2010, पृष्ठ 5.
2. ''पुनः अंकुरित होने की इच्छा और सार्मथ्य की कहानी'', गरिमा श्रीवास्तव समयांतर, जून 2008, पृष्ठ 17—19.
3. पिंजड़े की मैना – चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ – अंतिम आवरण पृष्ठ
4. जो कहा नहीं गया – कुसुम अंसल, राजपाल प्रकाशन, 1986, पृष्ठ– IV

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

श्रमजीवी महिलाएँ एवं पारिवारिक संगठन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. शाहेदा सिद्दीक़ी
प्राध्यापक (समाजसाास्त्र) शास. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी) महाविद्यालय रीवा (म0प्र0)

Article Info

Publication Issue :

March-April-2023

Volume 6, Issue 2

Page Number : 09-23

Article History

Received : 01 March 2023

Published : 15 March 2023

सारांश :– श्रमजीवी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली के संदर्भ में किया जाता है अर्थात् वे महिलाएँ जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक या व्यवसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है काम (श्रम करने वाले स्वयं श्रम करना ही नही, वरन दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है। आज के भौतिकवादी परिवेश में हर महिला का श्रमजीवी होना एक अनिवार्यता बन गयी है।[1] घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पति और पत्नी दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है जिससे पत्नी की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं घर के बाहर काम करने के कारण पत्नी को घर और बहार दोनों ही क्षेत्रों की भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। जिससे कभी–कभी ऐसी स्थिति भी आती है कि दोनों भूमिकाओं में तनाव उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार हम देखते है कि श्रम (पेशे) का परिवार के निर्माण पर परिवार की संरचना पर, परिवार की भूमिका पर और परिवार के विघटन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि जो महिलाओं में नौकरी करने की लहर आयी है उसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर तथा पारिवारिक संबंधों पर पड़ता है अब उसे एक तरह गृहणी, पत्नी, मॉ और दूसरी तरह जीविकोपार्जन दोनों की भूमिका निभानी पड़ती है। इस तरह दोहरी भूमिका को निभाने में उसकी शक्ति और समय खर्च दोनों होता है और इसका परिणाम यह होता है कि पारिवारिक संबंधों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गृह कार्य के लिये समय का अभाव होता है। एक ही समय में घर की व्यवस्था करना और नौकरी पर जाने की तैयारी करना आसानी से सम्भव नहीं है। महिलाएँ अपने पति को स्वामी न मान कर एक मित्र की भॉति मानने की भावना इन महिलाओं में परिलक्षित होती है। इस कारण श्रमजीवी महिलाओं के दाम्पत्य जीवन के साथ ही परिवारों में तनाव की स्थिति प्रारंभ हो जाती है। पति श्रेष्ठ है तथा पत्नी उसके आधीन है, यह भावना आ जाती है जिसने इस भावना के आगें अपने को सम्पूर्ण समर्पण कर दिया वह परिवार में सभायोजित हो जाती है। यदि पति–पत्नी को एक दूसरे को समझना सुखमय दाम्पत्य जीवन का रहस्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

है। पति पत्नी में आपसी समझ बूझ के अभाव में व्यक्तिगत मान्यताओं को प्रथम स्थान देते हैं। अतः इससे एक दूसरे को सहयोग देने कीबात ही नही उठती है घर और बाहर भी जिम्मेदारियों को एक साथ ढ़ोना श्रमजीवी महिलाओं के लिये असम्भव है इस अवधि में वह पति से सहयोग की अपेक्षा रखती है यदि पति अपने पत्नी के अपेक्षा पर खुश उतरती है वो महिला अपने दोहरी जिम्मेदारियों को कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सकती है। यदि पति अपनी पत्नी का सहयोग नहीं करता है तो परिवार में तनाव सुनिश्चित है।[2]

मुख्य शब्द :– श्रमजीवी महिला, पारिवारिक संबंध, सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि, आत्मनिर्भरता।

प्रस्तावना :– परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं के द्वारा घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर कोई भी आर्थिक कार्य करना सामाजिक प्रतिष्ठा के विरूद्ध माना जाता था। वर्तमान में महिलाओं को आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। स्वतंत्रता एवं समानता के सांवैधानिक अधिकारों, बढ़ती हुई जनसंख्या, महिलाओं में बढ़ती जागरूकता एवं शिक्षा तथा सुविधाओं और विलासता के साधनों की मॉग ने महिलाओं की आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया है। आज पे घर की चार दिवारों से बाहर निकलकर लगभग सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। भारतीय समाज को विवाहित श्रमजीवी महिलाओं की दोहरी भूमिका होती है। एक ही साथ वे कार्यकर्ता के साथ–साथ गृहणी भी होती है। इन दोनों भूमिकाओं में संघर्ष की भूमिका बनी रहती है। यदि गृहणी की भूमिका वह बड़ी ही ईमानदारी से निभाये तो कार्योजन की भूमिका धूमिल पड़ेगी (बोगल 1960) श्रमजीवी महिला (कामकाजी) शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ में की जाती है। अर्थात् वे महिलाएँ जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है। काम करने का तत्पर्य स्वयं कार्य करना ही नही बल्कि दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी सम्मिलित है।

यदि श्रमजीवी महिलाएँ कार्योजन की भूमिका में अत्यधिक रूचि ले तो गृहणी की भूमिका की उपेक्षा होगी श्रमजीवी महिलाओं के जीवन में यह विरोधाभास की समस्या है यदि परिवार के सदस्य उसकी दोनों भूमिकाओं को समर्थन न प्रदान करें तो वह परिवार और कार्य से भलीभॉति समायोजित नहीं कर सकती। एक परम्परागत परिवार की सामाजिक संरचना में पति–पत्नि के आपसी संबंधों के विशिष्ट ढ़ाचे में यह स्वीकार किया गया है कि परिवार में पुरूष का प्रमुख होगा और नारी उसके अधीन होगी।

परिवार चाहे संयुक्त हो या एकांकी पत्नी को मुख्यतः विभिन्न भूमिकाओं के अनुरूप अपनी अपेक्षाओं और दायित्वों के पूर्ति करनी होती है। व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन में सुख, समृद्धि एवं विलासिता संबंधी भौतिक वस्तुओं की उपलब्धि और उपयोग उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करते हैं। इतना ही नही बल्कि व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति के निर्धारण में भी उसकी स्थिति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति एक ओर जहॉ उसके शारीरिक और बौद्धिक विकास को प्रभावित करती है। नहीं दूसरी ओर उसके जीवन शैली तथा व्यक्तित्व को भी निर्धारित करती है। भारतीय समाज में श्रमजीवी महिलाओं की संघर्षपूर्ण जीवन शैली का मूल्यांकन उनकी भूमिका दायित्वों में ही संभव है। परिवार में महिलाओं की भूमिका मॉ एवं पत्नी के रूप में महत्वपूर्ण होती है। परिवर्तनों के बावजूद महिलाओं को पारिवारिक भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए परम्परागत लैंगिक असमानता का भी सामना करना पड़ता है।[3] आज के भौतिकवादी परिवेश में महिलाओं का कामकाजी होना एक आवश्यकता सी बन गयी है। घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये पुरूषों और महिलाओं दोनों का ही कार्य करना आवश्यक हो गया है। जिससे महिलाओं की परम्परागत प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आये हैं। बाहर कार्य करने के कारण महिला को घर और बाहर दोनों ही क्षेत्रों की भूमिकाओं में कठिनाई उत्पन्न हो जाता है। ''भूमिका एक समूह में एक विशिष्ट पद से संबंधित सामाजिक प्रत्याशाओं एवं व्यवहार प्रतिमानों का एक ऐसा योग है। जिससे कर्तव्यों एवं सुविधाओं दोनों का समावेश होता है। घर के बाहर जिन शर्तो और परिस्थितियों में पुरूष कार्य करते हैं। उन्हीं में महिलाएॅ भी कार्य करती है। फिर भी वे घर में कार्य करने की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं होती कार्य का दोहरा बोध उनसे शारीरिक मानसिक और भावनात्मक तनाव उत्पन्न करना है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ श्रम विभाजन का स्वरूप बदल रहा है और आधुनिक चुनौतीपूर्ण तथा भौतिकबादी युग में महिलाओं की रूचि पारिवारिक कार्यो के अतिरिक्त उन सभी कार्यो में भी होने लगी जिन पर कभी पुरूषों का अधिकार होता था। आज महिलाओं की सहभागिता तीव्र गति से बढ़ते हुए पुरूष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चल रही है। कार्य का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जहॉ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति अंकित न कराई हो।[4] आधुनिक युग में व्यक्ति के सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन को गतिशील बनाने तथा उन्हें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विचारधाराओं से जोड़ने की सूचना एवं सम्प्रेषण साधनों का प्रकार्यात्मक महल है। ये साधन न केवल व्यक्ति को उसके अधिकारों के प्रति सचेष्ट कराते है बल्कि उसे नवीन तथ्यों, ज्ञान एवं प्रविधियों का बोध कराते हुए उसके वैचरिकी जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। इतना ही नहीं संचार एवं सूचना स्रोंतों के

नवीन साधना व्यक्ति की दूरदर्शिता, सामाजिक, राजनैतिक जीवन के प्रति जागरूकता तथा सहभागिता में की महत्वपूर्ण अदा करते हैं[5] अतः प्रस्तुत अध्ययन में यह पता लगाने का प्रयास किया है कि श्रमजीवी महिलाएँ परिवार और कार्य के बीच किस प्रकार के समायोजित है। (पाण्डेय कान्ती 1975) परिवार का प्रभाव बच्चों पर बहुत अधिक पड़ता है। सामान्य तौर पर मान्यता यह रही है कि एकांकी परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार में बच्चों का देख–रेख तथा पालन–पोषण अधिक अच्छी तरह हो जाता है। क्योंकि संयुक्त परिवार में बहुत से लोग होते हैं इस लिए बच्चों की देखभाल एवं पालन–पोषण अच्छी प्रकार से हो जाता है। दूसरी तरफ एकांकी परिवार में पति–पत्नी दोनों के नौकरी पर चले जाने से बच्चे अकेले रह जाते हैं। उनकी देखभाल नौकरों के सहारो होती रहती है जिससे की बच्चों का सर्वागीण विकास अच्छी तरह से नहीं हो पाता है।[6] प्रायः समाज द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि महिलाओं द्वारा नौकरी करने से उनके बच्चों का समुचित विकास नहीं हो पाता है। नाई और हांकमैन (1973) ने यूरोपीय माताओं के अध्ययन, श्रीवास्तव द्वारा किये गये अध्ययन (1972) में कुछ पत्रिकाओं द्वारा नौकरी करने वाली माताओं के सर्वेक्षण, ग्लासगों विश्वविद्यालय में किये गये स्कार्ट के अध्ययन (1965) में तथा भारत में किये गये प्रमिला कपूर के अध्ययन (1973), श्रीवास्तव द्वारा किये गये अध्ययन (1972) में कुछ पत्रिकाओं द्वारा नौकरी करने वाली माताओं के सर्वेक्षण (धर्मयुग : 1968) जिसमें यह पूँछा गया है कि उनके विचार में उनकी नौकरी का उनके बच्चों पर क्या असर पड़ता है इन सभी अध्ययनों में से सही निष्कर्ष निकलता है कि माताओं द्वारा नौकरी करने का बच्चों के जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है और न ही उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधा पहुँचती है और न ही उनके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर पड़ता है। अग्र वर्णित सारणी में हमने यही देखने का प्रयास किया है। कि परिवार के प्रकार का और साथ ही नौकरी का बच्चों के ऊपर कैसा प्रभाव पड़ता है।

मानव जिस समाज में रहता है। उससे संगठन और व्यवस्था का होना अत्यंत आवश्यक है पारिवारिक, सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति के निश्चित स्थान को उसकी प्रस्थिति या पद कहते हैं। इस स्थिति से संबंधित कुछ निश्चित क्रियाएँ होती है पारिवारिक संगठन को बनाये रखने के लिये अथवा पारिवारिक संरचना को एक स्थिर रूप देने के लिये यह आवश्यक होता है। कि परिवार में प्रत्येक व्यक्ति का स्थान दूसरे सदस्यों के संघर्ष में निश्चित कर दिया जाये। यही स्थान परिवार में व्यक्ति की प्रस्थिति कहलाती है। एक समय में एक परिवार में एक ही व्यक्ति की अनेक स्थितियॉ हो सकती है।

* पुरूष प्रधान समाज में समायोजन के प्रति महिलाओं की चेतनात्मक अभिवृत्ति को समझना।
* श्रम जीवी महिलाओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना।

* श्रमजीवी महिलाओं की शैक्षिक स्तर का पता चलेगा।
* श्रमजीवी महिलाओं के कार्य की विभिन्न दशाओं की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के पतियों का सामाजिक आर्थिक स्तर की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं का कार्योजन में आने के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के पतियों का सामाजिक आर्थिक स्तर की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं का कार्योजन में आने के कारणों की ज्ञानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं का परिवार में भूमिका संघर्ष का सम्यक अनुशीलन।
* श्रमजीवी महिलाओं के अपने कार्य/कार्यस्थल में भूमिका संघर्ष की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रम जीवी महिलाओं का घरेलू कार्यो को करने की अभिरूचि की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रम जीवी महिलाओं की दोहरी भूमिका के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण करना फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण करना।
* श्रम जीवी महिलाआं के विभिन्न परिस्थितियों की समस्याओं का विश्लेषण करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के कार्योजन स्थल पर अधिकारियों द्वारा कार्य सम्पादन के प्रति प्रतिक्रिया की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के रागात्मक जीवन पर कार्योजन के प्रभाव की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रीमती महिलाओं का स्तर और पारिवारिक समायोजन की जानकारी प्राप्त करना।

अध्ययन का क्षेत्र

चूँकि शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र रीवा जिला को लिया गया है। रीवा जिलाका क्षेत्रफल 6314 वर्ग किमी. है। जनगणना 2011 के अनुसार रीवा जिले की जनसंख्या 23,65,106 है, जिसमें पुरूष 12,25,100एवं महिला 11,40,006शेष एवं अन्य वृद्ध एवं बच्चे सम्मिलित है। रीवा जिले का जनसंख्या वृद्धि 19.86%है, जिले का लिंग अनुपात 1000 पुरूष पर 931 महिला है तथा साक्षरता दर 71.62%है जिसमें पुरूष साक्षरता 81.43%एवं महिला साक्षरता 61.16%है। रीवा जिले जनसंख्या घनत्व 375 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है।

पूर्व साहित्य के अध्ययन की समीक्षा :–

70 वर्षो में भारत में जो महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन हुए है, उनसे यहॉ की पूरी आबादी प्रभावित हुई है। शहरों में हरने वाले मध्यम वर्गीय शिक्षित लोगों को आर्थिक प्रभावित किया है। सरकार स्वतंत्रता के बाद की बढ़ती हुई सामाजिक आर्थिक परिस्थितियॉ महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में काफी वृद्धि हुई और इन नई हालातों के फलस्वरूप इनके लिये अपनी समानता की अभिव्यक्ति और उनकी प्रतिष्ठा के लिये रास्ते खुल गये हैं। इस बात की पूरी सम्भावन है कि उन्हें जो नई राजनीतिक कानूनी सुविधाऍ दी गयी हैं। अधिकांश आर्थिक प्रजातियों में स्त्रियों से काम लिया जा रहा है बल्कि शायद उनसे काम लेन की जरूरत महसूस की जा रही है। और लगभग सभी प्रणालियों में वे अपना जीवन–यापन के लिये और मनुष्य के नाते संतोष के लिये काम करती रही है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही स्त्रियों की भूमिका ज्यादा वास्तविक और सुस्पष्ट हो गयी है। उनके काम का महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखते हैं।

मूर्ति ने अपने अध्ययन में भारतीय श्रमजीवी महिलाओं की समस्याओं का विवेचन करते हुए लिखा है हमारी महिलाओं के वैतनिक और लाभ पूर्ण काम–धन्धों में बढ़ते प्रवेश से श्रम विभाजन की वह प्रचलित धारणा छिन्न–भिन्न हो गयी हे। जिसके अनुसार पुरूष खेत के लिये और महिलाऍ घर के लिये मानी जाती थी। इतने पारिवारिक ढ़ाचे और कर्त्तव्यों में हलचल पैदा कर दी है। इसने महिलाओं से यह चाहा है कि वे ऐसा शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सामंजस्य स्थापित करे जो शायद ही उनके सम्मान, व्यक्तिगत तथा नीति के अनुकूल है।

चन्द्रकला हाटे ने बहुत सारे अध्ययन श्रम जीवी महिलाओं पर किया है। इन्होंने अपने प्रथम अध्ययन में बम्बई से शिक्षित श्रमजीवी महिलाओं के सामाजिक आर्थिक अवस्था का अध्ययन है तथा दूसरा अध्ययन इन्होंने हिन्दु महिलाओं के कार्योजन में आने से व्यक्तित्व और आर्थिक स्तर पर परिवर्तन आया है तथा विभिन्न समस्याओं के प्रति भारतीय नारी के बदले तरीके को भी प्रभावित किया है। इन्होंने बताया है कि भारतीय महिला के स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक अवस्था में परिवर्तन हुआ है। इन्होंने बाम्बे, पूना, नागपुर और सोलापुर में रहने वाली भारतीय महिला तथा उन्नति करती हुई देश की महिला भारतीय महिला तथा उन्नति करती हुई देश की महिला परिवार को सहारा देने के लिये कार्य करती है। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो की भूमिका करती है। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो कि भूमिका करती हे। महिलाओं की दो अवस्था घर और बाहर में काम की जो भूमिका हे। उसको वह पूरी तरह स्वीकार नहीं करती है। बहुत सी औरते दुविधा

और द्वन्द में रहती है और एक अपराध में ग्रसित हो जाती है। भारतीय महिला इन उलझे हुए स्वरूप को एक निश्चित धारा देने के लिये बहुत से सुझाव दिये हैं।

पद्यमी सेन गुप्ता ने नये क्षेत्र के बार में जो मूल्यवान अध्ययन किया है इनका क्षेत्र बहुत बड़ा है, इन्होंने काम करती हुई महिलाएँ फैक्टरी लदानों में खेतों में और अन्य क्षेत्रों में व्यवसाय एजेन्सी तथा बहुत सारे दूसरे संस्थाओं और गवर्नमेन्ट के सर्वे पर आधारित है। तथा इसकी और इन्होंने ऐतिहासिक अध्ययन में पाया है कि विभिन्न आधुनिक मान्यताओं की वजह से नवयुतियों का परम्परागत स्त्री क्षेत्र में बंधे रहना अब ठीक नहीं लगती है। वे अपने व्यक्तित्व विकास तथा आत्म संतुष्टि के लिये वह घर से बाहर निकलकर काम करना चाहती है। यह भी स्वीकार किया गया है। स्त्रियों के योगदान का उपयोग करने के लिये शहरों में उनके लिये नौकरियों की व्यवस्था की जानी चाहिये तथा उन्हें तकनीकी तथा अन्य व्यवसाओं की उच्च से उच्च शिक्षा मिलनी चाहिये।

सेना गुप्ता ने अपने अध्ययन के दौरान यह बताया है कि उच्च प्रशासकीय पदों पर वे केवल कुशल और निष्पक्ष ही प्रभावित हुई बल्कि उनकी ईमानदारी तथा चारित्रिक निष्ठा का भी लोहा माना गया है। इन्होंने यह भी बताया है कि विभिन्न संस्थाओं तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों में कर्मिक कल्याण तथा जन सम्पर्क अधिकारियों के रूप में स्त्रियों बड़ी संख्या में प्रवेश कर रही है। वे उच्च पदों पर सफलतापूर्वक कम कर रही है। वे आगे बताती है कि हर्ष का विषय है कि जिन सेवाओं में अधिक से अधिक स्त्रियॉ काम कर रही है। तथा डनहें अधिक वेतन मिलता है। दिल्ली बम्बई तथा मद्रास आदि महानगरों में महिला वकीलों की संख्या विशेष रूप से बदली जा रही है।[7]

नस्ल उमा नन्दा ने अपने सर्वेक्षण से बताया है कि मध्यवर्गीय स्त्रियॉ अपनी नौकरी के प्रति उभय भावी होती है। वह नौकरी इसलिये करना चाहती है कि इससे उन्हें आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलती है। तथा वह परिवार की आमदीन में अपनी योगदान कर पाती है। फिर भी नौकरी से संबंधित कठिनाईयों तथा पति एवं बच्चों की सुख–सुविधा को ध्यान होने से वह नौकरी करना पसन्द भी नहीं करती, क्योंकि इसके कारण उनको मानसिक संघर्ष से गुजरना पड़ता है। शिशुओं की देखभाल करने वाली कल्याण संस्थाओं के अभाव की वजह से भी स्त्रियॉ अपने व्यवसायिक जीवन में प्रगति नहीं कर पाती तथा उन्हें प्रायः निराशा ही हॉथ लगती है।

प्रमिला कपूर ने अपने अध्ययन में बताया है कि आर्थिक लाभ की ही वजह से स्त्रियॉ नौकरी नहीं करती है बल्कि पीछे अन्य दूसरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण भी है – जैसे अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना अपने लिये उच्च दर्जा प्राप्त करना, आर्थिक रूप से स्वावालम्बी होना। लोगों से

मिलने–जुलने की स्वतंत्रता प्राप्त करना घर की चहार दिवारी से उबने वाली वातावरण से राहत, पाना समाज के लाभार्थ काम करना अपने विशेष व्यवसाय के प्रति मोह अपना मन चाहा पेशा अरिब्तार करने की मन भावना की पूर्ति आदि इन शोध का कार्य उद्देश्य इस बात की जानकारी प्राप्त करना है। कि नौकरी की वजह से शिक्षित स्त्रियों के दैनिक में जो परिवर्तन हुए है। उसके बावजूद भी वे अपने वैवाहिक और पारिवारिक जीवन में किस हद तक सामजस्य और खुशहाली बनाये रखने में सफल रही है।[8] दाम्पत्य जीवन के समांजस्य को प्रभावित करने वाले तथ्यों उनकी प्रसंगति तथा महत्व का पता लगाना तथा जिस तरह वे प्रभाव डालते है। उसका विश्लेष्ज्ञण करना शोध कार्य का दूसरा उद्देश्य था। इसलिये इन्होंने विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक दर्जे तथा आर्थिक स्तरों वाली और शिक्षण कार्य में कार्यालयों में तथा डाक्टरी पेशों में लगी तीन सौ शिक्षित स्त्रियों का गहन अध्ययन किया।

उद्देश्य :–

* श्रम जीवी महिलाओं की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के कार्य की विभिन्न दशाओं की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रमजीवी महिलाओं का कार्योजन में आने के कारणों की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रम जीवी महिलाओं का घरेलू कार्यो को करने की अभिरूचि की जानकारी प्राप्त करना।
* श्रम जीवी महिलाओं की दोहरी भूमिका के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण करना फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण करना।
* श्रम जीवी महिलाआं के विभिन्न परिस्थितियों की समस्याओं का विश्लेषण करना।
* श्रमजीवी महिलाओं के कार्योजन स्थल पर अधिकारियों द्वारा कार्य सम्पादन के प्रति प्रतिक्रिया की जानकारी प्राप्त करना।

परिकल्पना :–

1. श्रमजीवी महिलायें सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की व्यक्तिगत संतुष्टि चाहती है। जिससे पारिवारिक संबंधों के स्थायीतत्व में कठिनाईया बढ़ रही है।
2. श्रमजीवी महिलाओं के भूमिका निर्वाह में असामानता की स्थिति का उदय हो रहा है इसलिए इनके दृष्टिकोण में परिवर्तन स्वभाविक है।
3. श्रमजीवी महिलाओं के दृष्टिकोण में परिवर्तन पुरूषों की तुलना में अधिक हो रहा है।

'kks/k izfof/k :-

शोध एक व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है, और मानव जीवन को सुगम तथा भावी बनाया जाता है। प्रस्तावित शोध अध्ययन के व्यवस्थित पूर्ण करने हेतु समकालिक, मौलिक स्त्रोतो, स्थल सर्वेक्षणों और सहायक ग्रन्थों का सूक्ष्म अध्ययन करते हुए शोध को दोनों (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) ही पद्धतियों का सहयोग लिया जायेगा। इसके साथ ही व्यक्तिगत निरीक्षण प्रश्नावली साक्षात्कार एवं अनुसूचियों का भी प्रयोग किया जायेगा।

leadks dk ladyu ,oa iz;qDr fof/k;kW

समंक किसी भी अध्ययन के निकाले गये निष्कर्षो के लिये आधार प्रदान करता है। समंको के मुख्यतः दो स्त्रोत है। पहला प्राथमिक स्त्रोत और दूसरा द्वितीयक स्त्रोत है। प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत मुख्यतः निरीक्षण या अवलोकन, साक्षात्कार, अनुसूची व प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएँ एकत्र की गयी है। अपने शोध प्रवंध में प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्य सामग्री का प्रयोग किया है, जो कि पत्र–पत्रिकाओं, वार्षिक प्रतिवेदन अखवारों, शेाध रिपोर्ट आदि से एकत्र किया जाएगा।तथ्य संकलन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति का चयन कर समस्त में से 100 उत्तरदातों/इकाइयों का चयन किया गया है। तथा उनसे प्राप्त उत्तरों को सांख्यिकी द्वारा विश्लेशण किया गया है। महिलाओं का राजनीति में प्रवेश के कारण कई क्षेत्र प्रभावित हुए है प्रभावित क्षेत्रों का विवरण निम्नानुसार है–

श्रमजीवी महिलाओं के कार्योजन से संबंध में पदोन्नति के लिए सेवा काल में प्राप्त सहयोगियों एवं उच्चधिकारियों की कार्य के प्रति सकारात्मक प्रक्रिया से संतुष्टि आदि ऐसे कारक जो श्रमजीवी महिलाओं के लिए पदोन्नति के अवसर प्रदान करते है। इन श्रमजीवी महिलाओं की कार्यस्थल पर प्रस्थिति के संदर्भ में इनसे प्रश्न पूछा गया। उन्होंने जो इस संदर्भ में उत्तर दिया वो निम्न तालिका के अनुसार प्रस्तुत है।

सारणी संख्या 1

श्रमजीवी महिलाओं की कार्यस्थल पर प्रस्थिति के प्रति दृष्टिकोण

कार्यस्थल पर प्रस्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
निम्न प्रस्थिति	23	23
मध्यम प्रस्थिति	50	50
उच्च प्रस्थिति	27	27
योग	**100**	**100**

प्रस्तुत सारणी से ज्ञात होता है कि श्रमजीवी महिलाओं में सें 23 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं ने अपनी प्रस्थिति को निम्न 50.00प्रतिशत मध्यम प्रस्थिति तथा 27 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं में अपनी प्रस्थिति को उच्च बताया है। इस विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बहुसंख्यक श्रमजीवी महिलाओं की कार्यस्थल पर प्रस्थिति मध्यम स्तर की है।

सहयोगियों का व्यवहार :– श्रमजीवी महिलाओं के कार्योजन के संबंध में उनके सहयोगियों का व्यवहार सकारात्मक प्रक्रिया है।

सारणी संख्या 2

कार्यस्थल पर सहयोगियों का व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण

सहयागियों का व्यवहार	आवृत्ति	प्रतिशत
मित्रवत व्यवहार	66	66
उपेक्षात्मक व्यवहार(उपेक्षात्मक)	14	14
असहयोगात्मक व्यवहार	20	20
योग	**100**	**100.00**

प्रस्तुत सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 66 प्रतिशत श्रमजीवी महिलायें अपने सहयोगियों के व्यवहार को मित्रवत, 14 प्रतिशत श्रमजीवी महिलायें उपेक्षात्मक व्यवहार तथा 20.00 प्रतिशत श्रमजीवी महिलायें असहयोगात्मक व्यवहार बताती है इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि सहयोगियों का व्यवहार श्रमजीवी महिलाओं के प्रति मित्रवत है।

सारणी संख्या 3

अधिकारियों की प्रतिक्रिया द्वारा कार्य–संपादन के प्रति प्रतिक्रिया

अधिकारियों द्वारा संपादन के प्रति प्रतिक्रिया	आवृत्ति	प्रतिशत
प्रशंसा किया जाता है	70	70.00
अपमानित किया जाता है	5	5.00
कोई प्रतिक्रिया नही	25	25.00
योग	**100**	**100.00**

प्रस्तुत सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि कार्योजन स्थल पर अधिकारियों द्वारा कार्य संपादन के प्रति विचार संबंधी तथ्यों का विश्लेषण किया गया है और यह प्रदर्शित कार्य होता है। कि 70 प्रतिशत ने श्रमजीवी महिलाओं कि कार्य निष्पादन पर अधिकारी महिलाओं की प्रशंसा करते है। जब कि 5 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं को कार्य करने से अधिकारी संतुष्ट नही है जिससे महिलाओं को अपमानित करते है तथा 25 प्रतिशत श्रमजीवी महिलायें इस संदर्भ में किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया।इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि बहुसंख्यक श्रमजीवी महिलाओं को उनके अधिकारी कार्य करने के बाद श्रमजीवी महिलाओं की प्रशंसा करते है। जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। साथ ही साथ कार्य प्रतिबद्धता में वृद्धि होती है।

कार्यस्थल पर अधिक समय तक रूकना :– श्रमजीव महिलाये जिस कार्यस्थल पर कार्य करती है तो कभी–कभी निर्धारित समय से अधिक समय तक कार्य करना पड़ता है इससे संबंधित कुछ श्रमजीवी महिलाओं से जानकारी प्राप्त की गयी जिसके विवरण निम्न है।

सारणी संख्या 4

अधिक देर तक रोका जाता है	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	13	13
तटस्थ	24	24.00
नहीं	63	63
योग	**100**	**100.00**

प्रस्तुत सारणी के अंर्तगत श्रमजीवी महिलाओं को देर तक रूकने संबंधी जानकारी का विश्लेषण किया गया है और यह प्राप्त हुआ कि संपूर्ण श्रमजीवी महिलाओं में 63 प्रतिशत महिलाओं ने इस बात की पुष्टि की है। 13 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं ने ये कहा है कि उन्हें कार्य पूर्ण करने हेतु उनके अधिकारी समयावधि के बाद भी रोकते है तथा 24 प्रतिशत श्रमजीवी महिलायें तटस्थ रही जब कि उनके अधिकारी उन्हें कार्यस्थल पर अधिक देर तक नही रोंकते है और श्रमजीवी महिलाओं को कार्य की समयावधि पूरा होने पर उन्हें घर जाने की अनुमति मिलती है।

श्रमजीवी महिलाओं के पदोन्नति के अवसर :–श्रमजीवी महिलायें जिस कार्योजन के क्षेत्र में कार्य करती है और इनके कार्य अच्छे, नियमित और समयावधि में पूर्ण होने से अधिकारी वर्ग प्रसन्न रहते है तो उनके

पदोन्नति हेतु संतुष्टि प्रदान करते है। इस कार्य कुछ श्रमजीवी महिलाओं से जानकारी प्राप्त किया गया जिनका विवरण निम्न सारणी में प्रस्तुत है।

सारणी संख्या 5

श्रमजीवी महिलाओं के पदोन्नति के अवसर

पदोन्नति के अवसर	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	76	76
नहीं	24	24
योग	**100**	**100**

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि 76 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं के पदोन्नति के अवसर है तथा 24 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं के पदोन्नति के अवसर नही है। इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि अधिकांश प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं को पदोन्नति का अवसर प्राप्त है और भविष्य में उन्हें कार्यरत पदों से उच्च पदों पर स्थान प्राप्त हो सकता है।

श्रमजीवी महिलाओं के वेतन क्रम के संदर्भ में :– श्रमजीवी महिलायें जिस पद पर कार्य कर रही है। उस कार्य पद के वेतन क्रम से संतुष्ट है कि नहीं इसी की पुष्टि हेतु कुछ श्रमजीवी महिलाओं के विवरण प्राप्त किया गया है जो एक सारणी के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है –

सारणी संख्या 6

श्रमजीवी महिलाओं के वेतन क्रम में संतुष्टि संबंधी विचार :–

वेतन क्रम से संतुष्टि	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	70	70
नहीं	30	30
योग	**100**	**100**

सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 70 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाये अपने कार्योजन के प्राप्त वेतन से संतुष्ट है तथा 30 प्रतिशत श्रमजीवी महिलाओं का यह कहना है कि जिस कार्योजन में है वे कठिन परिश्रम करती है। उसके सापेक्ष वेतन इतना नहीं प्राप्त होता है कि वे अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति कर सके।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि अधिकतम प्रतिशत उन श्रमजीवी महिलाओं का है जो कि अपने वेतन से संतुष्ट है उनका कहना है कि जितना वेतन प्राप्त होता है उतने से ही अपने आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेती है।

सुझाव :–

भारत के संदर्भ में यदि देखें तो महिलाओं की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं :–

- ❖ सर्वप्रथम महिलाओं के राजनीतिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयास करने होगे। महिला संगठनों, स्वयं सेवी संस्थाओं को इस दिशा में प्रयास करने होगे।
- ❖ महिलाओं को इनके कानूनी अधिकारी की जानकारी, महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिये गये निर्देशों का सख्ती से पालन, शोषण, उत्पीड़न सम्बन्धी मामलों का जल्दी निराकरण, महिला मामलों में पुलिस की पूरी सजगता एवं सक्रियता महिलाओं के लिए पृथक महिला थानों की स्थापना आदि महिलाओं का शोषण रोकने के लिए आवश्यक है।
- ❖ वर्तमान समय में लागू महिला सम्बन्धी कानूनों में व्याप्त विसंगतियों को दूर करना जिससे महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में पुरूषों के समान कानूनी और व्यावहारिक रूप में सभी मानवाधिकार हासिल हों।
- ❖ महिलाओं को अपनी मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन लाना होगा जिससे उनमें आत्म विश्वास में वृद्धि होगी।

उपसंहार

महिला समाज की धुरी है अगर धुरी टूट गई तो समाज भी टूट जायेगा।[9] इतिहास गवाह है कि जिन समाजों ने महिलाओ को गुलाम बनाया वे खुद गुलाम बन गये, जिन समाजों ने महिलाओं को प्रगति का मौका दिया उन्हें सभ्यता के शिखर पर पहुंचने से कोई नही रोक सका। यद्यपि महिलाएँ तेजी से राजनीति के क्षेत्र में आ रही है, तथापि उन्हें राजनीति में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अशिक्षा, भ्रष्टाचार, शोषण, आर्थिक पराधीनता, राजनीतिक सोच का आभाव आदि ऐसी प्रमुख बाधाएं है जो राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने में रूकावट लाती है। महिलाओं को समाज एवं राजनीति में आगे लाने के लिये उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाना होगा। अध्ययन क्षेत्र की महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा और अंधविश्वास को दूर कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का दायित्व है।[10] भ्रष्टाचार और शोषण से महिलाओं को मुक्त करके उन्हें राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जा सकता है। महिलाओं का शिक्षित

और संस्कारित होना आवश्यक है अतः भारतीय परिवार में नारी का सर्वप्रथम दायित्व पत्नीत्व और मातृत्व के साथ राजनैतिक कार्यकलाप का समन्वय होना अतिआवश्यक है। एक सफल माँ और पत्नी की समाज और देश को सफल नेतृत्व दे सकती है।

21वीं शताब्दी की महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा बहुत प्रबल हो गयी है वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहती है।[11] इससे उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ती जायेगी एवं समाज में फली बुराई रूपी अन्धकार को दूर कर सकेगी। नारियों के लिये आत्म अभिव्यक्ति और आत्म सन्तुष्ट के अवसर अनुचित रूप से सीमित रखे गये हैं। मशीनीयुग ने घर से बाहर ही वस्तु उत्पादन इतना अधिक बढ़ा दिया है। कि अंशतः आर्थिक आवश्यकता के चलते महिलायें अब घर से बाहर काम अपनाने लगी हैं।[12]

निष्कर्षतः महिलाएं समाज का अनिवार्य अंग है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्र के साथ–साथ राजनीति के क्षेत्र में उनकी अहम भूमिका है। जैसे–जैसे शहरों के साथ ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में राजनीति जागरूकता आ रही है। शिक्षा के प्रचार–प्रसार और बदलते सामाजिक परिवेश में राजनीति में महिलाएँ आगे आ रही है और केन्द्रीय, प्रान्तीय, स्थानीय शासन में अपनी भागीदारी निभा रही है। इसलिये महिलाओ को सशक्त और सुदृढ़ बनाने पर ही समाज सुदृढ़ होगा। महिलाओं को सुदृढ़ करने के लिये उनका शिक्षित होना आवश्यक है ताकि अपने अधिकारों को समझ कर समाज एवं राष्ट्र का विकास कर सके।[13]

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. डॉ. सुभाषचन्द्र गुप्ता, कार्यशील महिलायें एवं भारतीय समाज, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली पृष्ठ क्र. 198–199.
2. डॉ. रानी, आशु (1999) महिला विकास कार्यक्रम, ईनाश्री पब्लिशर्स, जयपुर, पृष्ठ सं. 19
3. डॉ. एम.एन. शर्मा विकास एवं परिवर्तन का समाजशास्त्र पृ.क्र. 102 राजीव प्रकाशन लालकुर्ती मेरठ कैन्ट
4. डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव, 21वीं सदी का महिला सशक्तिकरण : मिथक एवं यथार्थ, ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. मानचन्द्र खंडेला, महिला सशक्तिकरण सिद्धांत एवं व्यवहार, अविष्कार पब्लिशर्स जयपुर पृष्ठ क्र. 100, 101, 102, 10.3।
6. ओम प्रकाश, हिंदू विवाह, चतुर्थ संस्करण, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 182–2001

7. आर.सी. मजुमदार, द हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ द इण्डियन पीपुल, प्रकाशित Vol X 2nd edition 1981. P-31
8. के.डी. ग्रोगेड, सेक्स डिस्क्रिमिनेशन इन इण्डिया ए क्रिटिक (प्रोस्टीट्यूशन इन इण्डिया), 1995, पृ. सं. 185
9. शर्मा, डॉ. एम.के. (2010), 'भारतीय समाज में नारी', पब्लिशिंग हाउस दिल्ली।
10. आहुजा राम (2000), 'सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली।
11. द्विवेदी, राकेश (2005) 'महिला सशक्तिकरण : चुनौतियां एवं रणनीतियां' पूर्वाशा प्रकाशन, भोपाल, पेज नं. 29
12. आहुजा, राम (2001), 'सामाजिक व्यवस्था', रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पेज नं. 122।
13. द्विवेदी, पूनम (2002), 'नारीः अन्तदर्पण व समाज', अर्जुन पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली , पेज नं. 356।

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

Tachinid Fly, *Sturmia* Species : A Major Larval Parasitoid of Teak Defoliator, *Hyblaea Puera*

N. Roychoudhury, Rajesh Kumar Mishra

Tropical Forest Research Institute, (Indian Council of Forestry Research & Education, Ministry of Environment, Forests and Climate Change, Govt. of India) Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Article Info

Publication Issue :

March-April-2023

Volume 6, Issue 2

Page Number : 24-27

Article History

Received : 01 March 2023

Published : 15 March 2023

ABSTRACT

Sturmia species (Diptera : Tachinidae) are insect parasitoids and many species attack larval lepidopterans. The present article deals with *Sturmia* species as a major larval parasitoid of *Hyblaea puera* Cramer (Lepidoptera : Hyblaeidae), a key insect defoliator pest of teak (*Tectona grandis* L.f.) in nurseries, plantations and natural forests.

Keywords : Tachinid fly, *Sturmia* species, Larval parasitoid, Teak defoliator, *Hyblaea puera*

INTRODUCTION

Teak (*Tectona grandis* L.f.) (Family Verbenaceae) is a potential tree species of promising importance (Tewari, 1992). Teak defoliator, *Hyblaea puera* Cramer (Lepidoptera : Hyblaeidae) is considered as a major insect defoliator pest of teak in nurseries, plantations and natural forests (Beeson, 1941; Mathur, 1960; Shukla et al., 2001, Nair, 2007). Obviously, control of this insect pest may lead to substantial economic gain in tree improvement programme due to high value of teak timber. To combat this insect pest of teak, biological control by utilizing their natural enemies provides a highly practical approach. Use of natural enemies of insect origin, such as parasitoids may significantly reduce the population density of target pest and concomitant damage impact on host plant.

Parasites of teak defoliator, *H. puera*

Stebbing (1908) recorded for the first time three species of parasites infesting *H. puera* larvae from Nilambur, Kerala. Based on studies conducted in different parts of the country, Beeson and Chatterjee (1935) reported 15 species of parasites infesting *H. puera*. Beeson and Chatterjee (1939) published a brief account of the parasites of *H. puera* recoded from Nilambur teak forests of Kerala. Then, Chatterjee and Misra (1974) listed out 45 of parasites infesting *H. puera* as well as their alternate hosts. Sudheendrakumar

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

(1986) published an updated list of parasites of *H. puera* reported from India consists of 48 species of insects.

Tachinids (Diptera: Tachinidae)

Koinobiont parasitoids are carnivorous insects, the larvae of which develop in living hosts (Eggleton and Belshaw, 1992). Tachinids (Diptera: Tachinidae) are one of the largest groups of dipteran insects with 8,500 species (O'Hara, 2013). They are all parasitoids, and many species attack larval lepidopterans, behaving as koinobionts (Stireman et al., 2006; Dindo, 2011). Their oviposition strategies are classified into two types (Stireman and Singer, 2003; Dindo and Nakamura, 2018). The first one involves laying eggs on (or sometimes in) the host directly, after which the hatched larvae burrow into the bodies of hosts. The other involves laying eggs away from the host, after which the eggs are ingested by the host, the hatched larvae passively wait for the host to come close or the hatched larvae actively seek the host. Larvae that intrude the hosts feed on the non-vital organs, and subsequently on the vital organs of the hosts. When the parasitoid completes the larval development, the host is already dead. Finally, they exit the host cuticle and begin pupariation. As tachinid flies attack many pest insects, they can be employed as biological agents for controlling pest insects (Grenier, 1988; Vargas et al., 2015; Shendage and Sathe, 2016). Therefore, studies on the parasitization strategy of tachinid flies can provide useful information for their utilization as biocontrol agents.

Sturmia* species (Diptera : Tachinidae) as larval parasitoid of *H. puera

Sturmia species usually infest larval stages and occasionally the prepupal and pupal stages of *H. puera* (Fig. 1). In most cases, a single parasite and rarely two to three develop in a host. This parasite has been noticed from all the localities of slightly moist, dry and very dries teak forests of Madhya Pradesh, causing maximum of 11% parasitism (Roychoudhury, 2010, 2016). Beeson (1941) has reported three species of *Sturmia*, such as *S. inconspicuella* Baranov, *S. inconspicuoides* Baranov and *Sturmia zebina* Walker (Diptera : Tachinidae) as larval parasitoids of *H. puera.*

Fig.1. *Sturmia* species and parasitized larvae of teak defoliator, *Hyblaea puera*

References

[1]. Beeson, C.F.C. (1941). The Ecology and Control of Forest Insects of India and Neighbouring Countries. Repint 1993. Bishen Singh Mahendra Pal Singh, Dehradun, 1007 pp.

[2]. Beeson, C.F.C. and Chatterjee, S.N. (1935). On the biology of Tachinidae (Diptera). Indain Forest Record (NS) Ent. 1(9): 169-184.

[3]. Beeson, C.F.C. and Chatterjee, S.N. (1939). Further notes on the biology of teak defoliators in India. Indain Forest Record (NS) Ent. 5(5): 357-379.

[4]. Chatterjee, P.N. and Misra, M.P. (1974). Natural enemy and plant host complex of forest insect pest of Indian origin. Indian Forest Bulletin 265: 233 pp.

[5]. Dindo M.L. (2011). Tachinid parasitoids: are they to be considered as koinobionts? BioControl 56(3): 249- 280 255.

[6]. Dindo, M.L. and Nakamura, S. (2018). Oviposition strategies of tachinid parasitoids: two Exorista species as case studies. International Journal of Insect Science 10(1): 1-6.

[7]. Eggleton, P. and Belshaw, R. (1992). Insect parasitoids: an evolutionary overview. Philosophical Transactions of Royal Society London B 337: 1-20.

[8]. Grenier, S. (1988). Applied biological control with tachinid flies (Diptera: Tachinidae): a review.. Anz. Schadl. Pflan. Umwelt. 61: 49-56.

[9]. Mathur, R.N. (1960). Pests of teak and their control. Indian Forest Record 10(3): 43-65.

[10]. Nair, K.S.S. (2007). Tropical Forest Insect Pests : Ecology, Impact and Management. Cambridge University Press, 404 pp.

[11]. O'Hara, J.E. (2013). History of tachinid classification (Diptera, Tachinidae). ZooKeys 316: 1-34.

[12]. Roychoudhury, N. (2010). Studies on the natural enemies of teak pests, Hyblaea puera and Eutectona machaeralis and their role in suppressing the population of insects in Madhya Pradesh.

Project Completion Report submitted to Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCST), Bhopal, 32 pp.

[13]. Roychoudhury, N. (2016). Search for natural enemies of defoliator, Hyblaea puera Cramer and leaf skeltonizer, Eutectona machaearlis (Walker), in teak forests of Madhya Pradesh. Journal of Tropical Forestry 32(4) : 51-83.

[14]. Shendage, N. and Sathe, T.V. (2016). Tachinids as good biocontrol agents of agricultural pests. Biolife 4(1): 79-83.

[15]. Shukla, P.K., Jamaluddin and Roychoudhury, N. (2001). Diseases and Insect Pests of Teak. ICFRE Brochure No. 68, Tropical Forest Research Institute, Jabalpur, 86 pp.

[16]. Stebbing, E.P. (1908a). The teak defoliator (Hyblaea puera). Indian Forester Leaflet (Zool. Ser.) 2 : 5 pp.

[17]. Stireman, J.O. III and Singer, M.S. (2003). What determines host range in parasitoids? an analysis of a tachinid parasitoid community. Oecologia 135(4): 629-638.

[18]. Stireman, J.O. III, O'Hara, J.E. and Wood, D.M. (2006). Tachinidae: evolution, behavior, and ecology. Annual Review of Entomology 51: 525-555.

[19]. Sudheendrakumar, V.V. (1986). Studies on the natural enemies of the teak pests, Hyblaea puera and Pyrausta machaeralis. KFRI Research Report No. 38, Kerala Forest Research Institute, Peechi, Kerala, 28 pp.

[20]. Tewari, D.N. (1992). A Monoghaph on Teak (Tectona grandis Linn.f.). International Book Distributors, Dehradun, India, 479 pp.

[21]. Vargas, G., Góme, L.A. and Michaud, J.P. (2015). Sugarcane stem borers of the Colombian Cauca river valley: current pest status, biology, and control. Florida Entomologist 98(2): 728-735.

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

Occurrence of Larval Parasitoid, *Apanteles Rudius* on Teak Defoliator, *Hyblaea Puera*

N. Roychoudhury, Rajesh Kumar Mishra
Tropical Forest Research Institute, (Indian Council of Forestry Research & Education, Ministry of Environment, Forests and Climate Change, Govt. of India) Jabalpur, Madhya Pradesh, India

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2
Page Number : 27-30

Article History
Received : 01 March 2023
Published : 15 March 2023

ABSTRACT

The present article deals with *Apanteles rudius* Wilkinson (Hymenoptera : Braconidae) emerged from laboratory reared larvae of teak defoliator, *Hyblaea puera* Cramer (Lepidoptera : Hyblaeidae) collected from teak (*Tectona grandis* L.f.) forests of Odisha. The diagnostic features of this parasitoid are mentioned.

Keywords : *Apanteles rudius*, larval parasitoid, teak defoliator, *Hyblaea puer*

INTRODUCTION

Teak (*Tectona grandis* L.f.) (family Verbenaceae), is consider as a paragon among the high quality tropical timbers (Tewari, 1992; Bhat et al., 2005). The species is subject to serious depredation by insect pest, *Hyblaea puera* Cramer (Lepidoptera : Hyblaeidae). *H. puera* is commonly known as teak defoliator and well known devastating insect pest of teak in nurseries, plantations and natural forests. Larvae of *H. puera* suffer from the attack of larval parasitoid, *Apanteles* species in nature (Roychoudhury, 2010, 2013, 2016; Roychoudhury et al., 2022).

Regarding *Apanteles* species, Beeson (1941) recorded 25 species of *Apanteles* from India as parasitising various insect pests. *A. puera* and *A. malevolus* on *H. puera* and *A. machaeralis* and *A. ruidus* on *Eutectona machaeralis* have been recorded from teak forests (Beeson, 1941). Chatterjee and Misra (1974) enlisted 49 species of *Apanteles* from India, out of which four species of *Apanteles*, viz. *A. malevolus* and *A. puera* are reported to parasitise the larvae of *H. puera*, and *A. machaeralis* and *A. ruidus* parasitise the larvae of *E. machaeralis*. Till date 85 species of *Apanteles* infesting various insect pests have been recorded from India. Nair et al. (1995) have recorded *A. hyblaeae*, *A. machaeralis*, *A. malevolus* and *A. puera*, as parasitoids of teak defoliator, *H. puera*. Recently,

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

Roychoudhury (2013) has also recorded 30 species of *Apanteles* on major defoliators of teak in Odisha. The present article deals with *Apanteles rudius* Wilkinson (Hymenoptera : Braconidae) emerged from laboratory reared larvae of defoliator, *H. puera* collected from teak forests of Odisha. The diagnostic features of *A. rudius* are mentioned.

***Apanteles* species**

A checklist of world species of Microgastrinae parasitoid wasps (Hymenoptera : Braconidae) reveals a total of 81 genera including *Apanteles* and 2,999 extant species are recognized as valid, including 36 nominal species that are currently considered as *species inquirendae* (Fernandez-Triana et al., 2020). *Apanteles* is a very large genus of braconid wasps, containing more than 600 described species found worldwide (https://en.wikipedia.org/ wiki/Apanteles).

The parasitic wasps, *Apanteles* species are important larval parasitoids of several lepidopterous pests of agricultural crops, commercial cash crops and forest tree species. Adult wasps are free-living and females insert their eggs beneath the skin of the host larvae, where eggs hatch and their young ones feed. Finally, mature larvae leave the hosts and spin cocoons before larval-pupal transformation. After pupal-adult transformation wasps emerge from the cocoons. *Apanteles* Foerster belongs to the order Hymenoptera, family Braconidae and sub-family Microgastrinae. It is the most conspicuous single group of endo-parasitoids of Lepidoptera in the world, both in terms of species richness and economic importance. In India, considerable work has been carried out on identification of *Apanteles* species only (Wilkinson, 1928a,b). Several *Apanteles* species have been recovered from a large number of native Lepidoptera and are potential biocontrol agents to check the population of important insect pests (Chatterjee and Misra, 1974).

***Apanteles rudius* Wilkinson**
Apanteles rudius Wilkinson, 1928a: 94
(Fig. 1)

Diagnostic characters : Fore-wings with extreme margins of stigma and metacarp are reddish yellow; first abscissa of radial is equal to the breadth of stigma, possibly a little and longer than recurrent vein which latter is obviously longer than transverse cubital; stigma shorter to metacarp, longer tibial spur about and shorter spur sub equal of the half the length of basal joint of hind tarsus. First tergite and 2nd tergite rugose, the 3rd tergite least basally and commonly completely rugulose, each succeeding tergite with a trasverse row of minute punctures; ovipositor sheaths about equal to or rather longer than hind tibial spur.

Fig.1. *Apanteles rudius*

References

[1]. Beeson, C.F.C. (1941). The Ecology and Control of the Forest Insects of India and the Neighbouring Countries. 1993 reprint edition. Bishen Singh Mahendra Pal Singh, Dehra Dun, 1006 pp.

[2]. Bhat, K.M., Nair, K.K.N., Bhat, K.V., Muralidharan, E.M. and Sharma, J.K. (2005). Quality Timber Products of Teak from Sustainable Forest Management. Published by Kerala Forest Research Institute, Peechi, Kerala and International Tropical Timber Organization, Yokohama, Japan, 669 pp.

[3]. Chatterjee, P.N. and Misra, M.P. (1974). Natural insect enemy and plant host complex of forest insect pests of Indian region. Indian Forest Bulletin (N.S.) (Ent.) 265: 232 pp.

[4]. Fernandez-Triana, J., Shaw, M.R., Boudreault, C., Beaudin, M. and Broad, G.R. (2020). Annotated and illustrated world checklist of Microgastrinae parasitoid wasps (Hymenoptera, Braconidae). ZooKeys 920(3): 1–1089. doi:10.3897/zookeys.920.39128.

[5]. Nair, K.S.S., Mohanadas, K. and Sudheendra Kumar V.V. (1995). Biological control of the teak defoliator, Hyblaea puera Cramer (Lepidoptera: Hyblaeidae) using insect parasitoids : problems and prospects. In: Biological Control of Social Forest and Plantation Crops Insects, Ananthakrishnan T.N. (ed.), pp. 75-95, Oxford & IBH publishing Co., New Delhi.

[6]. Roychoudhury, N. (2010). Studies on the natural enemies of teak pests, Hyblaea puera and Eutectona machaeralis and their role in suppressing the population of insects in Madhya Pradesh. Project Completion Report submitted to M. P. Council of Science and Technology (MPCST), Bhopal, 32 pp.

[7]. Roychoudhury, N. (2013). Studies on larval parasitoids, Apanteles spp. (Hymenoptera : Braconidae) of major defoliators of teak and sal forests of Orissa. Project Completion Report submitted to Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE), Dehradun, 79 pp.

[8]. Roychoudhury, N. (2016). Search for natural enemies of defoliator, Hyblaea puera Cramer and leaf skeltonizer, Eutectona machaearlis (Walker), in teak forests of Madhya Pradesh. Journal of Tropical Forestry 32(4): 51-83.

[9]. Roychoudhury, N., Vaishy, N. and Mishra, R.K. (2022). Biology of larval parasitoid, Apanteles machaeralis (Hymenoptera : Braconidae) on teak leaf skeletonizer, Eutectona machaeralis (Lepidoptera : Pyralidae). Pestology 46(5): 29-34.

[10]. Tewari, D.N. (1992). A Monograph on Teak (Tectona grandis Linn.f.). International Book Distributors, Dehradun, 479 pp.

[11]. Wilkinson, D.S. (1928a). A revision of the Indo-Australian species of the genus Apanteles (Hymenoptera: Braconidae). Part-I. Bulletin of Entomological Research 19(1): 79-105.

[12]. Wilkinson, D.S. (1928b). A revision of the Indo-Australian species of the genus Apanteles (Hymenoptera: Braconidae). Part-II. Bulletin of Entomological Research 19(2): 109-146.

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

Assessing the Effect of Stress on the Consumption of Various Food Groups by Adolescent Girls at Banaras Hindu University

Mahajabi Fatma[1], Garima Upadhyay[2]

[1]Research Scholar, Department of Home Science, Vasant Kanya Mahavidyalaya, Kamachha, Varanasi, Uttar Pradesh, India

[2]Associate Professor, Department of Home Science, Vasant Kanya Mahavidyalaya, Kamachha, Varanasi, Uttar Pradesh, India

Article Info

Publication Issue :

March-April-2023

Volume 6, Issue 2

Page Number : 31-39

Article History

Received : 01 March 2023

Published : 15 March 2023

ABSTRACT

The phenomenon of stress is a complex one, and each individual has their own level of stress tolerance. A series of coordinated responses are induced by the presence of stressors, which are often referred to as 'stress responses' which are composed of a series of reactions in the body including alterations in behaviour, autonomic function, secretion of multiple hormones and various physiological Changes in the body. A good way to cope with stress is to eat foods that contain nutrients that reduce and fight stress.The study was designed to find out the level of stress among adolescent girls and to examine the relationship between the level of stress and the food consumption pattern of female students (17-19 years).A total of 317 adolescent girls (17-19 years) were selected from Banaras Hindu University (Women's College, Faculty of Arts, Faculty of Social Science and Faculty of Science), Varanasi. A questionnaire was developed to elicit information regarding the demographic profile, dietary pattern including food patterns, food habits, frequency of food intake and 24-hour dietary recall. The stress scale by M. Singh has been used to assess stress levels among adolescent girls.59.9 % of the respondents were found very low levels of stress and 0.9 % of the respondents were found severe levels of stress. The intake of other vegetables and the level of stress were found a significant association ($P<0.001$). The intake of roots & tubers and stress level were found a significant association ($P<0.05$).These results showed a clear difference in food selection patterns between stressed and non-stressed female students with stress being a more significant predictor of unhealthy food selection.

Keywords - Food consumption pattern, Roots & Tubers, Other Vegetables

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

INTRODUCTION

The term “Adolescence” comes from the Latin word “adolescere” which means “to grow” or “to maturity”[1]. So the essence of the word adolescence is growth and it is in the sense that adolescence represents a period of intensive growth and change in nearly all aspects of child’s physical, mental, emotional and social life. Adolescence is probably the most challenging and complicated period of life to describe, study or experience. According to A.T. Jersild, “Adolescence is a period during which boys and girls move from childhood to adulthood mentally, emotionally, socially and physically.” [1] Stanley Hall said, “It is a period of stress and strain, storm and strife” [1]. Piaget expressed adolescence is the age when the individual becomes integrated into the society of adults, the age when the child no longer feels that he is below the level of his elders but equal , at least in rights[1]. This integration into adult society has many affective aspects, more or less linked to puberty[1]. It also includes very profound intellectual changes. At this stage of development, the intellectual transformations typical of adolescence allow him to integrate into adult social relationships. This is actually the most characteristic trait of this stage.

It is a fact of life that we are constantly under stress in the modern world. The experiences an individual has during his or her childhood profoundly influence his or her emotional and physical well-being later in life. Early trauma and stress induce predictable patterns of brain development, traits, and behaviors as a result of childhood adversities. In adolescence, a period of transition between childhood and adulthood, stress and strain are common.

In a person's life, the adolescent years are the most stressful. As adolescents experience puberty, they meet changing expectations from others, and they cope with feelings they may not have experienced before. Adolescence is a stressful time in today's society due to modernization and westernization.

Stress Response- This process involves a series of hormones, the brain, and the autonomic nervous system, which controls involuntary functions such as breathing, blood pressure, and heart rate.

Relationships are complicated, but worth understanding.

As people respond to threats, the thalamus, located in the brain, receives and processes sensory information.

In an instant, our thalamus alerts the brain's fear center, the amygdale, and other emotional centers, which then send signals to the motor cortex. This signals muscles to tense and tighten, bracing themselves for trouble, as the message travels down nerve pathways.

There is also a signal coming from the hypothalamus, a portion of the brain situated above the brainstem. A chemical messenger is sent via the blood stream to the adrenal glands, located above the kidneys, in response to the warning. The adrenal glands relay the message to the nearby pituitary gland. Cannon isolated the first stress hormone, epinephrine, commonly known as adrenaline, in response to stress.

There is also another stress hormone produced by the adrenal glands, called nor epinephrine, or nor adrenaline. There was also another discovery that other researchers made about the stress hormone cortisol. A stressful situation will result in the release of all three hormones, which will cause a broad range of physiological responses in the body when they are released.

At the same time, the hypothalamus fires up the automatic nervous system in response to the stimulus. In the body, this network of nerves relays the warning all the way down to the spinal cord and from there to the nerves throughout the body. The body releases epinephrine and nor epinephrine when nerve endings in organs, blood vessels, skin, and sweat glands are stimulated.

This combination of hormones primes our bodies to react to an imminent threat as a result of this tandem surge of hormones. As a result of an immediate physical threat, such as a prowling wild animal or an armed enemy, the body either prepares to stand its ground and fight or flee.

As our body takes in more oxygen to fuel our muscles, our breath quickens as the body takes in more oxygen to make our muscles stronger. In a similar manner, glucose and fat, which provide us with energy, are released from

our storage sites into our bloodstream. Our senses are sharpened, such as sight and hearing, and we remain more alert as a result.

When people are faced with such a situation, their hearts beat rapidly at two to three times the normal rate, and their blood pressure also increases. There are certain blood vessels in our bodies that constrict in order to direct blood flow away from the skin and other organs and towards our muscles and brain, which helps direct blood away from our skin and other organs and towards them.

The blood cells called platelets become stickier, which makes it easier for clots to form in order to minimize bleeding from potential injuries that may occur. In order to combat infections from anticipated wounds, the immune system begins to get more active. As the body prepares to take action, our muscles, even tiny, hair-raising muscles beneath our skin, tighten up, preparing to spring into action. It was decided that in order to concentrate energy in the right places, body systems which were not necessary for the immediate emergency were suppressed. There is a slowdown in the functioning of the stomach and intestines. The level of sexual arousal decreases. There is a slowing down of the process of repairing and growing body tissues.

The Positive Side of Short-Term Stress

It is important to remember that not all stress is bad. It has been observed that a stress response can be extraordinarily beneficial in times of physical danger or when it's imperative to accomplish a critical task in a short period of time, as many people have discovered. People are able to perform Herculean feats thanks to the surge in epinephrine (adrenaline) in their systems. Countless examples of such deeds are found in the deeds of first responders who act swiftly to help others during hazardous weather events or terrorist-related incidents that occur all over the world.

As overwhelming as these situations can be, the stress response can be appropriate and essential in such circumstances, as well as assist in rising to many challenges. These challenges may be external forces, such as a fire or an earthquake, or internal threats, such as the circulatory system teetering on the brink of a deadly collapse.

The Downside of Chronic Stress

It is intuitively understandable why the classic stress response occurs. It enables you to rise to occasions that reward heightened awareness and abilities. When we hear a tree limb crack above us while sheltering from a storm, the surge of epinephrine helps us sprint away from its path far more quickly than we would normally. This was the perfect way to release the stress hormones circulating in our bodies.

The reality, however, is that obvious dangers are not the only scenarios that can elicit the stress response in us. Any situation that we see as a hassle or as a threat to our well-being may trigger it, too, especially if we assess the situation too quickly and decide that we do not have the resources to handle it. The trouble begins there, and that's when things go awry.

It is very difficult for the human body to differentiate between a life-threatening event and the stresses of day-to-day living. The anger and anxiety created by less momentous sources of stress, such as computer malfunctions and traffic jams, tend not to find a quick physical release and are likely to build up as the day progresses.

Our body's stress response can be described as maladaptive or unhealthy when the body repeatedly experiences the stress response, or if arousal after experiencing a terrible trauma is never fully switched off after the event. In this situation, the stress response kicks in sooner or more frequently than normal, increasing the burden our bodies must handle. There are a number of serious health problems that can result from this condition. When it comes to coronary artery disease, high blood pressure is a very important risk factor. As an example, high blood pressure is one of the factors that contribute to this.

Dietary habits play a significant role in health, morbidity, and mortality for a wide variety of conditions. Thus, patterns of food consumption and their implications for mental health have received some attention in research.[2] A

number of observational and experimental studies have examined the effects of carbohydrate intake on mood. [3] [4] [5] Several studies have examined the association between stress and food selection, with partly inconsistent results. [6] [7] [8] [9] [10] [11] [12] It has been hypothesized that carbohydrate consumption can relieve depression. [13] This has been considered to be a contributing factor to the development of obesity. [14] [15] The association, however, has also been observed in the opposite direction, with poor food choices being associated with stress and depressive symptoms. [16] Studies on the effects of stress on food choice show that people experiencing periods of stress reported eating foods they normally avoided and eating them as a means of coping. [17] A lack of a healthy diet was associated with depression/stress being reported for 10 or more days during the past month for both males and females in the United States.[18] There is evidence that stress increases food consumption in some individuals, as well as causes them to shift their food choices from low fat foods to higher fat foods. [17] A coping strategy for stressful situations has been theorized to be eating[19], however, a study of college students found that stress or depression were associated with frequency of eating various food groups. [16] The University of the United Arab Emirates reported that 65% of students reported high stress levels and 50% reported poor diets. [20] In order to understand students' patterns of food consumption, it is imperative to understand their eating patterns. When poor nutritional habits are associated with stress and/or depression symptoms, programs that address mental health may also lead to healthier eating habits, and vice versa.

Objectives of the Study- To find out the level of stress among adolescent college going girls (17-19 Years) and **to examine the relationship between level of stress and food consumption pattern of female students (17-19 years).**

Study Materials and Methods – This cross sectional study was conducted at Banaras Hindu University (Women's College, Faculty of Arts, Faculty of Social Science, Faculty of Science), Varanasi. Among the 1510 (Population) of adolescents girls, 317 respondents were selected.

A questionnaire was developed to elicit information regarding demographic profile, dietary pattern including food pattern, food habits, frequency of food intake and 24 hours dietary recall. A stress scale by M. Singh (2002) was used to assess the level of perceived stress of selected adolescent girls. Using SPSS, suitable statistical tools were selected to analyze the observed data.

Table No. 1: Distribution of respondents according to their level of stress

Level of stress	No.	Percentage(Per cent)
Very low	190	59.9
Low	67	21.2
Moderate	28	8.8
High	29	9.2
Severe or Very high	03	0.9
Total	**317**	**100.0**

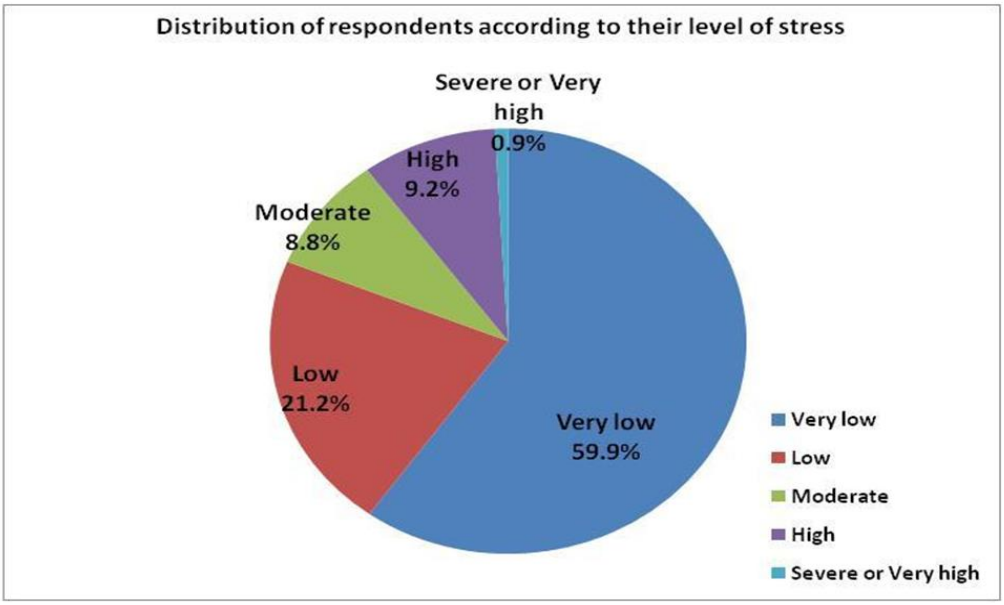

Most respondents (59.9% (190) found that they were under very low levels of stress, 21.2% (67) reported that they were under very low levels of stress, 9.2% (29) reported high levels of stress, and 0.9% (03) reported several or very high levels of stress.

Table No. 2 - Association between stress and food consumption pattern of pulses & legumes

Food Consumption Pattern of Pulses & Legumes	Level of Stress							
	Low		Moderate		High		Total	
	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage
Daily	232	82.0	21	7.4	30	10.6	283	100.0
Weekly	24	72.7	07	21.2	02	6.1	33	100.0
Occasionally	01	100.0	01	-	-	-	-	100.0
Total	257	81.1	28	8.8	32	10.1	317	100.0
χ^2 =7.51, df=4, P >0.05								

According to the majority, 82.0 % of respondents with low levels of stress consumed more pulses & legumes on a daily basis, while only 6.1 % of respondents with high levels of stress consumed pulses & legumes weekly. There was no significant difference between the intake of pulses & legumes and the level of stress (P>0.05).

Table No. 3 - Association between stress and food consumption pattern of green leafy vegetables

Food Consumption Pattern of Green Leafy Vegetables	Level of Stress							
	Low		Moderate		High		Total	
	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage

Daily	171	81.8	19	9.1	19	9.1	209	100.0
Weekly	83	81.4	07	6.9	12	11.8	102	100.0
Occasionally	03	50.0	02	33.3	01	16.7	06	100.0
χ^2=6.02, df=4, P >0.05								

A majority (81.8 %) of respondents with low levels of stress consumed a greater number of green leafy vegetables on a daily basis, while a minority (6.9 %) consumed green leafy vegetables on a weekly basis. There was no significant difference between the intake of green leafy vegetables and the level of stress (P>0.05). According to **Mikolajczyk et al**, **(2009),** less frequent consumption of vegetables was associated with perceived stress. This association appears to be a result of the behavioural consequences of higher depressive symptoms and is consistent with the correlation between depressive symptoms and perceived stress. According to **Pareek et al, (2020),** vegetables were consumed at a significantly low level. This study was similar to the present study.

Table No. 4 - Association between stress and food consumption pattern of other vegetables

Food Consumption Pattern of Other Vegetables	Level of Stress							
	Low		Moderate		High		Total	
	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage
Daily	173	80.8	15	7.0	26	12.2	214	100.0
Weekly	78	85.7	08	8.8	05	5.5	91	100.0
Occasionally	06	50.0	05	41.7	01	8.3	12	100.0
χ^2=19.97, df=4, P <0.001								

The majority (85.7 %) of respondents with a low level of stress consumed more other vegetables on a weekly basis, whereas only 5.5% of respondents with a high level of stress consumed other vegetables. There was a significant difference between the intake of other vegetables and the level of stress (P0.001).

Table No. 5- Association between stress and food consumption pattern of roots & tubers

Food Consumption Pattern of Roots & Tubers	Level of Stress							
	Low		Moderate		High		Total	
	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage
Daily	61	83.6	05	6.8	07	9.6	73	100.0
Weekly	100	86.2	07	6.0	09	7.8	116	100.0
Occasionally	77	76.2	09	8.9	15	14.9	101	100.0
Rarely	19	70.4	07	25.9	01	3.7	27	100.0
χ^2=15.39, df=6, P <0.05								

In general, 86.2 per cent of respondents with low levels of stress consumed more roots and tubers each week. There were only 6.0% of respondents who consumed roots and tubers on a weekly basis among the minority of respondents who had moderate levels of stress. There was a significant correlation between the intake of roots and tubers and the level of stress (P 0.05).

Table No. 6- Association between stress and food consumption pattern of fruits

Food Consumption Pattern of Fruits	Level of Stress							
	Low		Moderate		High		Total	
	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage	No.	Percentage
Daily	126	82.9	09	5.9	17	11.2	152	100.0
Weekly	104	78.8	15	11.4	13	9.8	132	100.0
Occasionally	27	81.8	04	12.1	02	6.1	33	100.0
χ^2=3.69, df=4, P >0.05								

In general, 82.9 % of respondents who reported low levels of stress consumed more fruits on a daily basis. Only 5.9 per cent of respondents with moderate levels of stress consumed fruits on a daily basis. A significant difference was not found between the intake of fruits and the level of stress of the respondents (P>0.05). In a study conducted by **Mikolajczyk et al, (2009),** less frequent consumption of fruits was associated with perceived stress. In their study, **Pareek et al, (2020)** found a significantly low intake of fruits. These studies were similar to the present study.

Conclusion- Everyone deals with stress at some point in their lives, some more than others. There are many factors that cause stress to the human body, the surroundings, and day-to-day living. The food that a person consumes as part of their daily lifestyle can assist a person in overcoming or reducing stress' effects on the body. If unhealthy eating habits are not addressed, they will only lead to increased levels of stress, followed by further problems in the future. A well-balanced nutritional diet is one of the most important components of good health. The importance of a well-balanced diet when under stress cannot be overstated. A well-balanced diet and stress busting foods will help us combat stress effects on adolescents' bodies. Stress management may be assisted by modifying the diet and changing the frequency of diet intake. Eating properly is very important. There must be a large amount of complex carbohydrates in the diet. Foods of plant origin should be preferred in general. It may be beneficial to reduce and modify the amount of fat in the diet. It is recommended to consume a diet high in monounsaturated fats and omega-3 fatty acids. Cortisol concentrations and its binding globulin can change as a result of these modifications. Furthermore, plant foods are rich in phytochemicals and trace elements, which have many health benefits. Consuming green or yellow vegetables every day may also reduce the incidence of some stress syndromes (e.g., irritation and sleeplessness). At some point in an adolescent's life, stress will occur, and most likely several times. In spite of the fact that stress is sometimes unavoidable, it is always a matter of choice. Either one can allow the body to suffer the effects of stress, or one can take action to prevent them. Every individual should be aware that healthy eating and stress management play a significant role in keeping the body and mind healthy.

Acknowledgement- I would especially like to thank the Principal of MMV and the Dean of all the faculties for providing permission and moral help during the data collection for the study.

References

1. Shawl, Shabeena Iqbal and Mehraj, Nuseba, Impact of Academic Stress: A Study of Coping Strategies among Adolescents, IOSR Journal of Humanities and Social Science, Volume 22 (12), Pp. 40-45, 2017.
2. Christensen, L and Pettijohn, L, Mood and carbohydrate cravings, Appetite, Volume 36,Pp 137-145, 2001.
3. Benton, D, Carbohydrate ingestion, blood glucose and mood, Neurosci Biobehav Rev, Volume 26, Pp 293-308, 2002.
4. Benton, D and Donohoe, RT, The effects of nutrients on mood, Public Health Nutr, Volume 2, Pp 403-409, 1999.
5. Prasad, C, Food, mood and health: a neurobiologic outlook, Braz J Med Biol Res, Volume 31, Pp 1517-1527, 1998.
6. McCann, BS, Warnick, GR and Knopp, RH, Changes in plasma lipids and dietary intake accompanying shifts in perceived workload and stress, Psychosom Med, Volume 52, Pp 97-108, 1990.
7. Michaud, C, Kahn, JP, Musse, N, Burlet, C, Nicolas, JP and MeJean, L, Relationships between a critical life event and eating behavior in high school students, Stress Med, Volume 6, Pp 57-64, 1990.
8. Weidner, G, Kohlmann, CV, Dotzauer, E and Burns, LR, The effects of academic stress on health behaviors in young adults, Anxiety Stress Coping, Volume 9, Pp123-133, 1996.
9. Oliver, G and Wardle, J, Perceived effects of stress on food choice, Physiol Behav , Volume 66, Pp 511-515, 1999.
10. Pollard, TM, Steptoe, A, Canaan, L, Davies, GJ and Wardle, J, Effects of academic examination stress on eating behavior and blood lipid levels, Int J Behav Med, Volume 2, Pp 299-320, 1995.
11. Bellisle, F, Louis-Sylvestre, J, Linet, N, Rocaboy, B, Dalle, B, Cheneau, F, L'Hinoret, D and Guyot, L, Anxiety and food intake in men, Psychosom Med, Volume 52, Pp 452-457, 1990.
12. Stone, AA and Brownell, K, The stress-eating paradox: multiple daily measurements in adult males and females, Psychol Health, Volume 9, Pp 425-436, 1994.
13. Wurtman, RJ and Wurtman, JJ, Carbohydrates and depression, Sci Am, Volume 260, Pp 68-75, 1989.
14. Arnow, B, Kenardy, J and Agras, WS, Binge eating among the obese: a descriptive study, J Behav Med, Volume 15, Pp 155-170, 1992.
15. Liberman, HR, Wurtman, JJ and Chew, B, Changes in mood after carbohydrate consumption among obese individuals, Am J Clin Nutr, Volume 44, Pp 772-778, 1986.
16. Liu, C, Xie, B, Chou, CP, Koprowski, C, Zhou, D, Palmer, P, Sun, P, Guo, Q, Duan, L, Sun, X and Anderson Johnson, C, Perceived stress, depression and food consumption frequency in the college students of China Seven Cities, Physiol Behav, Volume 92, Pp 748-754, 2007.
17. Zellner, DA, Loaiza, S, Gonzalez, Z, Pita, J, Morales, J, Pecora, D and Wolf , A, Food selection changes under stress, Physiol Behav,Volume 87, Pp 789-793, 2006.
18. Brooks, TL, Harris, SK, Thrall, JS and Woods, ER, Association of adolescent risk behaviors with mental health symptoms in high school students, J Adolesc Health, Volume 31, Pp 240-246, 2002.
19. Jenkins, S and Horner, SD, Barriers that influence eating behaviors in adolescents, J Pediatr Nurs, Volume 20, Pp 258-267, 2005.
20. Carter, AO, Elzubeir, M, Abdulrazzaq, YM, Revel, AD and Townsend, A, Health and lifestyle needs assessment of medical students in the United Arab Emirates, Med Teach, Volume 25, Pp 492-496, 2003.

21. Mikolajczyk, Rafael T, Ansari, Walid Eland Maxwell, Annette E, Food consumption frequency and perceived stress and depressive symptoms among students in three European countries, Nutrition Journal, Volume 8 (31), 2009.
22. Pareek, Priyanka and Mehta, Neha, Perceived Stress and dietary behaviour of adolescent girls, Current Development in Nutrition, Pp 554, 2020.
23. Gupta, Amarnath, Sharma, RP, Goyal, P and Midha, T, Perceived Stress among Adolescents: A Cross Sectional Study in High School Students of Kanpur City, Indian Journal of Maternal and Child Health, Volume 12 (3), Pp.105, 2010.
24. Omidvar, Shabnam and Begum, Khyrunnisa, Dietary Pattern, Food Habits and Preferences among Adolescent and Adult Student Girls from an Urban Area, South India, Indian Journal of Fundamental and Applied Life Sciences, Volume 4 (2), Pp. 465-473, 2014.
25. Damodaran, Deepa K and K, Paul Varghese, Stress Management Among Adolescents, The International Journal Of Indian Psychology, Volume 3 (1), Pp. 104-111, 2015.
26. Watode, Bhaskar Khabraji, Kishor, Jugal and Kohli, Charu, Prevalence of Stress among School Adolescents in Delhi, Indian Journal Of Youth And Adolescent Health, Volume 2 (4), Pp.4-9, 2015.
27. Sharma, Smita, The Level of Stress among the College Going Adolescents Living in Guwahati City of Assam, The International Journal Of Indian Psychology, Volume 3 (4). Pp.191-205, 2016.
28. Priyanka and Kshipra, Stress Faced by Adolescents and Coping Strategies used to face Stress, IOSR Journal of Humanities and Social Sciences, Volume 22 (6). Pp 16-20, 2017.
29. Sigfusdottir, Inga Dora, Kristjansson, Alfgeir Logi, Thorlindsson, Thorolfur and Allegrante, John P, Stress and Adolescent Well Being: The Need for an Interdisciplinary Frame Work, Health Promotion International, Volume 32, Pp. 1081-1090, 2017.
30. Upreti, Kamal, Stress among adolescents in Relation to their Gender and Region of Residence, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, Volume 4 (24). Pp. 6630-6633, 2017.
31. Rantala, Sreevani, Nayak, Raghavendra Bheemappa, Patil, Sugnyani Devi, Hegde, Gayatri Subray and Aladakatti, Rajashree, Academic Stress among Indian Adolescent Girls, Journal Of Education And Health Promotion, Volume 8, Pp.158, 2019.
32. Gajula, Madhavi, Bant, Dattatreya and Bathija, Geeta V, Perceived Stress among Adolescent School Students in Hubli: A Cross-Sectional Study, National Journal Of Community Medicine, Volume 12 (7). Pp. 169-174, 2021.
33. Fukuya, Yoshifuni, Fujiwara, Takeo, Isumi, Aya, Dio, Satomi and Ochi, Manami, Association of Birth Order with Mental Health Problems, Self-Esteem, Resilience, and Happiness among Children: Results from a Child Study, Frontiers In Psychiatry, Volume 12, 2021.
34. Hoseini- Esfidarjani, Sara-Sadat, Tanha, Kiarash and Negarandeh, Reza, Satisfaction with Life, Depression, Anxiety and Stress among Adolescent Girls in Tehran: A Cross Sectional Study, BMC Psychiatry, Volume 22 (109), 2022.

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

रामायण का आदिकाव्यत्व एवं उसका सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व

डॉ. दिलीप कुमार
पूर्व शोध छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2
Page Number : 40-42
Article History
Received : 01 March 2023
Published : 15 March 2023

शोधसारांश– रामायण को परवर्ती साहित्य का आधार कहा जा सकता है क्योंकि परवर्ती साहित्य को इसके द्वारा भाव, भाषा और शैली का निर्देश मिला है। माधुर्यमयी उक्तियों का आरम्भ रामायण में ही संस्कृत साहित्य में हुआ है। रामायण की भाषा सुन्दर, ललित, प्रांजल, प्रवाह–पूर्ण तथा परिष्कारयुक्त है।

मुख्य शब्द–रामायण, साहित्यय, भाषा, भाव, शैली सांस्कृतिक।

रामायण अतिप्राचीन एवं लोकप्रिय महाकाव्य है। भारत वर्ष की साहित्यिक परम्परा में वाल्मीकि को 'आदिकवि' और रामायण को 'आदिकाव्य' कहा गया है। वाल्मीकि स्नानार्थ जब गंगा नदी को जा रहे थे, तब रास्ते में उन्हें तमसा नदी मिली। तमसा नदी के जल से मन्त्रमुग्ध होकर ऋर्षि वहीं स्नान करने का निश्चय करते हैं, लेकिन उसी तमसा नहीं के किनारे युगल क्रौंच पक्षी प्रणय क्रिया में लीन थे, जिसे वाल्मीकि को देखकर हर्ष हुआ, लेकिन अचानक कहीं से बाण आकर उन दोनों में से एक आहत हो जाता है जिसे वाल्मीकि देखकर उनके मुख से शोक से प्रेरित होकर यह वाक्य निकलता है–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।।

शौक के कारण वाल्मीकि के मुख से ही संस्कृत की प्रथम कविता निर्गत हुई थी।[1] इस विचित्र रचना पर वाल्मीकि स्वयं चकित हो गये कि तभी ही ब्रह्मा ने प्रकट होकर उनसे कहा– **'ऋषे प्रबुद्धोऽसि वागात्मनि ब्रह्मणि, तद्, ब्रूहि रामचरितम्। अव्याहतज्योतिः आर्षं ते प्रतिभाचक्षुः। आद्यः कविरसि।'[2]**

तमसा–तीर पर **'निषादविद्धाण्ऽज–दर्शनोत्थः'** कवि का शोक श्लोक छन्द में फूट पड़ा, वही कालान्तर में काव्य की आत्मा के रूप में ग्राह्य हुआ। भले ही इसे भवभूति ने 'शब्द ब्रह्म का निवर्त' कहा किन्तु यही कविता जन–भावना की वाहिनी बनकर लोक में नई धारा का प्रवर्तन करने में समर्थ हुई। महर्षि वाल्मीकि चाहते थे कि ऐसी काव्य रचना करें जो अमर हो, जन–जीवन से सम्बद्ध हो, चतुर्वर्ग की प्राप्ति में सहायक हो, भाव–भाषा–छन्द–शैली–अलंकार की दृष्टि से नवीन हो, लोक रंजन और परलोक दोनों का साधक हो।[3] वे नायक का अन्वेषण कर रहे थे।[4] नारद से उन्होंने पूँछ रखा था कि गुण, बल, चरित्र, धर्मज्ञता, कृतज्ञता, सत्यवाणी, व्रत–पालन, सर्वभूतहित, ज्ञान, सामर्थ्य आदि की दृष्टि से कौन व्यक्ति संसार में श्रेष्ठ है– महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम्।[5]

वैदिक गायत्री की पवित्रता प्रदान करने के लिए उनकी कविता एक–एक वर्ण पर एक–एक सहस्त्र श्लोकों को समर्पित करती हुई 'चतुर्विंशति–साहस्री संहिता बन गई।

भोज ने अपनी रामायणचम्पू में वाल्मीकि को मधुर काव्य शैली का प्रवर्तक कहा है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

''मधुमय–भणितीनां मार्गदर्शी महर्षि:।''[6]

रामायण का सांस्कृतिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि भी साहित्यिक मूल्य सर्वोपरि है। यह ग्रन्थ परवर्ती काव्य रचनाओं का उपजीव्य रहा है। रामायण की कथा और शैली दोनों का ग्रहण परवर्ती रचनाओं में हुआ है। रामायण की कथा की अमरता के विषय में रामायण में ही संकेत किया गया है–

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।।[7]

सांस्कृतिक महत्त्व–

इस महाकाव्य में मानव जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। यह काव्य और आचारशास्त्र का संयुक्त रूप है क्योंकि मानव जीवन का आदर्शरूप इसमें प्रस्तुत किया गया है। इस महाकाव्य में सामाजिक सम्बन्ध का अच्छा सम्पुट हमें देखने को मिलता है–

जैसे–

राम का आदर्शभूत मानव रूप, लक्ष्मण तथा भरत की भ्रातृशक्ति, सीता का पातिव्रत्य, विभीषण की न्यायप्रियता, रावण की हठधर्मिता, कुम्भकर्ण की निद्रा आदि। रामायण में पितृभक्ति, पुत्रप्रेम, स्वामिभक्ति, प्रजावत्सलता, भ्रातृस्नेह इत्यादि मानवीय गुणों का एवं सत्य, धर्म, सदाचार, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि सामान्य गुणों का विस्तार से प्रतिपादन किया गया है। राम के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और चारित्रिक गुणों का वाल्मीकि ने सूत्ररूप में चित्रण करके पुनः उनका विस्तृत प्रदर्शन किया है।[8]

'यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हतेङ्क्त।।'

वाल्मीकि रामायण में मानव–हृदय के सभी पक्षों का वर्णन किया गया है। पात्रों को उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में प्रस्तुत किया है, जिससे आज भी भारतीय संस्कार से युक्त व्यक्ति को जीवन के सभी स्तरों में दिशा–निर्देश रामायण से प्राप्त होता है। राजा के कर्त्तव्यों का वाल्मीकि ने व्यापक वर्णन किया है। राजा के न रहने पर प्रजा में सर्वत्र असुरक्षा तथा भय व्याप्त हो जाता है–

'नाराजके जनपदे धनवन्तः सुरक्षिताः।
शेरते निवृतद्वाराः कृषिगोरक्षजीविनः।।

(2/67/18)

धार्मिक दृष्टि से रामायण को महाभारत की अपेक्षा अधिक प्रशस्त माना गया है। स्कन्दपुराण के उत्तरखण्ड में पाँच अध्यायों में रामायण का धार्मिक महत्त्व निरूपित किया गया है। कहा गया है–

'रामायणमादिकाव्यं सर्ववेदार्थसम्मतम्।
सर्वपापहरं पुण्यं सर्वदुःखनिबर्हणम्।।
समस्तपुण्यफलदं सर्वयज्ञफलप्रदम्।

(रामायणमाहात्म्य 5/63)

साहित्यिक महत्त्व– रामायण को परवर्ती साहित्य का आधार कहा जा सकता है क्योंकि परवर्ती साहित्य को इसके द्वारा भाव, भाषा और शैली का निर्देश मिला है। माधुर्यमयी उक्तियों का आरम्भ रामायण में ही संस्कृत साहित्य में हुआ है। रामायण की भाषा सुन्दर, ललित, प्रांजल, प्रवाह–पूर्ण तथा परिष्कारयुक्त है। भाव के अनुरूप भाषा में आरोह–अवरोह का विन्यास वाल्मीकि ने ही आरम्भ किया है। जहाँ किसी घटना का विवरण देना हो वहाँ वाल्मीकि पौराणिक सरलता दिखाते हैं। जैसे–

''यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्ति स्म तां पुरीम्।
भरतेनापि तां रात्रिं स्वप्नो दृष्टोऽयमप्रियः।।[9]

इसी प्रकार वाल्मीकि ने उपदेश आदि देने में भी ऐसी ही सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। जैसे–

'मरणान्तानि वैराणि निर्वृतं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारों ममाप्येष यथा तव।।[10]

वाल्मीकि जी ने अपनी भाषा को ईषतृ अलंकृत करके शैली–सौन्दर्य के प्रति जागरुक हो जाते हैं। उदाहरणार्थ सुन्दरकाण्ड में हनुमान लंका में जब चन्द्रोदय का अवलोकन करते हैं तब कवि का प्रकृति–प्रेम अलंकारों के आकर्षण में पड़कर प्रवाहित हो उठता है।

'हंसो यथा राजत– पंजरस्थः सिंही यथा मन्दर–कन्दरस्थः।
वीरो यथा गर्वितकंजरस्थश्चन्द्रोऽपि.....
.....विरराज चन्द्रः।।[11]

वाल्मीकि ने उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास आदि प्रमुख अलंकारों का तो प्रयोग किया ही है, यथासंख्य–जैसे अल्प्रचलित अलंकार का भी सुन्दर निवेश किया है। किष्किन्धाकाण्ड में वर्षावर्णन के प्रसंग में कहा गया है–

'वहति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति ध्यायान्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नथो घना मत्तगजा वनान्ताः प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगा।।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः, रघुवंश 14/70
2. उत्तररामचरित 2/5 के बाद आत्रेयी का कथन
3. डॉ0 कलिपदेव द्विवेदी–संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 111
4. रामायण 1/1/2–4
5. वही, 1/1/5 (उत्तरार्ध)
6. रामायण चम्पू 1/8
7. रामायण 1/2/37
8. रामायण 2/17/14
9. रामायण 2/69/1
10. रामायण 6/111/100
11. रामायण 5/5/4–7
12. रामायण 4/27/28

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा, प्रकृति कारण एवं निवारण

डॉ.वंचना सिंह परिहार
प्रशासक, वन स्टॉप सेंटर (सखी), महिला बाल विकास विभाग जिला इंदौर (म.प्र.)

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 43-65

Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

शोधसारांश– मान्यता है कि ईश्वर की सबसे खूबसूरत रचना नारी एवं नारी का स्वभाव है। प्रतोक रिश्ते को निभाना, रिश्तों के साथ जीना, नारी के खूबसूरत स्वभाव में स्नेह, प्रेम, करूणा, दया, सहिष्णुता, धैर्य, वात्सल्य, आवश्यकता पड़ने पर शक्ति स्वरूपा जैसे गुण विद्यमान है। माना जाता है कि नारी को वह शक्ति प्रकृति ने प्रदान की है जो प्राचीन काल से ही समस्त सामाजिक दायित्वों को निभा रही है। नारी दृढ़ निश्चयी एवं साहसी भी है। किंतु परिवर्तनशील समाज के नारी के साथ भी व्यवहार में परिवर्तन आता रहा है। कभी समानता एवं सम्मान का व्यवहार तो कभी असमानता शोषण, भेदभाव, अत्याचार जैसे व्यवहार का सामना नारी को करना पड़ा है। सामाजिक विकास के चरण में नारी द्वारा पुरूषों की आधीनता की मौन स्वीकृति ने नारी शोषण एवं अत्याचार को बढ़ावा दिया। पितृ सत्तात्मक समाज एवं संस्कृति ने नारी को अपने ही घर में दो यम दर्जे का व्यक्ति घोषित कर दिया। शनैः शनैः आर्थिक निर्भरता ने नारी को प्रस्थिति को पुरी तरह से निम्न स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया। प्रस्तुत अध्ययन महिलाओं के साथ होने वाली घरेलु हिंसा को दृष्टिगोचर करने के लिए है। घरेलु हिंसा की प्रकृति, उनका कारण एवं निवारण के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन केंद्रित हैं प्रस्तुत अध्ययन में इंदौर जिले के 300 परिवारों को न्यायदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। जिसमें से 100 महिलाये नौकरी पेशा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है फिर भी घरेलु हिंसा की शिकार है। 100 महिलायें निम्न वर्ग से है, जो किसी छोटे–मोटे व्यवसाय से जुड़ी हैं, असंगठित क्षेत्र की मजदूरी पेशा महिलाओं है, जो स्वयं आर्थिक उपार्जन कर रही है किंतु घरेलु, हिंसा का शिकार है। 100 महिलाएँ गृहिणीयाँ है जो सभी वर्गों से हैं। आर्थिक रूप से पति व परिवार पर निर्भर हैं तथा किसी –न–किसी प्रकार से घरेलु हिंसा से पीड़ित हैं। अध्ययन से घरेलु हिंसा के विभिन्न प्रकार व कारण उभरकर सामने आये है। पारिवारिक दायित्व को भी बखूभी निभा रही है। ऐसे में समय आ गया है कि समाज में संरचनात्मक परिवर्तन के साथ–साथ सांस्कृतिक परिवर्तन भी मूर्त रूप में आये। लोगों की, समाज की सोच सकारात्मक रूप से परिवर्तित हो। युवा सोच स्वयं के साथ–साथ नारी सम्मान को महत्ता दे। महिलाओं–बेटियों–बहनों के प्रति व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन एवं सम्मान लाना अतिआवश्यक हो गया है। सरकार के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सामाजिक आम जनता की है कि वे महिलाओं के प्रति बढ़ते घरेलु हिंसा को समाप्त कर समतामूलक एवं समाजजनक समाज का निर्माण करे।

मुख्य शब्द– घरेलु हिसा, समतामूलक समाज, संरचनात्मक परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन, असंगठित क्षैत्र, नारी सम्मान, सामाजिक विकास, पितृ सत्तात्मक समाज, सामाजिक विघटन।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

प्रस्तावना :–"केवल एक थप्पड़, लेकिन नहीं मार सकता" यह वाक्य किसी फिल्म का मात्र एक डायलॉग ही नहीं बल्कि विभिन्न समाजों की बदरंग हकीकत को भी उजागर करता है। घरेलू हिंसा दुनिया के लगभग हर समाज में मौजूद है। इस शब्द को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है जिनमें पत्नी, बच्चों या बुजुर्गों तथा ट्रांसजेंडरों के खिलाफ हिंसा के कुछ उदाहरण प्रत्यक्ष रूप से सामने हैं। पीड़ित के खिलाफ हमलावर द्वारा अपनाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में शारीरिक शोषण, भावनात्मक शोषण, मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार या वंचितता, आर्थिक शोषण, गाली–गलौज, ताना मारना आदि शामिल हैं। घरेलू हिंसा न केवल विकासशील या अल्प विकसित देशों की समस्या है बल्कि यह विकसित देशों में भी बहुत प्रचलित है। घरेलू हिंसा हमारे छद्म सभ्य समाज का प्रतिबिंब है।

सभ्य समाज में हिंसा का कोई स्थान नहीं है। लेकिन प्रत्येक वर्ष घरेलू हिंसा के जितने मामले सामने आते हैं, वे एक चिंतनीय स्थिति को रेखांकित करते हैं। हमारे देश में घरों के बंद दरवाजों के पीछे लोगों को प्रताड़ित किया जा रहा है। यह कार्य ग्रामीण क्षेत्रों, कस्बों, शहरों और महानगरों में भी हो रहा है। घरेलू हिंसा सभी सामाजिक वर्गों, लिंग, नस्ल और आयु समूहों को पार कर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के लिये एक विरासत बनती जा रही है। इस आलेख में घरेलू हिंसा के कारणों, समाज और बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव तथा समस्या समाधान के उपाय तलाशने का प्रयास किया जाएगा।

घरेलू हिंसा क्या है?

- घरेलू हिंसा अर्थात् कोई भी ऐसा कार्य जो किसी महिला एवं बच्चे (18 वर्ष से कम आयु के बालक एवं बालिका) के स्वास्थ्य, सुरक्षा, जीवन पर संकट, आर्थिक क्षति और ऐसी क्षति जो असहनीय हो तथा जिससे महिला व बच्चे को दुःख एवं अपमान सहन करना पड़े, इन सभी को घरेलू हिंसा के दायरे में शामिल किया जाता है।
- घरेलू हिंसा अधिनियम के अंतर्गत प्रताड़ति महिला किसी भी वयस्क व्यक्ति को अभियोजित कर सकती है अर्थात उसके विरुद्ध प्रकरण दर्ज करा सकती है।

भारत में घरेलू हिंसा के विभिन्न रूप :– भारत में घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 के अनुसार, घरेलू हिंसा के पीड़ित के रूप में महिलाओं के किसी भी रूप तथा 18 वर्ष से कम आयु के बालक एवं बालिका को संरक्षित किया गया है। भारत में घरेलू हिंसा के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं–

- महिलाओं के विरुद्ध घरेलू हिंसा– किसी महिला को शारीरिक पीड़ा देना जैसे– मारपीट करना, धकेलना, ठोकर मारना, किसी वस्तु से मारना या किसी अन्य तरीके से महिला को शारीरिक पीड़ा देना,महिला को अश्लील साहित्य या अश्लील तस्वीरों को देखने के लिये विवश करना, बलात्कार करना, दुर्व्यवहार करना, अपमानित करना, महिला की पारिवारिक और सामाजिक प्रतिष्ठा को आहत करना, किसी महिला या लड़की को अपमानित करना, उसके चरित्र पर दोषारोपण करना, उसकी शादी इच्छा के विरुद्ध करना, आत्महत्या की धमकी देना, मौखिक दुर्व्यवहार करना आदि। यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड रिपोर्ट के अनुसार, लगभग दो–तिहाई विवाहित भारतीय महिलाएँ घरेलू हिंसा की शिकार हैं और भारत में 15–49 आयुवर्ग की 70: विवाहित महिलाएँ पिटाई, बलात्कार या जबरन यौन शोषण का शिकार हैं।
- बच्चों के विरुद्ध घरेलू हिंसा– हमारे समाज में बच्चों और किशोरों को भी घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ता है। वास्तव में हिंसा का यह रूप महिलाओं के खिलाफ हिंसा के बाद रिपोर्ट किये गए मामलों की संख्या में दूसरा है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों तथा भारत में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के परिवारों में इसके स्वरूप में बहुत भिन्नता है। शहरी क्षेत्रों में यह अधिक निजी है और घरों की चार दीवारों के भीतर छिपा हुआ है।

- बुजुर्गों के विरुद्ध घरेलू हिंसा– घरेलू हिंसा के इस स्वरूप से तात्पर्य उस हिंसा से है जो घर के बूढ़े लोगों के साथ अपने बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा की जाती है। घरेलू हिंसा की यह श्रेणी भारत में अत्यधिक संवेदनशील होती जा रही है। इसमें बुजुर्गों के साथ मार–पीट करना, उनसे अत्यधिक घरेलू काम कराना, भोजन आदि न देना तथा उन्हें शेष पारिवारिक सदस्यों से अलग रखना शामिल है।

शोध क्षेत्र :– प्रस्तुत शोध पत्र का क्षेत्र भारत में महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा, प्रकृति, कारण एवं निवारण संबंधी मुद्दे पर केंद्रित है, जिसमें सैम्पलिंग हेतु मध्यप्रदेष के इंदौर जिले को चयनित किया गया है।

शोध उद्देष्य :–

1. प्रस्तुत शोध द्वारा भारत में महिलाओं के साथ होने वाली घरेलु हिंसा की वास्तविक स्थिति से अवगत होना
2. घरेलु हिंसा को प्रकृति का पहचानना।
3. घरेलु हिंसा के कारण तत्वों को समझना,
4. घरेलु हिंसा से महिलाओं को सुरक्षित करने के लिए उपायों का विष्लेषण करना।

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा, प्रकृति, कारण एवं निवारण का अध्ययन करने के लिए इंदौर जिले का चुनाव किया गया है। प्राथमिक शोध विषय पर आँकड़े एकत्र करने के लिए इंदौर जिले में 300 लोगों का न्यादर्ष लेकर उनसे प्रष्नावली से प्रष्न पूँछे गये। द्वितीयक आवष्यक समंकों को प्राप्त करने के लिए सरकारी प्रकाषनों, समाचार–पत्र तथा इन्टरनेट आदि का प्रयोग किया गया है। अवलोकन, साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया। एकत्रित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन, प्रतिषत आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके निर्वचन किया गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विष्लेषण :– प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन के आधार पर वर्गीकृत, सारणीयन कर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों का विष्लेषण किया गया है।

1. उत्तरदाता की आयु?

तालिका क्रमांक –1

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	18 वर्ष से कम	12	4
2	18 से 35 वर्ष	163	54.33
3	36 से 50 वर्ष	69	23
4	51 से 60 वर्ष	45	15
5	60 वर्ष से अधिक	11	3.66
	कुल	300	100

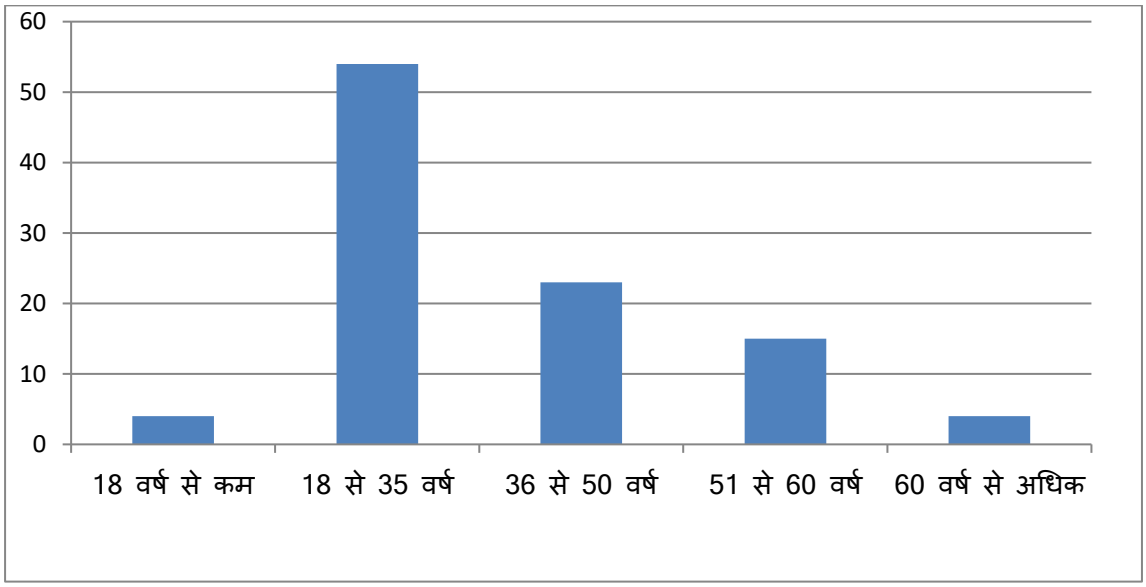

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 54.33 प्रतिषत 18 से 35 वर्ष की महिला , 23 प्रतिषत 36 से 50 वर्ष की महिला, 15 प्रतिषत 51 से 60 वर्ष की महिला, 4 प्रतिषत 18 वर्ष से कम की महिला, 3.66 प्रतिषत 60 वर्ष से अधिक महिला घरेलु हिंसा में अपना मत उत्तरदाता द्वारा दिया गया है।

2. क्या उत्तरदाता साक्षर है?

तालिका क्रमांक –2

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	277	92
2	नहीं	23	8
	कुल	300	100

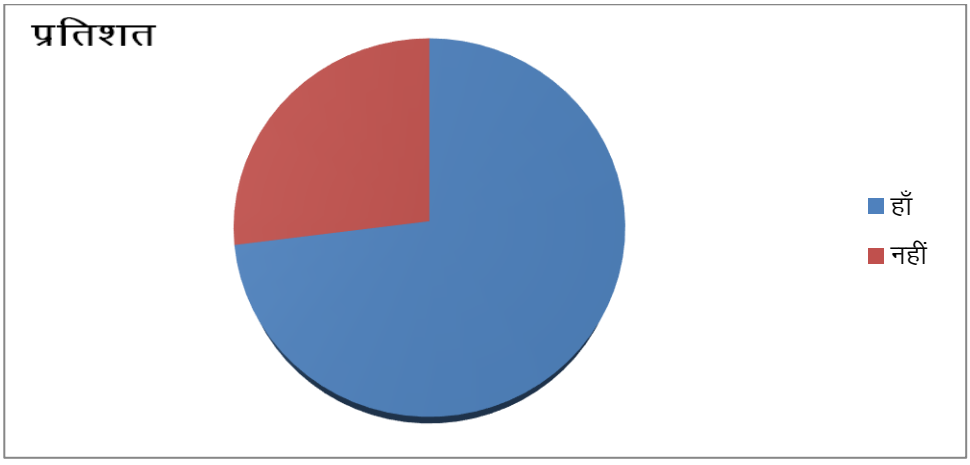

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 92 प्रतिषत उत्तरदाता है एवं 8 प्रतिषत उत्तरदाता घरेलु हिंसा में साक्षर है।

3. उत्तरदाता की शैक्षणिक योग्यता?

तालिका क्रमांक –3

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	प्राथमिक स्कूल	37	12.33
2	माध्यमिक स्कूल	42	14
3	उच्च्तर माध्यमिक स्कूल	75	25
4	स्नातक	82	27.33
5	स्नातकोत्तर	57	19
6	अन्य	7	2.33
	कुल	300	100

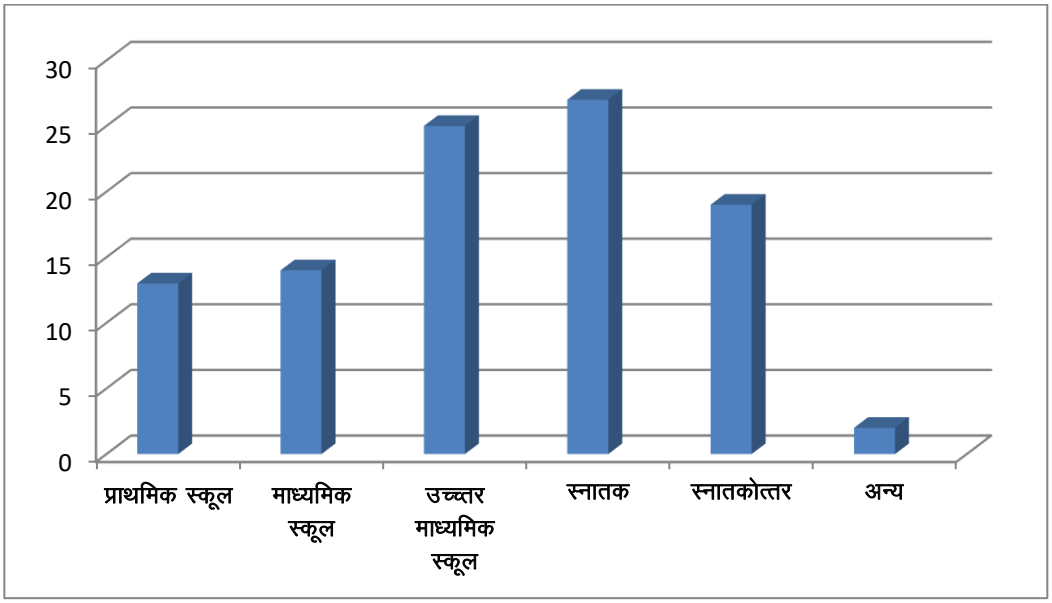

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 27.33 प्रतिषत स्नातक, 25 प्रतिषत उच्च्तर माध्यमिक स्कूल, 19 प्रतिषत स्नातकोत्तर, 14 प्रतिषत माध्यमिक स्कूल, 12 प्रतिषत प्राथमिक स्कूल, 2 प्रतिषत अन्य उत्तरदाता की शैक्षणिक योग्यता है।

4. उत्तरदाता के पास किस प्रकार का रोजगार है।,

तालिका क्रमांक –4

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	सरकारी नौकरी	50	16.66
2	गैर सरकारी/ निजी नौकरी	70	23.33
3	स्वनियोजित	33	11
4	गृहिणी	129	43
5	अन्य	18	6
	कुल	300	100

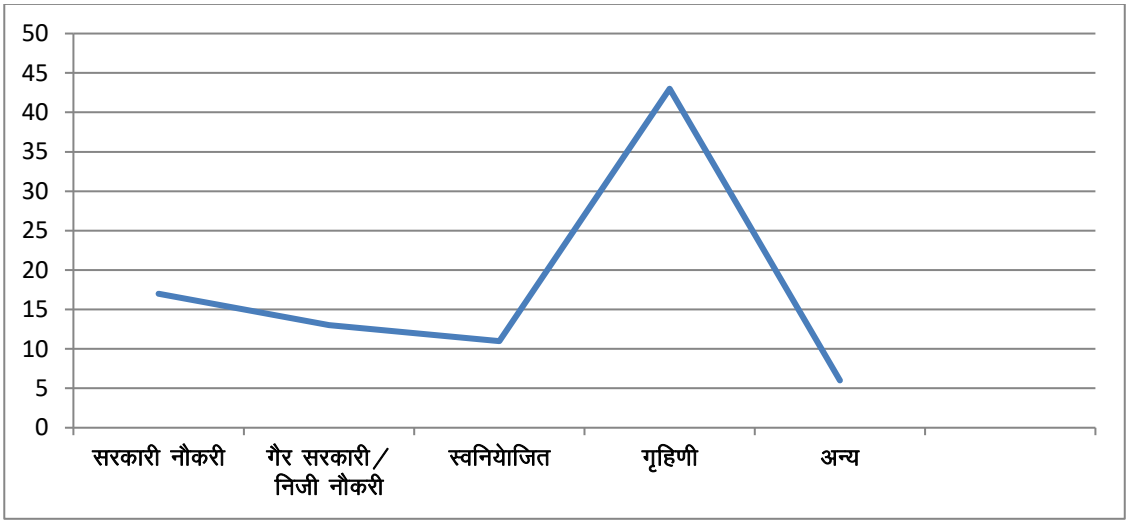

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 43 प्रतिषत गृहिणी, 23.33 प्रतिषत गैर सरकारी/ निजी नौकरी, 16.66 प्रतिषत सरकारी नौकरी, 11 प्रतिषत स्वनियोजित एवं 6 प्रतिषत अन्य उत्तरदाता के पास इस प्रकार का रोजगार है।

5. प्रति माह पारिवारिक आय

तालिका क्रमांक –5

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	10,000/- to 25,000/-	59	19.66
2	25,000/- to 50,000/-	90	30
3	50,000/- to 75,000/-	78	26
4	75,000/- to 1,00,000/-	52	17.33
5	Above or any	21	7
	कुल	300	100

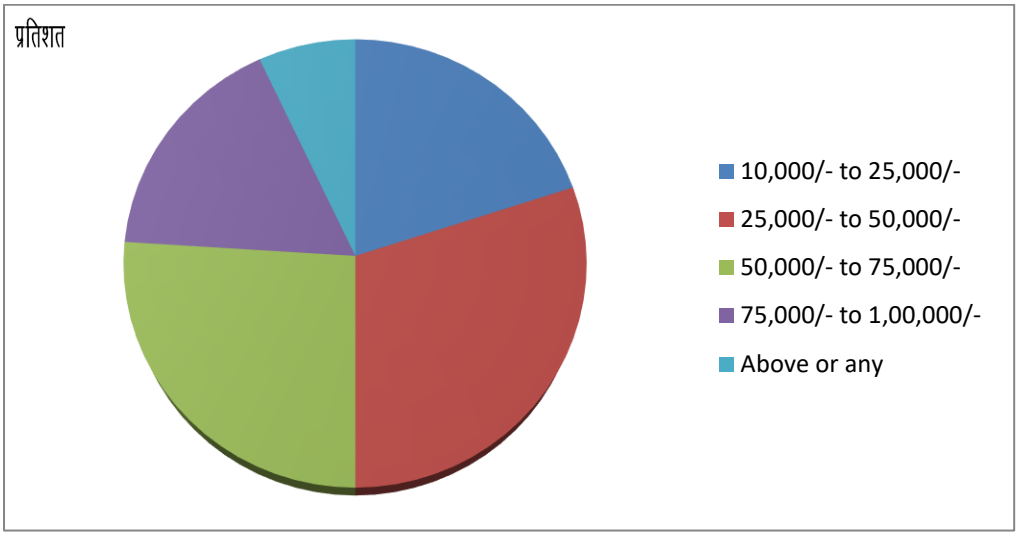

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 30 प्रतिषत 25,000/- to 50,000/-, 26 प्रतिषत 50,000/- to 75,000/- , 19.66 प्रतिषत 10,000/- to 25,000/-, 17.33 प्रतिषत 75,000/- to 1,00,000/- , 7 प्रतिषत अन्य उत्तरदाता की पारिवारिक आय है।

6. क्या उत्तरदाता ' घरेलु हिंसा ' शब्द से परिचित है?

तालिका क्रमांक –6

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	218	72.66
2	नहीं	82	27.33
	कुल	300	100

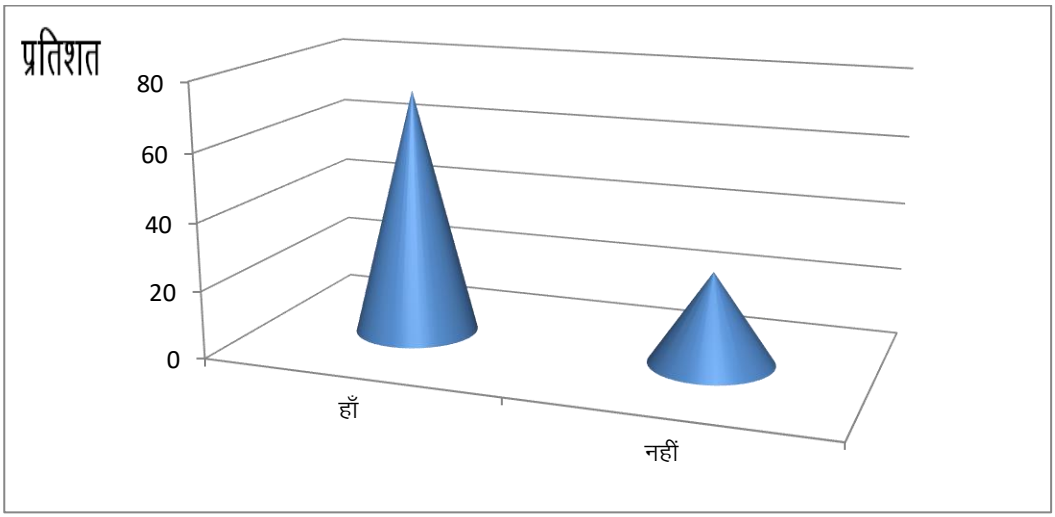

रोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 72.66 प्रतिषत उत्तरदाता 'घरेलु हिंसा' शब्द से परिचित है एवं 27.33 प्रतिषत उत्तरदाता 'घरेलु हिंसा शब्द से परिचित नहीं है।

7. क्या उत्तरदाता द्वारा परिवार में पति या अन्य सदस्यों द्वारा कारित की जाने वाली हिंसा को' घरेलु हिंसा' की श्रेणी रखा जाता है?

तालिका क्रमांक –7

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	162	54
2	नहीं	138	46
	कुल	300	100

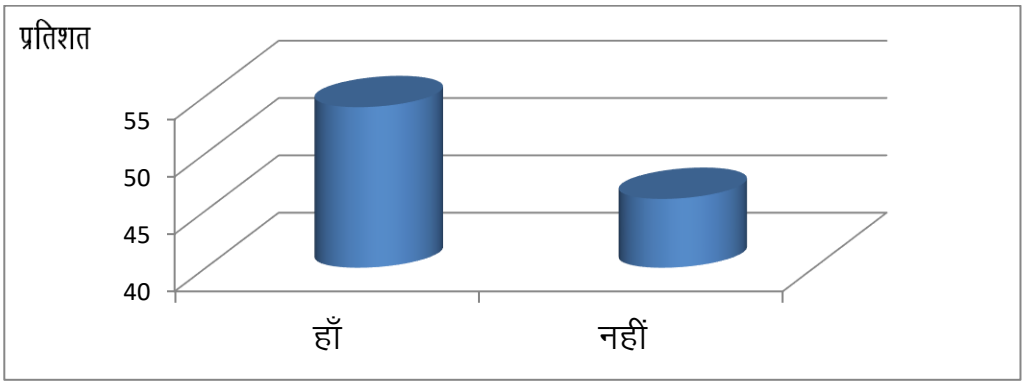

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 54 प्रतिषत उत्तरदाता द्वारा परिवार में पति या अन्य सदस्यों द्वारा कारित की जाने वाली हिंसा को' 'घरेलु हिंसा ' की श्रेणी रखा जाता है एवं 46 प्रतिषत उत्तरदाता ने नहीं में अपना मत प्रदान किया है।

8. क्या उत्तरदाता द्वारा पति या परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा किये जाने वाले शारीरिक हिंसा को ही 'घरेलु हिंसा ' की श्रेणी में रखा जाता है?

तालिका क्रमांक –8

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	208	69.33
2	नहीं	92	30.66
	कुल	300	100

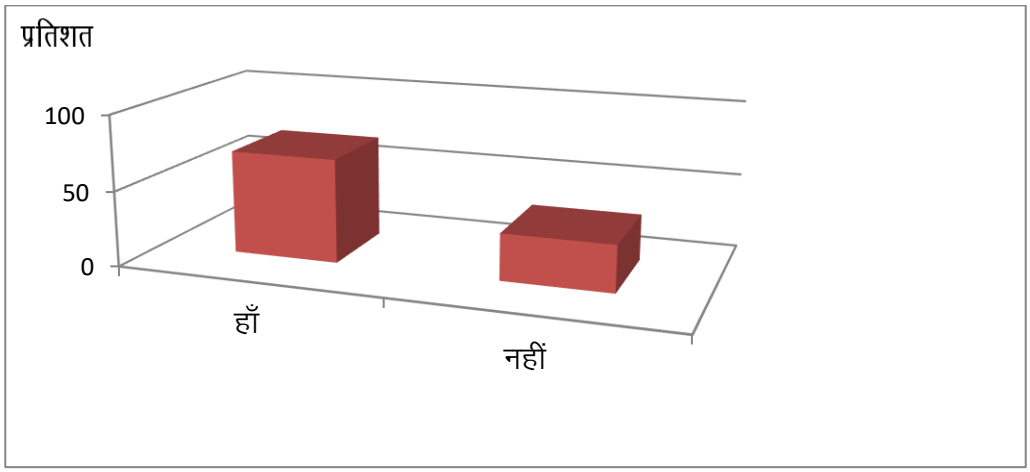

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 69.33 प्रतिषत उत्तरदाता द्वारा मत दिया गया कि पति या परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा किये जाने वाले शारीरिक हिंसा को ही 'घरेलु हिंसा ' की श्रेणी में रखा जाता है एवं 30.66 प्रतिषत उत्तरदाता द्वारा मत नहीं दिया गया

9. उत्तरदाता द्वारा निम्न में से किसे ' घरेलु हिंसा ' की श्रेणी में रखा जाता है?

तालिका क्रमांक –9

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	बल पूर्वक मारपीट	102	34
2	शिक्षा एवं नौकरी से रोकना	21	7
3	घर में न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति न करना	33	11
4	बच्चे जन्म न देने पर बांझ बोलना	54	18
5	पुत्री जन्म पर अपमान करना	36	12
6	रूप रंग पर अवांछित टिप्पणी करना	9	3
7	उपरोक्त सभी	47	15.66
	कुल	300	100

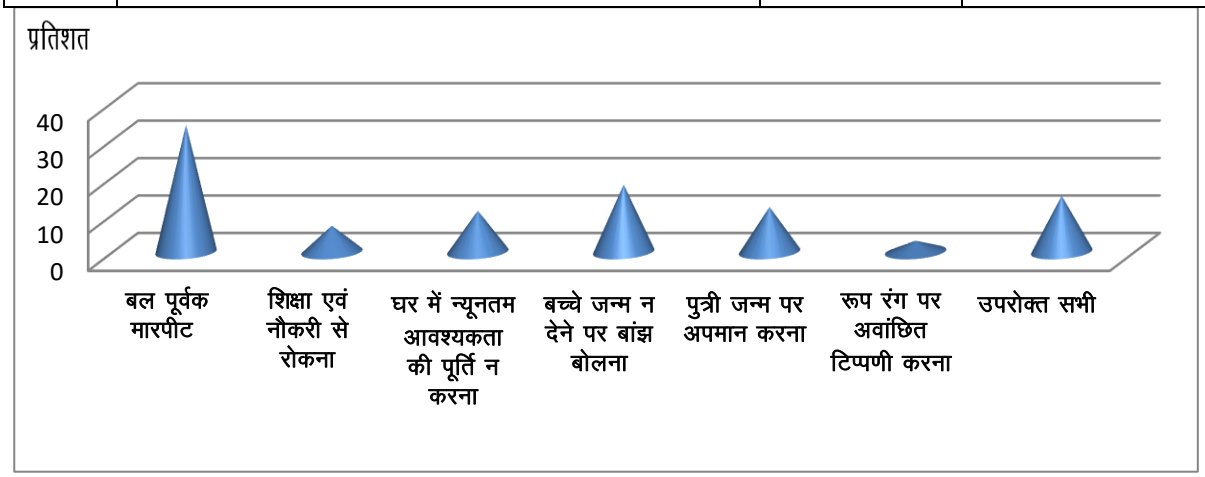

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा 34 प्रतिषत बल पूर्वक मारपीट, 18 प्रतिषत बच्चे जन्म न देने पर बांझ बोलना, 12 प्रतिषत पुत्री जन्म पर अपमान करना, 11 प्रतिषत घर में न्यूनतम आवश्यकता की पूर्ति न करना, 7 प्रतिषत शिक्षा एवं नौकरी से रोकना, 3 प्रतिषत रूप रंग पर अवांछित टिप्पणी करना, 15.66 प्रतिषत उपरोक्त सभी को 'घरेलु हिंसा ' की श्रेणी में रखा जाता है

10. उत्तरदाता कितने प्रकार के ' घरेलु हिंसा ' की श्रेणी से परिचित है:–

तालिका क्रमांक –10

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	घरेलू हिंसा	121	40.33
2	यौनिक हिंसा	99	33
3	भावनात्मक हिंसा	24	8
4	आर्थिक हिंसा	12	4
5	शारीरिक हिंसा	44	14.66
	कुल	300	100

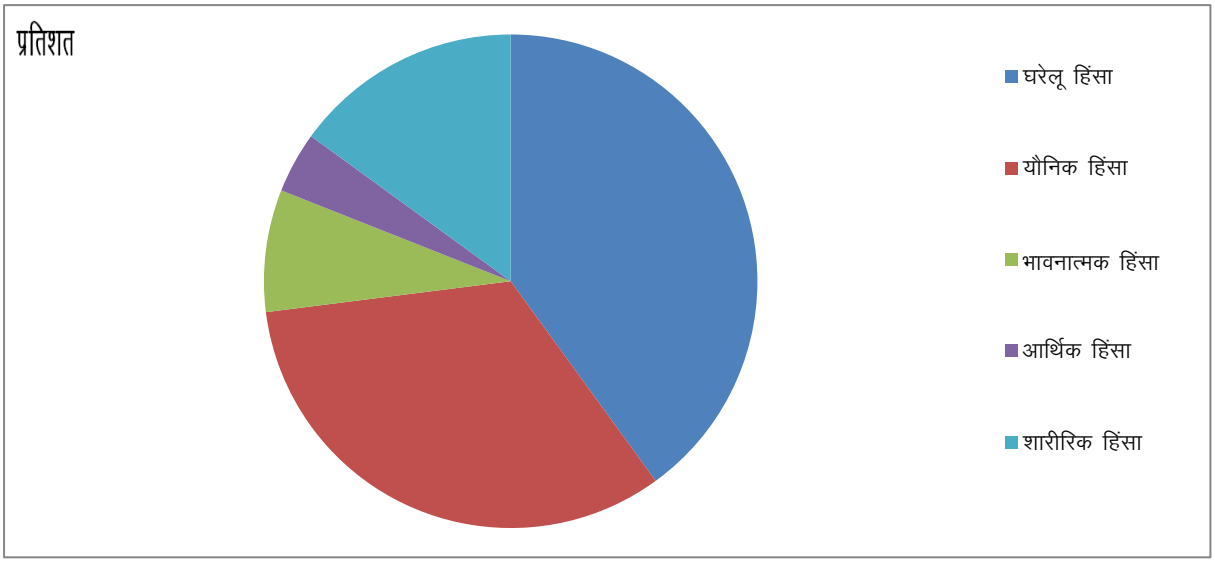

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा 40.33 प्रतिषत घरेलू हिंसा, 33 प्रतिषत यौनिक हिंसा, 14.66 प्रतिषत शारीरिक हिंसा, 8 प्रतिषत भावनात्मक हिंसा, 4 प्रतिषत आर्थिक हिंसा इन प्रकार के 'घरेलु हिंसा ' की श्रेणी से परिचित है

11. क्या उत्तरदाता के साथ घरेलु हिंसा हुई है?

तालिका क्रमांक –11

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	268	89.33

2	नहीं	32	10.66
	कुल	300	100

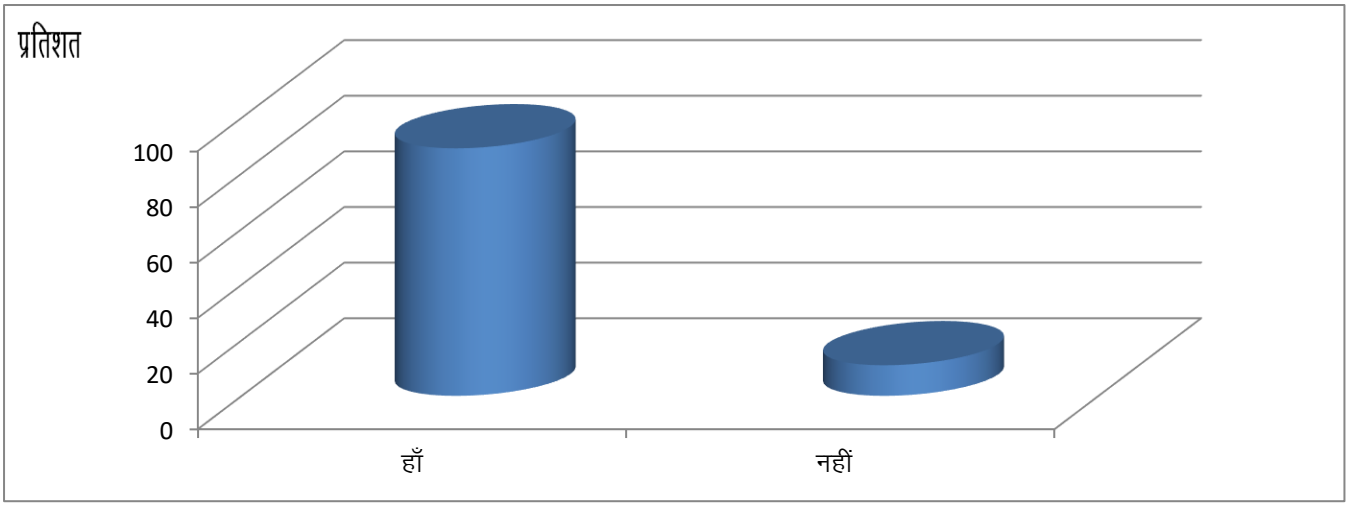

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा मत दिया गया 89.33 प्रतिषत के साथ घरेलु हिंसा हुई है एवं 10.66 प्रतिषत के साथ घरेलु हिंसा नहीं हुई है।

12. क्या उत्तरदाता के साथ निरंतर घरेलु हिंसा होतीहै?

तालिका क्रमांक –12

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	178	59..33
2	नहीं	122	40.66
	कुल	300	100

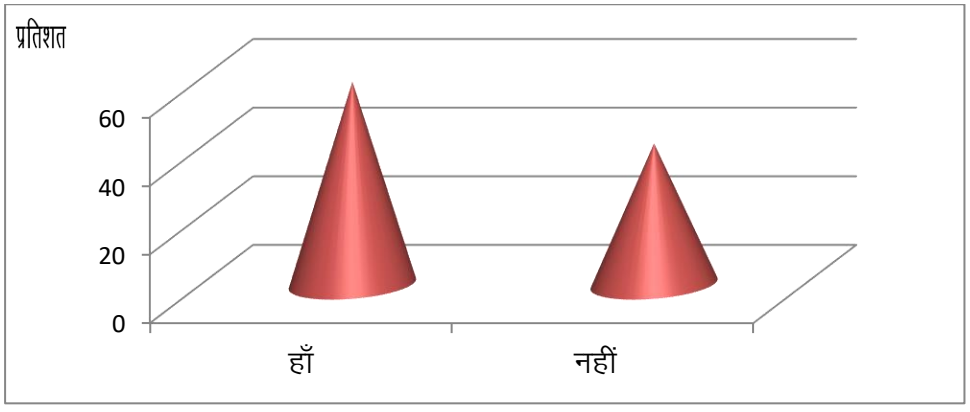

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा मत दिया गया 59.33 प्रतिषत उत्तरदाता के साथ निरंतर घरेलु हिंसा होती है एवं 40.66 प्रतिषत के साथ घरेलु हिंसा नहीं होती है।

13. यदि हॉ, तो कितने अंतराल में घरेलु हिंसा होती है?

तालिका क्रमांक –13

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	सप्ताह में दो बार	26	8.66
2	सप्ताह में तीन बार	30	10
3	सप्ताह में एक बार	32	10.66
4	माह में एक बार	40	13.33
5	कोई निश्चित नहीं है	172	57
	कुल		100

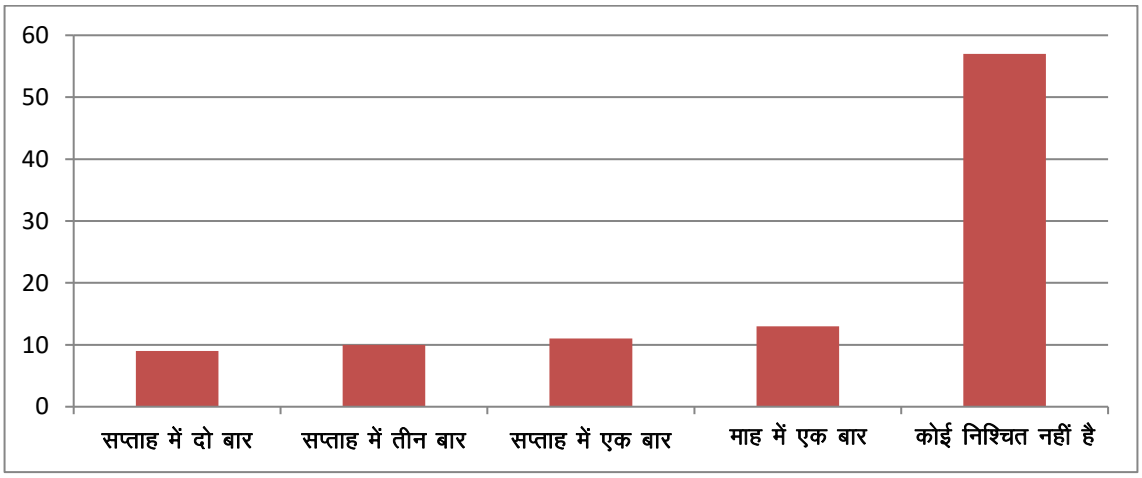

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा मत दिया गया 8.66 प्रतिषत सप्ताह में दो बार, 10 प्रतिषत सप्ताह में तीन बार, 10.66 प्रतिषत सप्ताह में एक बार, 13.33 प्रतिषत माह में एक बार, 57 प्रतिषत कोई निश्चित नहीं है के अंतराल में घरेलु हिंसा होती है

14. उत्तरदाता के साथ किस प्रकृति की घरेलु हिंसा हो रही है?

तालिका क्रमांक –14

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	शारीरिक	118	39.33
2	भावनात्मक	58	19.33
3	आर्थिक	88	29.33
4	यौनिक	18	6

5	उपरोक्त सभी	18	6
	कुल	300	100

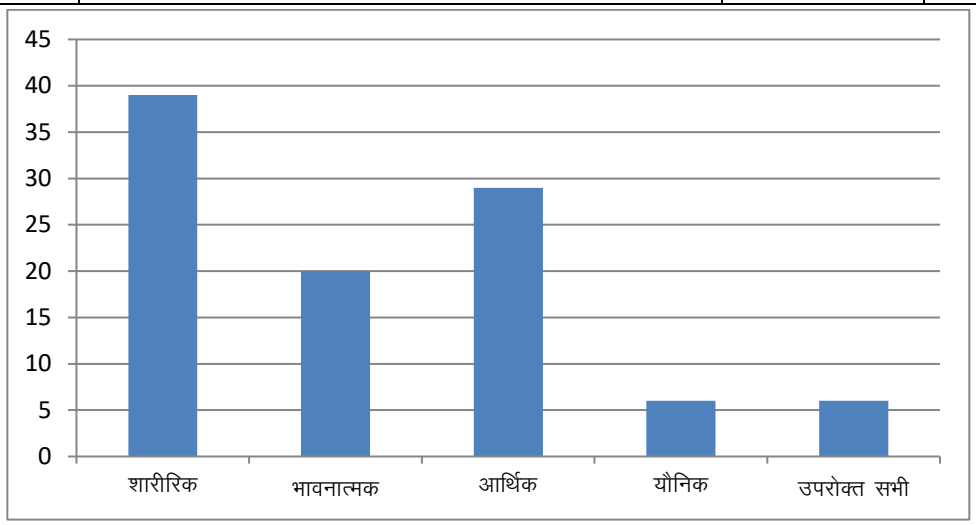

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में उत्तरदाता द्वारा मत दिया गया 8.39.33 प्रतिषत शारीरिक, 19.33 प्रतिषत भावनात्मक, 29.33 प्रतिषत आर्थिक, 6 प्रतिषत यौनिक, 6 प्रतिषत उपरोक्त सभी उत्तरदाता के साथ इस प्रकृति की घरेलु हिंसा हो रही है।

15. उत्तरदाता के अनुसार घरेलु हिंसा के कारण क्या है?

तालिका क्रमांक –15

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	गरीबी	42	14
2	अंधविश्वास	33	11
3	परम्परागत सोच	35	11.66
4	अशिक्षा	32	10.66
5	पितृ सत्तात्मक समाज	55	18.33
6	विवाहेन्तर संबंध	55	18.33
7	पारिवारिक दबाव	25	8.33
8	दहेज	12	4
9	उपरोक्त सभी	8	2.6
10	अन्य	3	1
	कुल	300	100

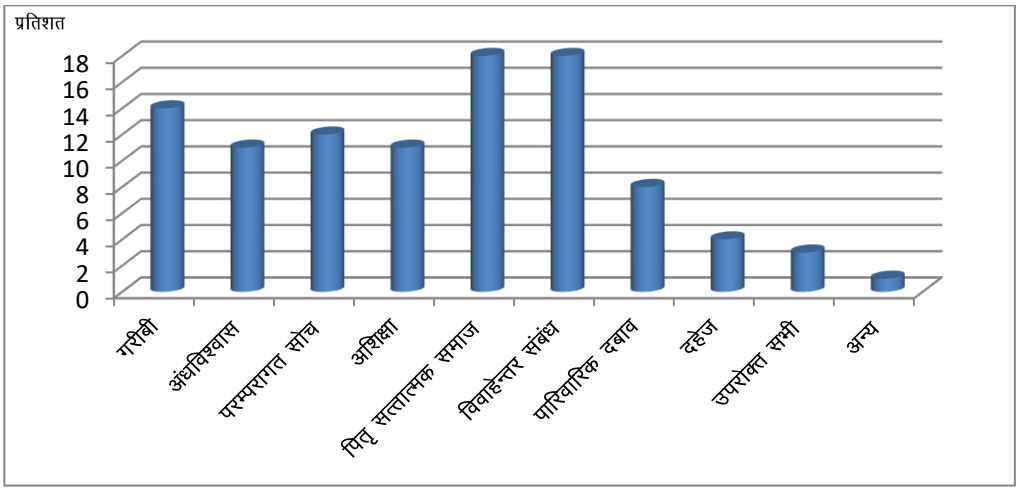

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 18.33 प्रतिषत पितृ सत्तात्मक समाज, 18.33 प्रतिषत विवाहेन्तर संबंध, 14 प्रतिषत गरिबी, 11.66 प्रतिषत परम्परागत सोच, 11 प्रतिषत अंधविष्वास, 10.66 प्रतिषत अशिक्षा, 8.33 प्रतिषत पारिवारिक दबाव, 4 प्रतिषत दहेज, 2.6 प्रतिषत उपरोक्त सभी, 1 प्रतिषत अन्य उत्तरदाता के अनुसार घरेलु हिंसा के कारण है।

16. क्या उत्तरदाता को महसूस होता है कि मोबाइल और सोशल मीडिया एक प्रमुख कारण है घरेलु हिंसा का?

तालिका क्रमांक –16

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	125	41.67
2	नहीं	175	58.33
	कुल	300	100

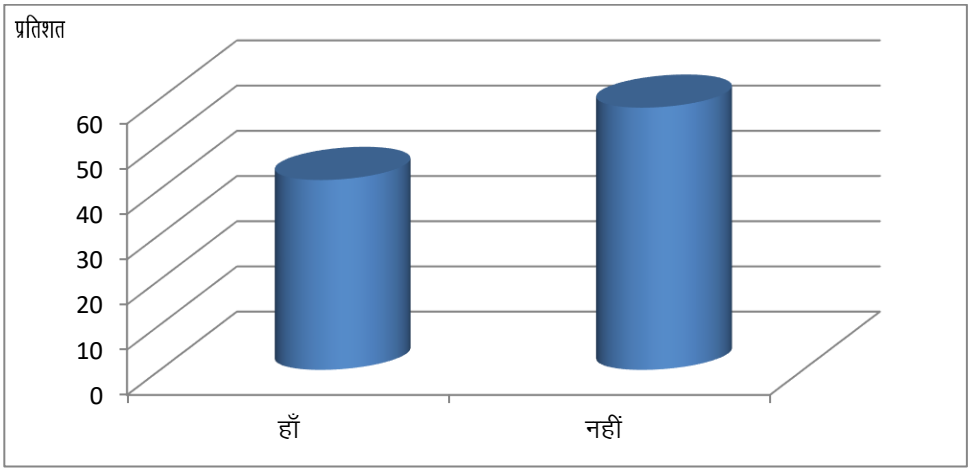

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 58.33 प्रतिषत उत्तरदाता को महसूस होता है कि घरेलु हिंसा का मोबाइल और सोशल मीडिया एक प्रमुख कारण है एवं 41.67 प्रतिषत उत्तरदाता को महसूस नहीं होता हैं।

17. क्या उत्तरदाता को महसूस होता है कि नशा एक महत्वपूर्ण कारण है घरेलु हिंसा का?

तालिका क्रमांक – 17

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	222	74
2	नहीं	78	26
	कुल	300	100

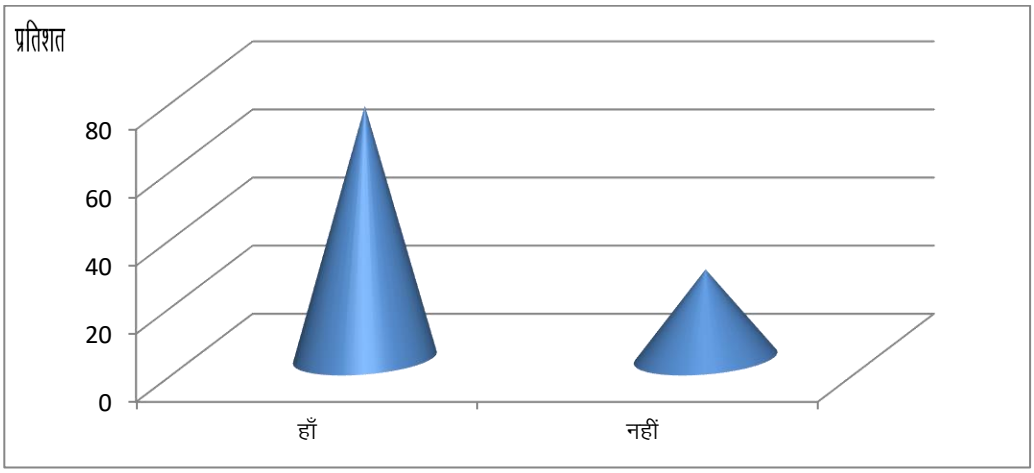

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 74 प्रतिषत उत्तरदाता को महसूस होता है कि घरेलु हिंसा का नशा एक महत्वपूर्ण कारण है एवं 26 प्रतिषत उत्तरदाता को महसूस नहीं होता है कि घरेलु हिंसा का नषा महत्वपूर्ण कारण है।

18. क्या उत्तरदाता 'घरेलु हिंसा से महिलाओं को संरक्षण अधिनियम 2005 की जानकारी है?

तालिका क्रमांक – 18

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	132	44
2	नहीं	168	56
	कुल	300	100

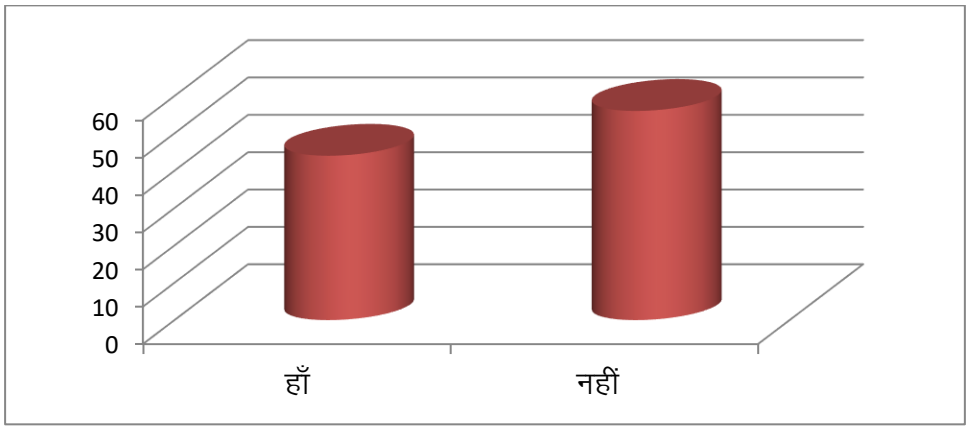

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 56 प्रतिषत उत्तरदाता को घरेलु हिंसा से महिलाओं को संरक्षण अधिनिय 2005 की जानकारी है एवं 44 प्रतिष उत्तरदाता को जानकारी नहीं है।

19. यदि हॉ, क्या उत्तरदाता ने इसका उपयोग किया?

तालिका क्रमांक – 19

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	90	30
2	नहीं	210	70
	कुल	300	100

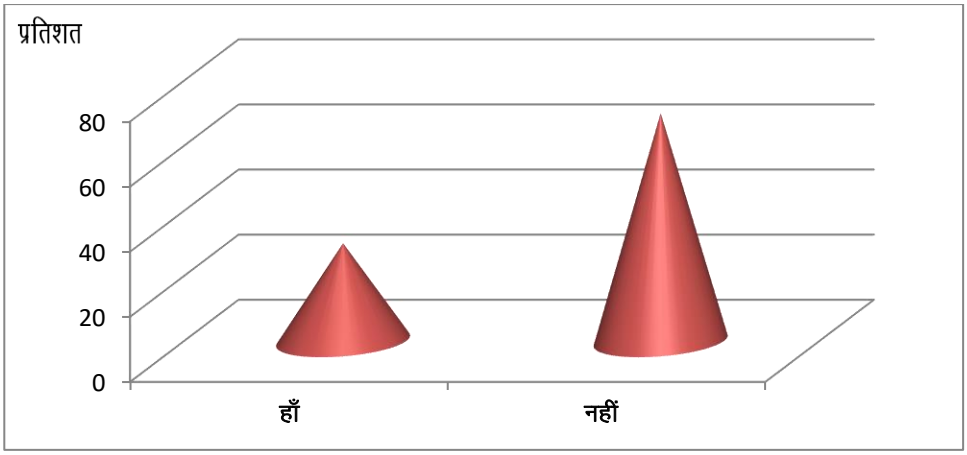

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 70 प्रतिषत उत्तरदाता ने इसका उपयोग नहीं किया एवं 30 प्रतिषत उत्तरदाता ने इसका उपयोग किया है।

20. यदि हॉ, उत्तरदाता को इस अधिनियम की सहायता से क्या राहत मिली?

तालिका क्रमांक – 20

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत

1	निवास	25	8.33
2	पारिवारिक पुर्नवास	60	20
3	भरणपोषण	60	20
4	प्रतिकर राशि	40	13.33
5	कुछ नहीं	115	38.33
	कुल	300	100

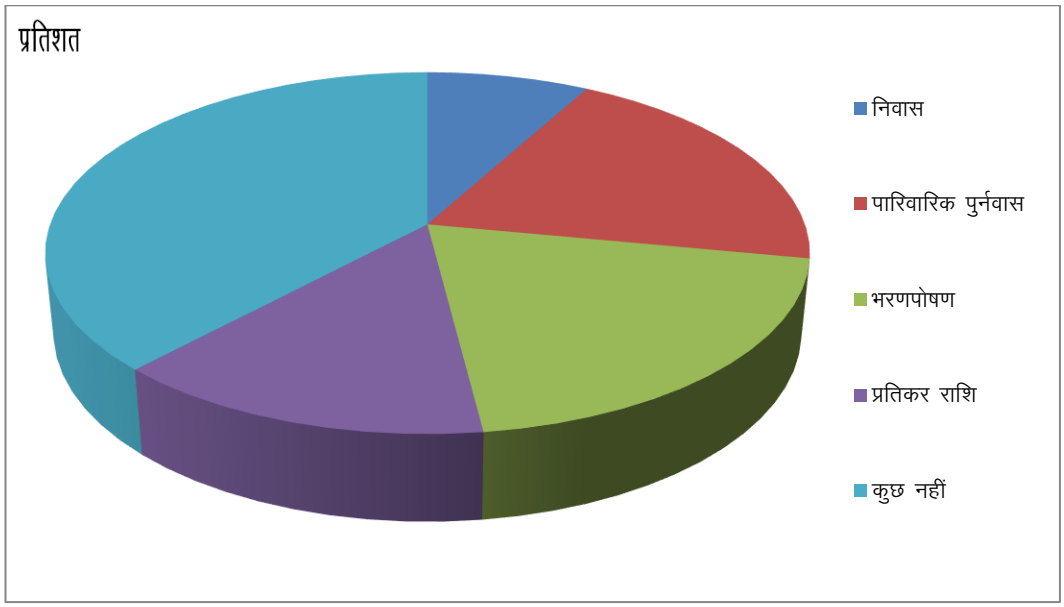

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 38.33 प्रतिषत पारिवारिक पुर्नवास, 20 प्रतिषत पारिवारिक पुर्नवास, 20 प्रति भरणपोषण, 13.33 प्रतिषत प्रतिकर राषि , 8.33 प्रतिषत निवास एवं 38.33 प्रतिषत महिलाओं को इस अधिनियम की सहायता से राहत मिली है।

21. क्या उत्तरदाता को घरेलु हिंसा की स्थिति में सहायता प्राप्त करने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र और महिला बाल विकास विभाग की जानकारी है

तालिका क्रमांक – 21

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	102	34
2	नहीं	198	66
	कुल	300	100

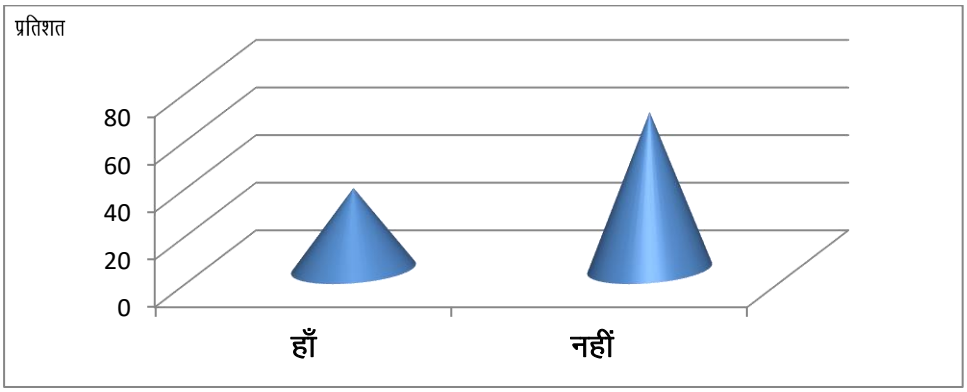

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 34 प्रतिषत महिलाओं को घरेलु हिंसा की स्थिति में सहायता प्राप्त करने के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र और महिला बाल विकास विभाग की जानकारी है एवं 66 प्रतिषत महिलाओं को जानकारी नहीं है।

23. क्या उत्तरदाता को घरेलु हिंसा की स्थिति में पुलिस थाने में स्थापित ऊर्जा महिला डेस्क की जानकारी है?

तालिका क्रमांक – 23

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	45	15
2	नहीं	255	85
	कुल	300	100

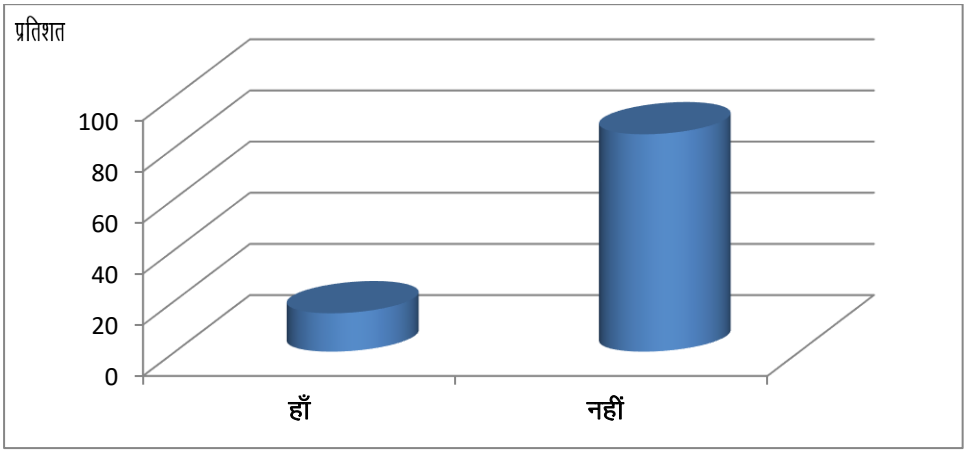

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 15 प्रतिषत महिलाओं को घरेलु हिंसा की स्थिति में पुलिस थाने में स्थापित ऊर्जा महिला डेस्क की जानकारी है एवं 85 प्रतिषत घरेलु हिंसा की स्थिति में पुलिस थाने में स्थापित ऊर्जा महिला डेस्क की जानकारी है।

24. क्या उत्तरदाता महिला हेल्प लाइन नंबर 181 के बारे में जागरूक है ?

तालिका क्रमांक – 24

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	88	22.33
2	नहीं	212	70.66
	कुल	300	100

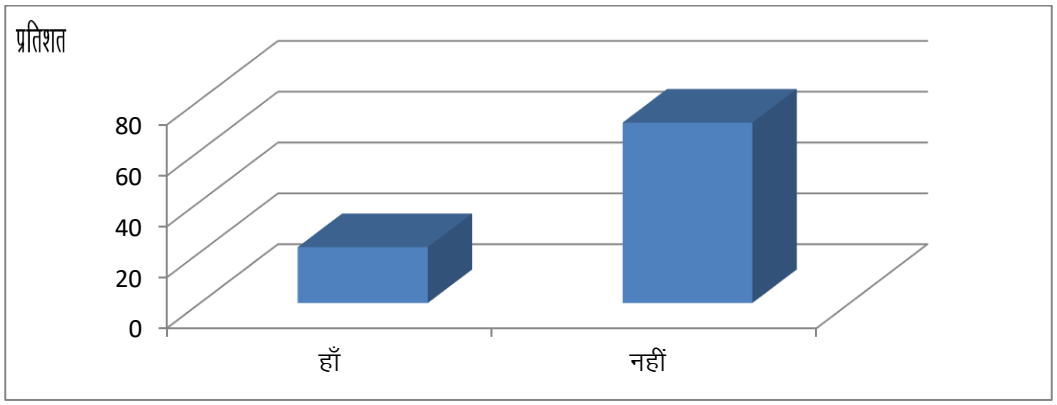

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 70.66 प्रतिषत महिलाएं महिला हेल्प लाइन नंबर 181 के बारे में जागरूक नहीं एवं 22.33 प्रतिषत महिलाएं महिला हेल्प लाइन नंबर 181 के बारे में जागरूक है।

25. क्या उत्तरदाता महिला सहायता ऐप 112 से परिचित है?

तालिका क्रमांक – 25

क्रमांक	तथ्य	आवृति	प्रतिशत
1	हाँ	45	15
2	नहीं	255	85
	कुल	300	100

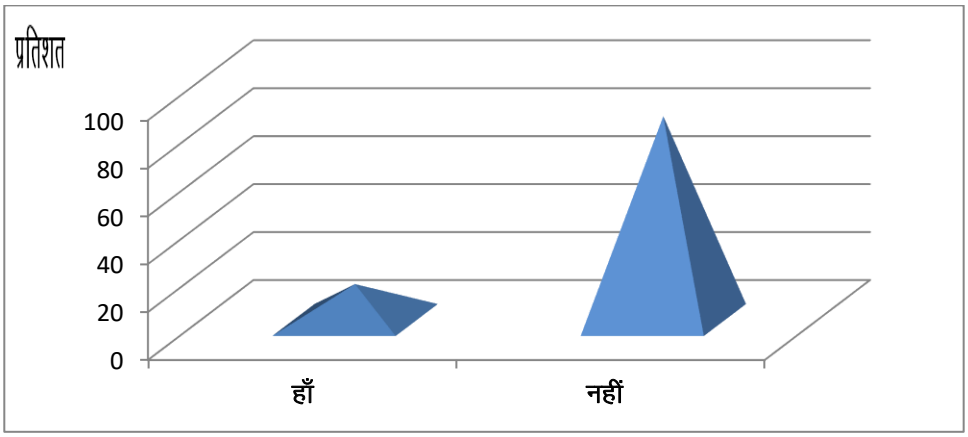

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि तथ्यों में 85 प्रतिषत महिलाएं महिला सहायता ऐप 112 से परिचित नहीं है एवं 8 प्रतिषत महिलाएं महिला सहायता ऐप 112 से परिचित है।

घरेलू हिंसा के कारणः–

- महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा का मुख्य कारण मूर्खतापूर्ण मानसिकता है कि महिलाएँ पुरुषों की तुलना में शारीरिक और भावनात्मक रूप से कमजोर होती हैं।
- प्राप्त दहेज से असंतुष्टि, साथी के साथ बहस करना, उसके साथ यौन संबंध बनाने से इनकार करना, बच्चों की उपेक्षा करना, साथी को बताए बिना घर से बाहर जाना, स्वादिष्ट खाना न बनाना शामिल है।
- विवाहेत्तर संबंधों में लिप्त होना, ससुराल वालों की देखभाल न करना, कुछ मामलों में महिलाओं में बाँझपन भी परिवार के सदस्यों द्वारा उन पर हमले का कारण बनता है।
- बच्चों के साथ घरेलू हिंसा के कारणों में माता–पिता की सलाह और आदेशों की अवहेलना, पढ़ाई में खराब प्रदर्शन या पड़ोस के अन्य बच्चों के साथ बराबरी पर नहीं होना, माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ बहस करना आदि हो सकते हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के साथ घरेलू हिंसा के कारणों में बाल श्रम, शारीरिक शोषण या पारिवारिक परंपराओं का पालन न करने के लिये उत्पीड़न, उन्हें घर पर रहने के लिये मजबूर करना और उन्हें स्कूल जाने की अनुमति न देना आदि हो सकते हैं।
- गरीब परिवारों में पैसे पाने के लिये माता–पिता द्वारा मंदबुद्धि बच्चों के शरीर के अंगों को बेचने की खबरें मिली हैं। यह घटना बच्चों के खिलाफ क्रूरता और हिंसा की उच्चता को दर्शाता है।
- वृद्ध लोगों के खिलाफ घरेलू हिंसा के मुख्य कारणों में बूढ़े माता–पिता के खर्चों को झेलने में बच्चे झिझकते हैं। वे अपने माता–पिता को भावनात्मक रूप से पीड़ित करते हैं और उनसे छुटकारा पाने के लिये उनकी पिटाई करते हैं।

- विभिन्न अवसरों पर परिवार के सदस्यों की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने के लिये उन्हें पीटा जाता है। बहुत ही सामान्य कारणों में से एक संपत्ति हथियाने के लिये दी गई यातना भी शामिल है।

घरेलू हिंसा के प्रभावः–

- यदि किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में घरेलू हिंसा का सामना किया है तो उसके लिये इस डर से बाहर आ पाना अत्यधिक कठिन होता है। अनवरत रूप से घरेलू हिंसा का शिकार होने के बाद व्यक्ति की सोच में नकारात्मकता हावी हो जाती है। उस व्यक्ति को स्थिर जीवनशैली की मुख्यधारा में लौटने में कई वर्ष लग जाते हैं।
- घरेलू हिंसा का सबसे बुरा पहलू यह है कि इससे पीड़ित व्यक्ति मानसिक आघात से वापस नहीं आ पाता है। ऐसे मामलों में अक्सर देखा गया है कि लोग या तो अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं या फिर अवसाद का शिकार हो जाते हैं।
- घरेलू हिंसा की यह सबसे खतरनाक और दुखद स्थिति है कि जिन लोगों पर हम इतना भरोसा करते हैं और जिनके साथ रहते हैं जब वही हमें इस तरह का दुख देते हैं तो व्यक्ति का रिश्तों पर से विश्वास उठ जाता है और वह स्वयं को अकेला कर लेता है। कई बार इस स्थिति में लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं।
- घरेलू हिंसा का सबसे व्यापक प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। सीटी स्कैन से पता चलता है कि जिन बच्चों ने घरेलू हिंसा में अपना जीवन बिताया है उनके मस्तिष्क का कॉर्पस कॉलोसम और हिप्पोकैम्पस नामक भाग सिकुड़ जाता है, जिससे उनकी सीखने, संज्ञानात्मक क्षमता और भावनात्मक विनियमन की शक्ति प्रभावित हो जाती है।
- बालक अपने पिता से गुस्सैल व आक्रामक व्यवहार सीखते हैं। इस का असर ऐसे बच्चों का अन्य कमजोर बच्चों व जानवरों के साथ हिंसा करते हुए देखा जा सकता है।
- बालिकाएँ नकारात्मक व्यवहार सीखती हैं और वे प्रायः दब्बू, चुप–चुप रहने वाली या परिस्थितियों से दूर भागने वाली बन जाती हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि हिंसा की शिकार हुई महिलाएँ समाजिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों में कम भाग लेती हैं।

समाधान के उपाय :–

- शोध के अनुसार, यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि घरेलू हिंसा के सभी पीड़ित आक्रामक नहीं होते हैं। हम उन्हें एक बेहतर वातावरण उपलब्ध करा कर घरेलू हिंसा के मानसिक विकार से बाहर निकल सकते हैं।
- भारत अभी तक हमलावरों की मानसिकता का अध्ययन करने, समझने और उसमें बदलाव लाने का प्रयास करने के मामले में पिछड़ रहा है। हम अभी तक विशेषज्ञों द्वारा प्रचारित इस दृष्टिकोण की मोटे तौर पर अनदेखी कर रहे हैं कि "महिलाओं और बच्चों के साथ होने वाली हिंसा और भेदभाव को सही मायनों में समाप्त करने के लिये हमें पुरुषों को न केवल समस्या का एक कारण बल्कि उन्हें इस मसले के समाधान के अविभाज्य अंग के तौर पर देखना होगा।"

- सुधार लाने के लिये सबसे पहले कदम के तौर पर यह आवश्यक होगा कि "पुरुषों को महिलाओं के खिलाफ रखने" के स्थान पर पुरुषों को इस समाधान का भाग बनाया जाए। मर्दानगी की भावना को स्वस्थ मायनों में बढ़ावा देने और पुराने घिसे–पिटे ढर्रे से छुटकारा पाना अनिवार्य होगा।
- सरकार ने महिलाओं और बच्चों को घरेलू हिंसा से संरक्षण देने के लिये घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 को संसद से पारित कराया है। इस कानून में निहित सभी प्रावधानों का पूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये यह समझना जरूरी है कि पीड़ित कौन है। यदि आप एक महिला हैं और रिश्तेदारों में कोई व्यक्ति आपके प्रति दुर्व्यवहार करता है तो आप इस अधिनियम के तहत पीड़ित है और सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं, साथ ही पारिवारिक रिष्तेदारों को भी अधिनियम की बारिकियाँ पता होनी चाहिए, कि यदि पीड़िता के साथ अन्याय हो रहा है तो अधिनियम में कठोर दण्ड के प्रावधान है।
- मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम, 2017 द्वारा भारत मानसिक स्वास्थ्य के प्रति गंभीर हो गया है, लेकिन इसे और अधिक प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है। नीति निर्माताओं को घरेलू हिंसा से उबरने वाले परिवारों को पेशेवर मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उपलब्ध कराने के लिये तंत्र विकसित करने की जरूरत है।
- सरकार ने वन–स्टॉप सेंटर' जैसी योजनाएँ प्रारंभ की हैं, जिनका उद्देश्य हिंसा की शिकार महिलाओं की सहायता के लिये चिकित्सीय, कानूनी और मनोवैज्ञानिक सेवाओं की एकीकृत रेंज तक उनकी पहुँच को सुगम व सुनिश्चित करता है।
- महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के बारे में जागरूकता फैलाने के लिये वोग इंडिया ने 'लड़के रुलाते नहीं' अभियान चलाया, जबकि वैश्विक मानवाधिकार संगठन 'ब्रेकथ्रू' द्वारा घरेलू हिंसा के खिलाफ 'बेल बजाओ' अभियान चलाया गया। ये दोनों ही अभियान महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा से निपटने के लिये निजी स्तर पर किये गए शानदार प्रयास थे।
- भारत सरकार के द्वारा संचालित महिला हेल्प लाइन '181' एवं '112' गूगल ऐप भी बहुत ही अच्छे उपायों के रूप में उभरे है, बस आवष्यकता है तो इसे और ज्यादा जनता तक पहुँचाना और उसका उपयोग कैसे किया जाए इस बारे में जागरूकता बढाना
- मध्यप्रदेष शासन द्वारा घरेलु हिंसा पीड़ित महिलाओं को सहायता प्रदान करने के लिए जनवरी 2022 में ''घरेलु हिंसा की पीड़िता के लिए सहायता योजना'' प्रारंभ की है जो अधिनियम के अंतर्गत पीड़िता के शारीरिक क्षतिपूर्ति के रूप में सहायता राषि रूपये 2 लाख एवं रूपये 4 लाख तक दिए जाने का प्रावधान करती है। इसका प्रचार प्रसार अति आवष्यक है।
- परिवार, सामाजीकरण की प्रथम सीढ़ी है। यदि परिवार में बच्चों को बचपन से ही समानता एवं महिलाओं के प्रति सम्मान की षिक्षा दी जाए तो घरेलु हिंसा की समस्या को कम किया जा सकता है।
- पितृसत्तात्मक समाज की पुरूषों में प्रभुता की सोच को समाप्त कर समानता एवं सम्मान की सोच यदि, प्रत्येक परिवार में आ जाये तो घरेलु हिंसा समाप्त हो सकती है।

निष्कर्ष :–यदि हम भारत के प्रत्येक परिवार को घरेलु हिंसा मुक्त परिवार बनाना चाहते हैं, भारत में परिवार जैसी महत्वपूर्ण संस्था को सुरक्षित रखते हुए भारतीय समाज व संस्कृति को एक विषेष स्वरूप देना चाहते हैं, तो राष्ट्रीय स्तर पर इसे एक सामाजिक अभियान का रूप देना आवष्यक है।

शोध में यह तथ्य सामने आया है कि घरेलु हिंसा से पीड़िता की उम्र, षिक्षा, रोजगार, पारिवारिक आय आदि घटक घरेलु हिंसा की दर को प्रभावित करने वाले कारक हैं, किंतु प्रत्येक स्तर पर कोई भी परिवार घरेलु हिंसा से अछूता नहीं है। परिवार में 'घरेलु हिंसा' की आवृत्ति एवं प्रकृति अनिष्चित है। कुछ परिवारों में सभी प्रकार की घरेलु हिंसा होती है, कुछ में शारीरिक हिंसा की आवृत्ति ज्यादा है, ता षिक्षित एवं उच्च वर्गीय परिवारों में मानसिक हिंसा ज्यादा दिखायी देती है। स्वरोजगार में संलिप्त महिलायें एवं उच्च वेतन प्राप्तकर्ता महिलाएँ भी घरेलु हिंसा का षिकार होती हैं। समाज में व्याप्त व्यभिचार वर्तमान में घरेलु हिंसा का प्रमुख कारण उभर कर आ रहा है। कोरोना काल में उत्पन्न पारिवारिक समस्याएँ भी घरेलु हिंसा का एक कारण के रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है।

निष्कर्षतः एक समाजषास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार की संरचना, पारिवारिक सामाजीकरण की पद्धति, भारतीय समाज में विवाह–परिवार जैसी संस्था की महत्ता, महिला सम्मान एवं समानता का दृष्टिकोण, विवाह पूर्व वर–वधु एवं दोनों परिवारों के सदस्यों के मध्य परामर्ष सत्र का आयोजन, दोनों परिवारों की संस्कृति एवं रीति–रिवाजों का आदान–प्रदान करके परिवार में होने वाली घरेलु हिंसा पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है। 'परिवार' समाज की महत्वपूर्ण इकाई है। महिला इस इकाई की धुरी होती है। यदि महिलाओं के साथ घरेलु हिंसा होती है तो पूरा परिवार बिखर जाता है। बच्चे जो समाज का भविष्य हैं, उसका व्यक्तित्व प्रभावित होता है। अतः महिलाओं के प्रति घरेलु हिंसा को रोककर ही हम एक श्रेष्ठ परिवार, श्रेष्ठ समाज एवं श्रेष्ठ राष्ट्र का निमार्ण कर सकते है।

संदर्भ सूची

1. पांडेय एस.एस. ''समाजषास्त्र'' टाटा मेग्राहिल एजुकेषन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली (2010)
2. जी.एल.शर्मा, ''सामाजिक मुद्दे'' रावत पब्लिकेषन, नई दिल्ली (2020)
3. राम आहूजा, ''सामाजिक समस्याएँ'' रावत पब्लिकेषन, नई दिल्ली (2022)
4. मोतीलाल गुप्ता, ''भारतीय समाज'' राजस्थान हिंदी ग्रंथ एकेडमी, जयपुर (2020)
5. कुमार डॉ नीतू, ''महिला सषक्तिकरण और सुरक्षा विषयक चुनौतियाँ '' प्रषांत पब्लिकेषन हाउस, दिल्ली (2018)
6. विजन आई.ए.एस., ''सामाजिक मुद्दे'' अप्रैल 2022–दिसंबर 2022
7. दैनिक भास्कर, नई दुनिया, पत्रिका, टाइम्स ऑप इंडिया समाचार पत्र
8. एस.सी.आर.बी के आकड़े
9. सखी डैषबोर्ड के आँकड़े
10. भारत सरकार की घरेलु हिंसा रिपोर्ट

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

To Study the Ecology and Effect of Pollution on Kanh River Indore

Shatakshi Singh
8th A, Kendriya Vidyalaya No. 1, Indore, Madhya Pradesh, India

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 66-81

Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

ABSTRACT : This study is a qualitative research done with the aim of understanding the ecosystem. Also the of this ecological research is to study the effect of pollution and improved status of the river Kanh. During study our focus is on reoccurrence of ecological imbalance on the present status of Kanh river. This study is carried out with the help of survey and records.

Geographical sample area of Indore city is chosen for this study and survey is done over a population sample of 100 people using a questionnaire which served as primary data and the analysis records obtained from IMC served as secondary data. The survey has been done to know the previous state of Kanh, why and how pollution level of Kanh increased and then analysis done using secondary data for a period before revival project 2018 and after 2021 on the basis of data by IMC.

Analysing the data it is evident that the increasing population and industrial growth has indirectly affected the ecosystem globally and the Kanh river locally. It is also evident from the analysis that the ecological health of river improved after revival and reform tactics. But reoccurrence of ecological imbalance is a matter of concern as evident from present status of river and views of sample population. Smart city project and the citizen's responsible behavior is the new hope as a permanent solution.

Keywords – Ecosystem, Health, Pollution, IMC, Geographical, Primary data, Secondary data, Smartcity.

INTRODUCTION

Water resources are the life of agricultural, industrial, household, urban development and recreational activities. Globalisation, increase in population, human demands to fulfil their needs are straining, resource tat for our planets limited natural resources including our river. Rivers provide crucial plants and animals including bacteria, fungi, algae, insects, snails, fish, reptiles, birds, mammals and amphibians.

Kanh river, Indore (the cleanest city of India) has been selected as ecological research area where is Indore is industrial capital of state of M. P. This river has undergone many continues changes which are clearly visible. A significant biodiversity can be observed here because of variety of habitat and varying microclimate through the year. Geographical background of research area:Kanh river

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

The Kanh river, a tributary of Kshipra rises. from a hill near village Umaria about seven miles south of Indore. It later on flows from KrishnapuraChhatri and also through the town. of Sanwer and joins river Kshipra at Triveni Sangam near Ujjain after travelling distance of about 72 kms. The Katkianala is a major tributary to this river which joints the river Khan near Sanwer. Total length of the river is 72 km (apprx) while it is only about 27.59 km (apprx) in the Indore city. The river khan do have itsoriginal form now rather is full of dirt, polluted water and the sewage of Indore city,Mangliya and Sanver town flows in it. There are several check dams at various locations along the Kanh river, namely Kayatkhedi, Panchpipalai, Rammaso, Jamalpuraek. to store the water for the irrigation purpose and to facilitate the downstream villages for drinking water sources.

someNalas joining Kanhriver :

a) PiliyakhalNala
b) PalasiaNala
c) Azad Nagar Nala
d) Tulsinagar - TalawaliChanda
e) Khajarana-BhamoriNalla
F) NarvarNala
g) BhourasalaNala
h) Arvindo college Nala
i) ShakkarKhediNala
j) Kathia Nala

Over a period of decades the ecosystem of Kanh river was totally spoiled and destroyed the fauna n flora of the river side region.

Various factors found to be responsible for this ecological imbalance.

Later State government of M.P. and local administration of Indore Municipal corporation designed and developed the revival plan for the Kanh river and implemented which resulted in improving the above said imbalance state of ecosystem of Kanh.

"We found pictures of people bathing in the Kahn water up to the decade of the 50s. Religious rituals were regularly performed alongside the river,"

the problem began in the 60s and the 70s. It was the time when Indore witnessed a rapid wave of industrialization. The number of mills established during the period was directly proportional to the swelling of the city's population as migrants poured from all across the country.

Few cared for the burden of the waste that this development produced. It eventually went into the rivers, as the infrastructure remained underdeveloped. Like the size of the city, the volume of the sewage disposed into the Kahn river is only increasing with time.

"The sewage is not the only problem afflicting the Kahn river. The mindless encroachment of its catchment area and 33 slum colonies have swallowed a great part of the river. Its flow has greatly reduced because of the illegal constructions cropping in Kahn's catchment area."

Over a period of time it has been observed that again the improved status of the Kanhriver is getting spoiled which motivated us to do this research project.

Aims and Objectives - The aims and objectives of this project is to

- conduct the ecological study,
- Analysing the causes of increased pollution in Kanh river.
- Examining effect of reforms and revival on pollution
- Analysis of present improved status of the River Kanh.

Hypothesis

1. Steps taken by the government and local administration has a positive impact on ecosystem of Kanh river, improved the quality of river water and helped to revive fauna and flora.
2. There is lack of public responsible behaviour and strict implementation of rules and practices.

Need statement- There have been several attempts to clean the river since 1985. In year 2014 state government and IMC started the expedition of Kanh river rejuvenation and revival. This project which improved the ecological health of the river but in last few years the cleanliness level of the river is continuously getting destroyed which given rise to the need of revisiting the causes of this eco imbalance so that as the citizens of the city we could understand our responsibility to maintain the ecological health of our city Indore as cleanest city of India

Work plan- We are going to study and analyse the ecosystem of Kanh river over a period of second half of 20 th century and 21 st century till now through survey, literature available on social media, information available on Indore municipal corporation web site, through pictures of Kanh river over this period available on social media. We will be collecting the information through literature review.

We will be studying the pH value, TDS value & BOD value for two different periods that is 2018 and 2021. Followed by the survey on changing status of Kanh river eco health.

Following this we will also be studying the components and reasons destroying the eco health of Kanh river.

METHODOLOGY

Sampling

Universe: Kanh river over its stretch of 160 kms.

Target area : Kanh river in Indore city of 21 km stretch

Sample area: TejpurGadbadi area

Sampling procedure: Selective sampling

Variables: Ph, TDS and BOD value.

Primary Data: Qualitative data obtained from google survey forms, information gathered through personal interview**.**

On the basis of questions answered by 101 people following is the interpretation of the data obtained by survey.

Population unit observing the subject of research for a varying period of 2 yr to 50 yr.

Survey is conducted over a sample of 101 persons including male and females both of age group 14 to 56 of which 53.5% are male and 46.4% are females.

Questionnaire consist of 20 questions of which 16 are related to the research topic and 4 are to collect Demographicinformation.

Secondary data: Data obtained from news journals, Indore Municipal corporation web site

Method of analysis: Observational data analysis using secondary data**.**

Percentage analysis: Using primary data through data sheets and graphical representation provided in google forms and did the percentage analysis manually for data collected and data obtained as responses to questionnaire.

OBSERVATIONS - Reason of ecological imbalance in Kanh river

There are in total 468 various sewer. outfalls meeting into Kanh rivers directly or through other channels in form of river or nalas. Out of these, about 314 outfalls are live outfalls which discharge the sewage into the river Kanh. Main Sources of pollution in river Kanh:

- Domestic waste of city directly meeting river Khan or various nallas draining into the river.
- Industrial water and waste from industries at Sanwer road/Kumedi industrial area joining BhorasalaWala.
- Domestic waste water of Sanwer town.
- Domestic waste water of the gram panchayatMangaliya including Tulsi Nagar Nala/TalawaliChandaNala of Indore.
- Industrial waste water / domestic waste from industries at lidhyog. Nagar Palda / Laxmibai Nagar/ Pologround industrial area Bhagirath Pura industrial aria / Sanwer road industrial area.
- Industrial waste water / domestic waste from industries at readymade electronic/ Garments shop.

Domestic waste water of the area near Arvindo medical college and Surrounding residential area joining Arvindomedical college Nala.

steps taken by government- To revive our river Khan government has taken various steps:

1) Taping of Nalas
2) Laying of new sewer line to stop mixing of domestic sewer waste in the river
3) Disposal of industrial waste in industrial areas only.
4. Connecting of sewer line to STP
5) Laying of not on both side of bridges on the river
6) Regular cleaning &deepening of the river
7) Plantation on river banks

8) Penalty fine on human waste / garbage in the river.

9) Adopting Solid waste management (SWM) practices

IMPORTANT SAMPLE STATISTICS- Data Secondary datafor year 2018 and year 2021 obtained from records of IMC.

Data of year 2018,

Dconcentration of SO_4 Fluoride and Heavy metals and No of GW drinking water specifications (acceptable limits)

Sl. No.	Analysis results of ground water Samples for General Parameters and Heavy Metals in mg/I									
	SO_4	F	Cd	Cu	Pb	Fe	Ni	Zn	Mn	Total Cr
1	7.94	BDL	ND	BDL	0.001	0.001	0.001	0.006	BDL	0.001

Comparative suggested criteria for bathing in river khan is given in the following Table – 2

Table 2. Suggested criteria for outdoor bathing

Sl. No.	**Parameters**	**Class 'B' Water Quality criteria – for bathing (to be achieved)**	**Class 'E' water Quality Criteria for irrigation (Present Quality)**
1	Ph	6.5 to 8.5	6 to 8.5

Data of year 2021,

Dconcentration of SO_4 Fluoride and Heavy metals and No of GW drinking water specifications (acceptable limits)

Sl. No.	Analysis results of ground water Samples for General Parameters and Heavy Metals in mg/I									
	SO_4	F	Cd	Cu	Pb	Fe	Ni	Zn	Mn	Total Cr
1	34.172	1.172	ND	ND	ND	ND	ND	ND	ND	ND

Comparative suggested criteria for bathing in river khan is given in the following Table – 2

Table 2. Suggested criteria for outdoor bathing

Sl. No.	**Parameters**	**Class 'B' Water Quality criteria – for bathing (to be achieved)**	**Class 'E' water Quality Criteria for irrigation (Present Quality)**
1	Ph	6.5 to 8.5	7.89

Geographical spread of Kanh river.

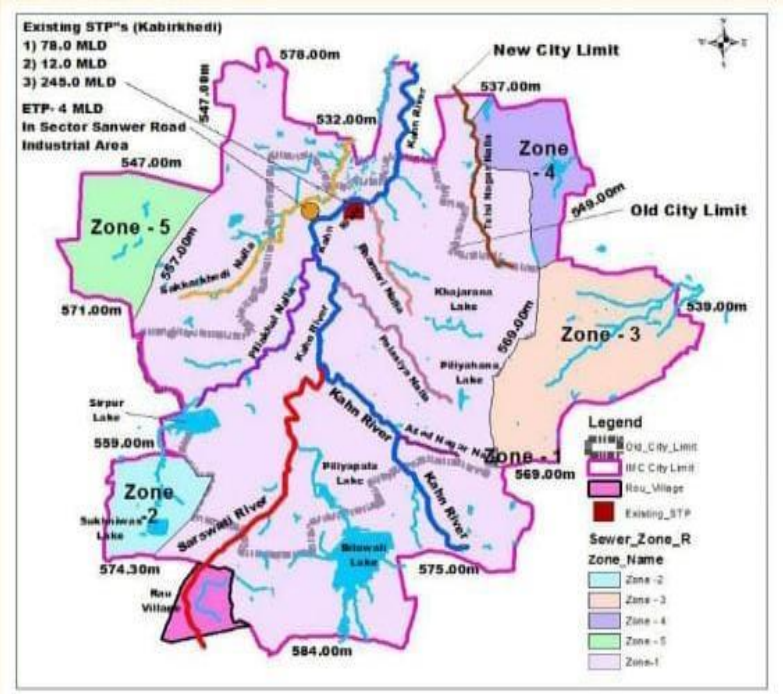

SAMPLE STATISTICS OBTAINED THROUGH SURVEY

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSe0encvO36NvN3d3BqKuG-PEwoPBGGxF3qYSSHKU174dGetrA/viewform

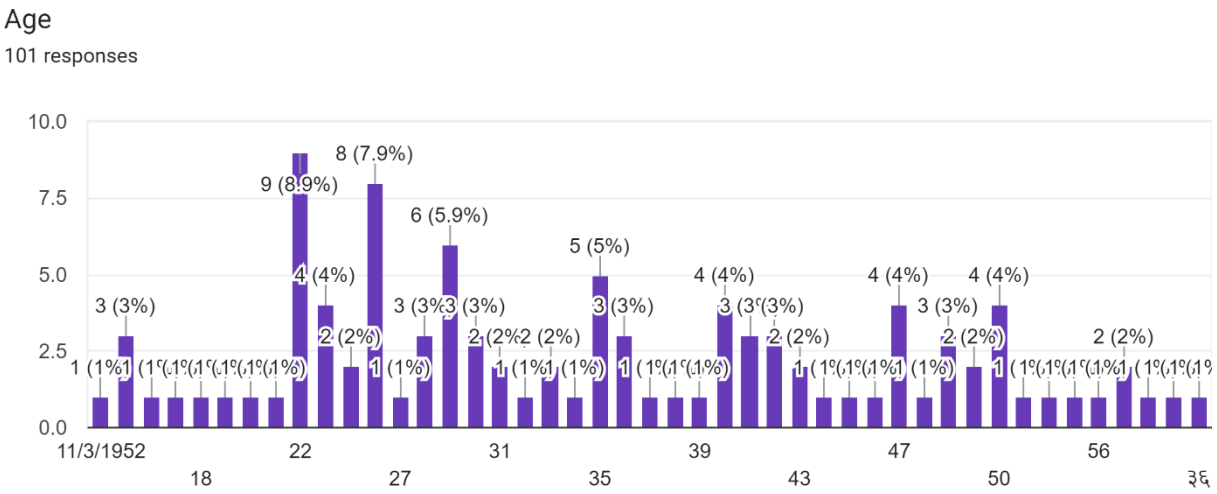

Gender

101 responses

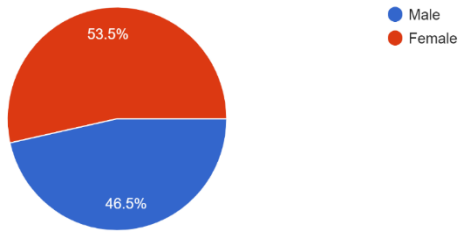

How long have you been observing this river?

101 responses

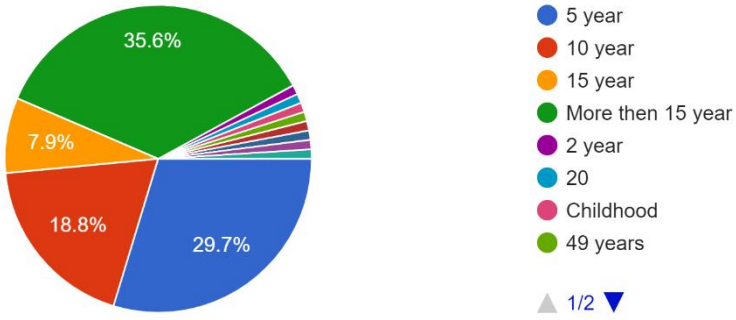

What changes have you seen?

101 responses

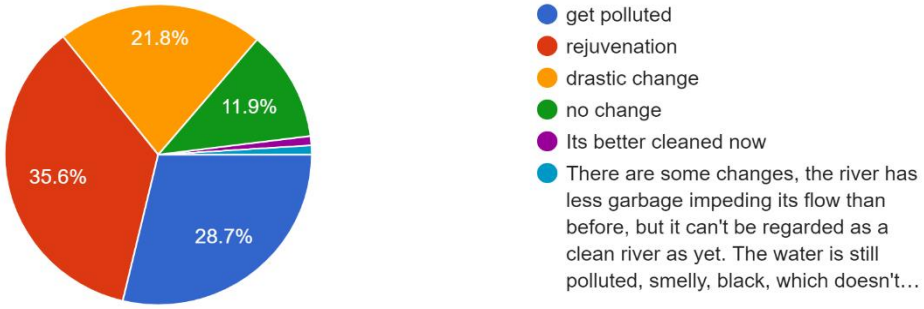

Have you seen any particular change in this river?

101 responses

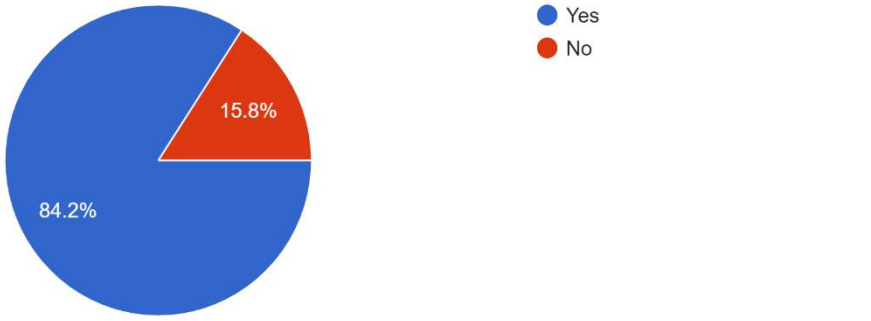

If yes, what changes have you seen, Please specify.

101 responses

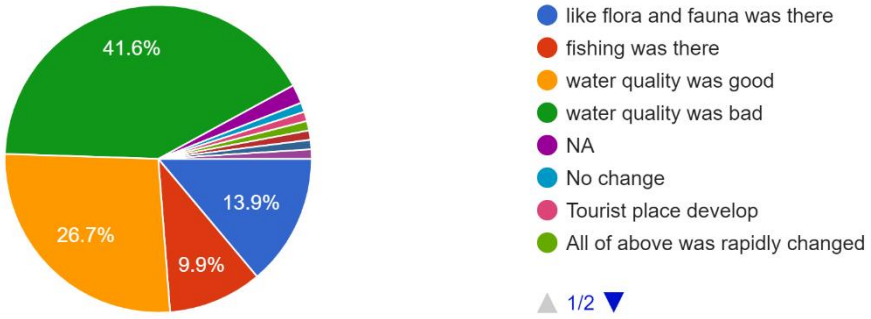

Which type of garbage do you think is dumped in river?

101 responses

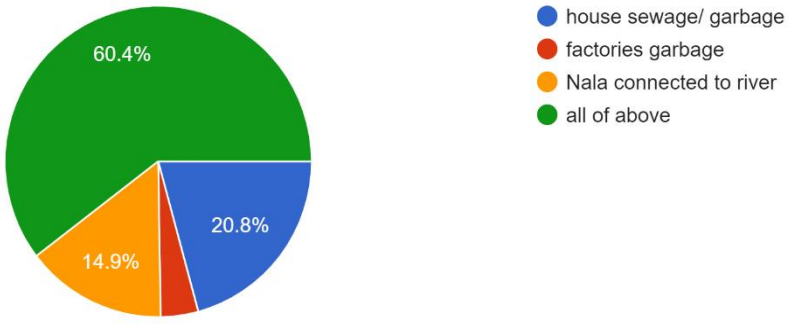

What do you think about the reasons of pollution in the river?

101 responses

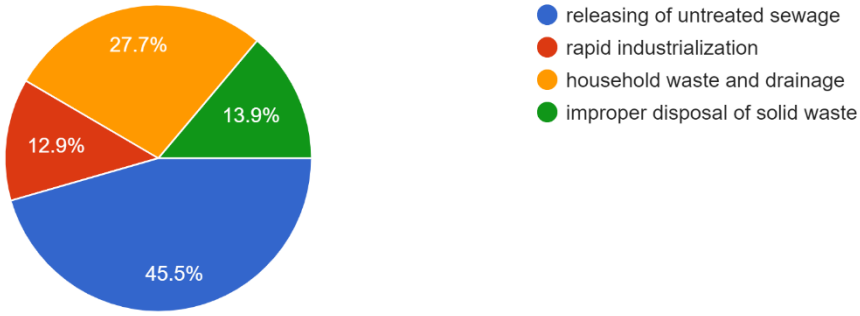

How long have you been observing the rejuvenation of this river?

101 responses

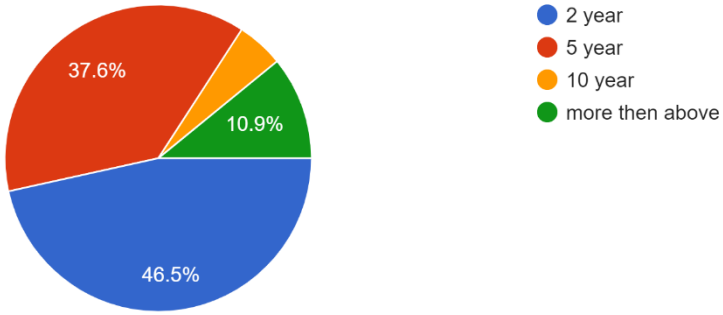

What do you think is the reason of contaminated water of this river?

101 responses

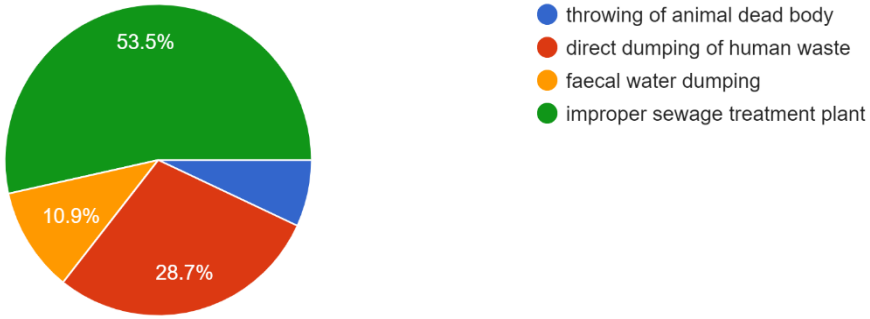

Are you satisfied with the efforts of government to rejuvenate the river?

101 responses

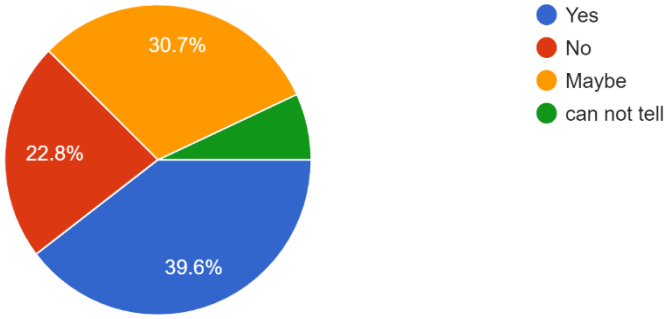

What is your opinion about rejuvenation of this river?

101 responses

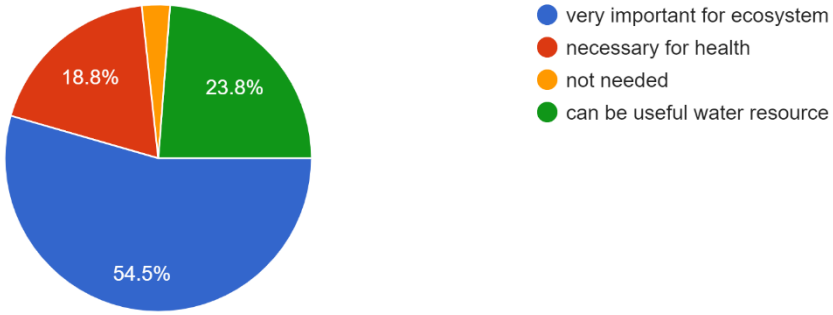

Please suggest some solutions for the improvement of water quality of kanh river?

101 responses

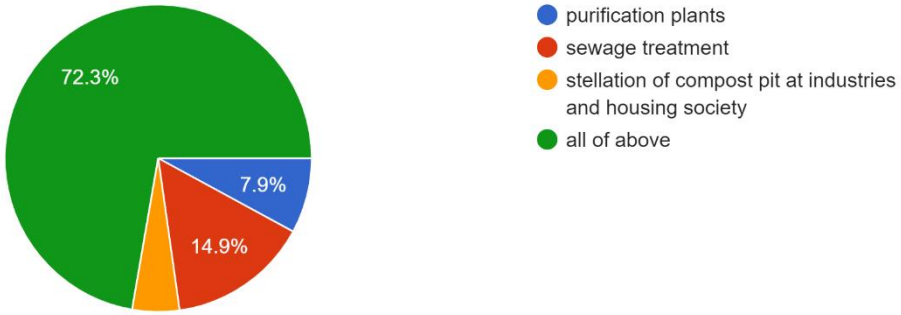

What are the legal obligations imposed on government for cleanliness of the river?

101 responses

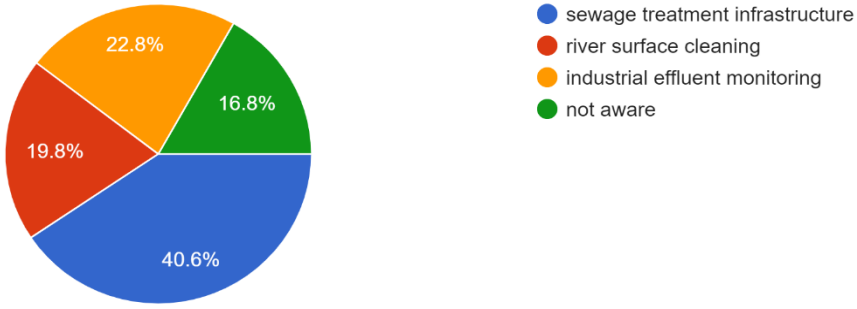

Best practice observed.

101 responses

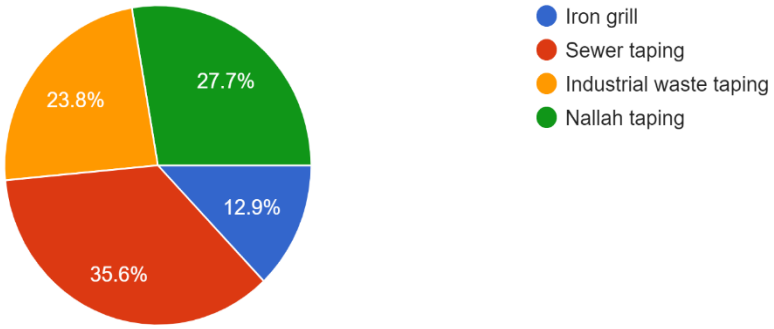

Why this river you feel is important.

101 responses

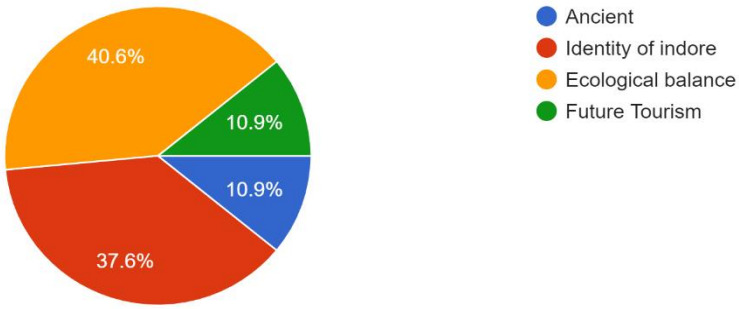

Which type of fauna have you seen when the river was not polluted?
101 responses

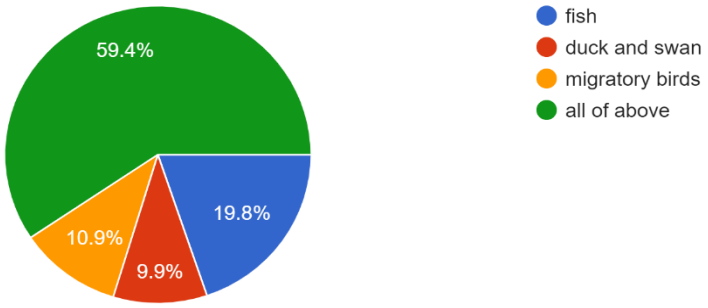

on the scale of 0 to 5 how much rating do you give on government efforts for rejuvenation of river
101 responses

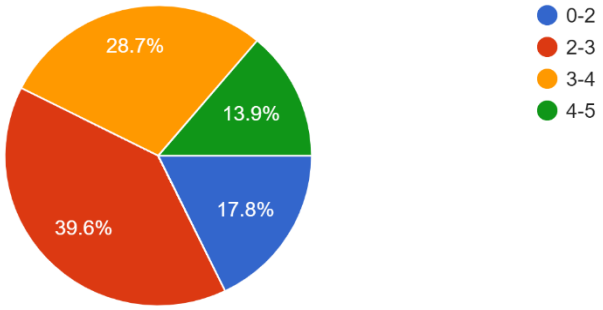

DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION

On the basis of secondary data.

1) The water of the river has become clean and transparent.
2) Fishes and aquatic birds are visible.
3) The river water does not produce foul smell.
4) The pH value, TDS value & BOD value has been improved.

On the basis of primary data collected through survey

1 35.5% population has witnessed the rejuvenation of the river,with aopinion by 28.7% as it's still getting polluted, 11.9% as no change has been observed and 21.9% have observed drastic change.

1. 60% of population has opinion by experience and observation that domestic sewage, industrial waste and all the dirt through nalas connected to the river have been polluting the river since long.

   Also sample units from higher age group have witnessed fishing, presence of ducks, flowing water, resident birds, dense fauna and flora besides the river almost 60 % of sample population have observed fishes, ducks, swans, migrating birds in this river before it got polluted.

2. 22.8% sample population is not satisfied with government efforts,30.7% not sure and 39 % sample population is satisfied with government efforts.
3. 354% of sample population find it very important to rejuvenate the river for ecosystem balance,, 23.8% see it as potential water source for the city and 18.8% consider it good for all kind of city and citizen's health.
4. 37.6% find Kanh as identity of the city40.6% find it to be kept alive and clean for the sake of ecological balance of the environment balance.

RESULT- We accept the hypothesis as.

1. From the analysis of secondary data and views of sample population it is evident that Steps taken by the government and local administration has a positive impact on ecosystem of Kanh river, improved the quality of river water and helped to revive fauna and flora.
2. Also it is evident from pictures available , surveys and news in the news papers and social media that Recurrent ecological imbalance, constant public behaviour at social level industrial and domestic waste pushing in Kanh river polluting it back constantly. It shows that there is lack of public responsible behaviour and strict implementation of rules and practices.

CONCLUSION- From this research project we conclude that government and local administration have put in efforts to bring back the life of kanh river but any reform and revival whether it is social, cultural or environmental public and administration should go hand in hand to rebuilt it and to maintain it. Now we as responsible citizens should play our role honestly and nicely for the betterment of environment.

SOLUTION OF THE PROBLEM- Other then the efforts made by the government, Local administration and IMC it is very difficult to maintain the balance of the ecosystem and keep it working unless until public is aware and committed towards their responsibilities, rules and regulations

Following are the suggestions

1. Planting purification plants

2.Proper sewage system and sewage treatment plant

3. Strict industrial waste management

4. Installation of waste pits at industrial level and compose pit at domestic level should be made compulsory.

5. Industrial effluent monitoring

6. Best practices observed and suggested and to be adapted

a.Iron grill

b. Sewer tapping

c. Industrial waste tapping

d. Nslah tapping

SUGGESTIONS

1. Awareness campaign should be carried out
2. At the school level it should be introduced as an activity towards cleanliness drive.

3. Strict punishment and huge fine should be imposed on industries on voiding the rules and regulations.
4. Industries, IT companies , education industries should be given partial social responsibility to maintain the cleanliness of the river,
5. On the river banks public recreational events could be organized which should be kept paid so that using those funds that place can be maintained.

   Most importantly as Indore has established itself as most cleanest city of India consecutively for six years, Local administration could plan a campaign to motivate the public to prove themselves best on the country doing activities for maintaining the cleanliness of river Khan and ecological health of the city.
6. Few places like krishnpurachhatries can be made tourist attraction.
7. Achieving above could establish Indore as ideal city not only in the country but could gain recognition all over the world.

FUTURE PLAN

1. Industrial Pollution Control
2. Rejuvenation of water quality of Hukumakhedi land.
3. Protection of Simpur Band & it's Water quality.
4. Completion of Conveyance System for City Sewage
5. Implementation of Indore Sewerage project,
6. River front development of Kanh river in smart city area.
7. Zero discharge from Existing 4 mld ETP at Sonwer Rood
8. Indore is in process of of becoming smart city so Indore has already set to get a city – centric riverfront on Kahn river,

ANAXTURE

Interview questionnaire

1. Name: **2. Age:** **3. Gender:** **4. Adrees:**

5. How long have you been observing this river?

a) 5years b) 10 years c) 15 years d)more than above

6. What changes have you seen?

a) get polluted b) rejuvenation c) drastic change d) no change

7. Have you seen any particular change in this river?

Yes/No

8. If yes, what changes have you seen,plz specify.

a) like flora and fauna was there b) fishing was there c) water quality was good d) water quality was bad

9. Which type of garbage do you think is dumped in river?

a) house sewage/ garbage b) factories garbage c) other Nala connected to river d) all of above

10. What do you think about the reasons of pollution in the river?

a) releasing of untreated sewage b) rapid industrialization

c) household waste and drainage d) improper disposal of solid waste

11. How long have you been observing the rejuvenation of this river?

a) 2 years b) 5 years c) 10 years d) more than above

12. What do you think is the reason of contaminated water of this river?

a) throwing of animal dead body b) direct dumping of human waste

c) faecal water dumping d) improper sewage treatment plant

13. Are you satisfied with the efforts of government to rejuvenate the river

a) yes b) no c) may be d) can not tell

14. What is your opinion about rejuvenation of this river

a) very important for ecosystem b) not needed c) necessary for health d) can be usefull water resource

15. Please suggest some solutions for the improvement of water quality of kanh river

a) purification plants b) sewage treatment

c) Installation of compost pit at industries and housing society b) all of above

16. What are the legal obligations imposed on government for cleanliness of the river.

a) sewage treatment infrastructure b) river surface cleaning c) industrial effluent monitoring b) not aware

17. Best practice observed. Choose-

A. Iron grill B. Sewer tapingC. Industrial waste taping D. Nallah taping

18. Why this river you feel is important.

A. Ancient B. Identity of indore C. Ecological balance D. Future Tourism

19. Which type of fauna have you seen when the river was not polluted

a) fish b) duck and swan c) migratory birds d) all of above

20) on the scale of 0 to 5 how much rating do you give on government efforts for rejuvenation of river

a) 0-2 b) 2-3 C) 3-4 d) 4-5

Link for google form of questionnaire

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSe0encvO36NvN3d3BqKuG-PEwoPBGGxF3qYSSHKU174dGetrA/viewform

REFERENCE

1. Indore Municipal corporation website
2. Indore Municipal corporation Office
3. https://icrier.org.
4. https://www.linkedin.com
5. https://en.bharatpedia.org
6. https://maps.mapmyindia.com
7. https://www.freepress general.in
8. https://www.mppcb.mp.gov.in.
9. https://sondep.in
10. https://indretalk.com
11. https://m.timesofindia.co
12. Journals and news papers

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता : सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

डॉ0 विद्या प्रकाश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, ट्राइडेन्ट बी0एड्0 कॉलेज, गीधा, आरा, भोजपुर (बिहार)

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 82-86

Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

सारांश – पर्यावरणीय व पारिस्थितिकीय परिवर्तनों के कारण उत्पन्न पर्यावरण संकट आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी मनुष्य की विकासीय प्रक्रियाओं का परिणाम है। वास्तव में यदि एक तरफ सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तकनीकी एवं प्रौद्योगिकीय विकास हुये हैं तो दूसरी तरफ विकट पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय समस्याएँ भी उत्पन्न हुई है। पर्यावरण और उसकी समस्याओं पर सार्थक विचार सांस्कृतिक कारकों के परिप्रेक्ष्य में ही संभव है। विशेषरूप से उच्च जनसंख्या वृद्धि, सीमित संसाधन, गरीबी, समाज की ग्रामीण एवं कृषि प्रधान पृष्ठभूमि सामाजिक परिवर्तन के लिए विकास योजना व विभिन्न सांस्कृतिक परम्पराएँ हमारे लिए विचारणीय है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति समय–समय पर किए गए प्रयासों के फलस्वरूप पिछले वर्षों में भारत में कई पर्यावरणीय आन्दोलनों का जन्म हुआ। मीडिया ने इन आन्दोलनों को व्यापक स्थान दिया है और इनके उद्देश्यों से जनता को अवगत कराया है। ये आन्दोलन है– चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओ आन्दोलन, टिहरी बांध विरोधी आन्दोलन, मूक घाटी, एप्पिको आन्दोलन, भोपाल गैस त्रासदी, विष्णु प्रयाग बांध, चिलिका आन्दोलन एवं पानी बचाओ आन्दोलन और दिल्ली का वायु प्रदूषण नियंत्रण आदि। किन्तु पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। अतः इसके लिए हमें माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना आवश्यक इसलिए हो जाता है कि माध्यमिक स्तर से ही बच्चे अपने दायित्वों एवं कर्त्तव्यों को समझने लगते हैं साथ अपने लक्ष्यों का निर्धारण करते हैं।

मुख्य शब्द– पर्यावरण, जागरूकता, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी।

वायु, जल, भूमि, वनस्पति, पशु, मानव सबका सम्मिलित रूप ही पर्यावरण है। प्रकृति में इन सबकी मात्रा व रचना इस प्रकार से व्यवस्थित है कि पृथ्वी पर एक सन्तुलित जीवन बना रहे। यदि मानव इतिहास का अवलोकन करें तो हमें ज्ञात होता है कि मनुष्य प्रकृति के इतने समीप था कि वह प्रकृति में ही अपने आपको पाता था। जल, वायु की प्राप्ति में कोई शंका नहीं थी, लेकिन विगत् कुछ समय से जब से मनुष्य ने प्रकृति से छेड़छाड़ आरम्भ की है प्रकृति का सामान्य स्वरूप असंतुलित व खण्डित होने लगा है और परिणामस्वरूप धीरे–धीरे जल, वायु, भूमि जीवन के आवश्यक तत्व प्रदूषित होकर चिन्ता के विषय बन गये हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वर्तमान पर्यावरण से अनुमान लगाया जा रहा कि आगामी कुछ वर्षों में मानव जीवन विनाश के गर्त में गिर जायेगा। इस विनाशकारी भयावहता से बचने के लिए आज पूरी दुनियाँ जागरूक होती नजर आ रही है, अर्थात् आज महसूस किया जा रहा है कि पर्यावरण का विनाशकारी रूप सबको तबाह कर देगा। आज पर्यावरण के अस्तित्व को बचाने की आवश्यकता है। इसके लिए वृक्ष और वनस्पतियों के अस्तित्व को बचाना, प्राकृतिक संसाधनों का उचित बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयोग, प्रदूषण से बचाव के उपाय, पर्यावरण सम्बन्धी सकारात्मक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मनोवृत्तियों का विकास करना, पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए बौद्धिक क्षमता एवं कौशल का विकास करना, पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी देना, प्राणी को सुखद जीवन उपलब्ध कराना, जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना आदि आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्व स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाएँ प्रयास कर रही हैं। विश्व स्तर की सन्धियों तथा अधिनियमों को पारित करते हुए भी आज भी पर्यावरण प्रदूषण तथा उसके संरक्षण की विश्वव्यापी समस्या बनी हुई है। इसके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समाधान हेतु 'मानवीय पर्यावरण' पर 5 जून 1972 में 'स्टॉकहोम' में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। इसके अलावा पर्यावरण के क्षेत्र में 11 मार्च 1989 को हेग उद्घोषणा व 14 जून 1992 में ब्राजील में हुआ 'पृथ्वी सम्मेलन' भी इसी दिशा में एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास थे।

भारतीय संविधान के 42वें अनुच्छेद (1976) में संशोधन करके एक नये अध्याय 'पर्यावरण संरक्षण' को नागरिकों के मूल कर्त्तव्य के रूप में जोड़ा गया। सन् 1980 में भारत सरकार ने स्वतंत्र रूप में एक पर्यावरण विभाग की स्थापना की और इसी वर्ष में 'वन संरक्षण अधिनियम' बनाया। सन् 1981 में 'वायु–प्रदूषण नियंत्रण अधिनियम' लागू किया गया। सन् 1986 में 'पर्यावरण संरक्षण अधिनियम' लागू किया गया। 'मोटर वाहन अधिनियम' 1 मई, 1990 से संशोधित अधिनियम के रूप में लागू किया गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्व स्तर पर सम्मेलन तथा संगठनों की व्यवस्था की गई है। सम्मेलनों की संस्तुतियों को लागू करने के लिए अधिनियम, अध्यादेश, कानून तथा संविधान में भी संशोधन किए गए हैं फिर भी इस दिशा में अच्छे परिणाम नहीं प्राप्त हो रहे हैं। इसलिए मानव पर्यावरण पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में 'पर्यावरण–शिक्षा' को विशेष महत्त्व दिया है क्योंकि पर्यावरण–शिक्षा द्वारा बालकों तथा युवकों में 'पर्यावरण संचेतना' का विकास किया जा सकता है।

''पर्यावरण सुधार के लिए, पर्यावरण के सम्बन्ध में, पर्यावरण के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा–पर्यावरणीय शिक्षा है।'' भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा विभाग, अहमदाबाद में स्थापित किया गया है, जिसमें पर्यावरण सम्बन्धी पाठ्य–सामग्री तथा शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण शिक्षा परिषद् ने 'यूनेस्को–प्रकल्प' के अन्तर्गत विज्ञान के विषयों में पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी शिक्षण हेतु 'किट' तैयार किए। यूनीसेफ योजना के माध्यम से सभी राज्यों ने इस कार्यक्रम को अपनाया है। यूनीसेफ योजना छात्रों को पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी सम्बन्धी जानकारी तथा संचेतना का विकास तथा संचार करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने (1978–79) में कार्यरत शिक्षकों को पर्यावरण सम्बन्धी प्रशिक्षण प्रदान किया, जो यूनेस्कों के कार्यक्रम के अन्तर्गत ही था। 'एनवायरनमेंट एजूकेशन पाइलट प्रोजेक्ट इन इंडिया' के माध्यम से पर्यावरण पर आधारित मॉड्यूल्स की तैयारी की गई।

आज विकासशील देशों में स्वच्छता व स्वास्थ्य की समस्या अति ज्वलंत है। ये समस्यायें हमारे पर्यावरण पर अपना सीधा प्रभाव डाल रही है। जिसके कारण संक्रमित रोगों की संख्या बढ़ी है। इस स्थिति से निपटने हेतु गैर सरकार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, सरकारी योजनायें व नीतियाँ अपना प्रभावी कार्य करने का प्रयास कर रहा है। इसी के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन, वॉटर एड, युनीसेफ जैसी संस्थायें भारत में स्वच्छता के स्तर को प्रबल बनाने में अपना सहयोग दे रही है, ताकि हमारी स्थिति पहले से बेहतर हो सकें और एक स्वच्छ व स्वस्थ भारत का निर्माण संभव हो सकें।

माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा का बोध सभी अभ्यर्थियों को अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में दिया जा रहा है जिससे सभी में 'पर्यावरण संचेतना' का विकास हो। भूगोल, विज्ञान, आदि शिक्षण विषयों के पाठ्यक्रम में पर्यावरण के विशिष्ट प्रकरणों को सम्मिलित किया गया है। पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का सम्बन्ध व्यक्ति में पर्यावरण के बारें में ज्ञान, अवबोध, कौशल, अभिवृत्ति, मूल्य निर्माण तथा चेतना विकसित करने से है।

अध्ययनकर्त्ता द्वारा माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित पूर्व शोध अध्ययन किये गये जिसमें **मुछाल, महेश कुमार (2007)**[प] ने निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि– 87.5 प्रतिशत विद्यार्थियों में पेड़–पौधों के प्रति उच्च जागरूकता पायी गई, वे पेड़–पौधों को लगाने एवं व्यर्थ नहीं तोड़ने तथा पेड़–पौधों के महत्त्व के बारें में जानकारी सम्बन्धी कथनों पर अपनी सकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की पेड़–पौधों, पशु–पक्षियों, जल एवं ऊर्जा संरक्षण, विद्यालय एवं स्वच्छता, खाद्य–सामग्री तथा आस–पास के वातावरण के प्रति जागरूकता पायी गयी। **सिंह, सुभाष (2008)**[पप] ने अध्ययन में इंगित किया कि– शहरी छात्रों को स्वच्छन्दता ग्रामीण छात्रों से ज्यादा होती है और शहरी छात्र/छात्राएँ विभिन्न संचार माध्यमों, विभिन्न प्रकार के लोगों के सम्पर्क में रहने के कारण अपने पर्यावरण के विषय में अधिक जानकारी रखते हैं। **विश्वकर्मा, उमाशंकर (2009)**[पपप], ने अध्ययन में इंगित किया कि– विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं में विशेष रूप से अलग से एक घण्टे पर्यावरण जागरूकता की शिक्षा प्रदान की जाती है। छात्रों में पर्यावरणीय जारूगता प्रदान करने के लिए विद्यालय की तरफ से वर्ष में एक पर्यावरण का प्रश्न पत्र हल कराया जाता है। पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए बच्चों को नीतियों कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती है। **दिवाकर, श्वेता (2012)**[पअ], ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– माध्यमिक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है। **रंजना (2013)**[अ], ने निष्कर्ष में पाया कि– उच्च स्तर के छात्राओं में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि उच्च स्तर के छात्रों में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि की अपेक्षा अधिक है। **गायत्री, रेड्डी एवं रेड्डी (2014)**[अप] ने अध्ययन के पश्चात् पाया कि माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के पर्यावरण बोध पर उनके जाति एवं अभिभावक के व्यवसाय का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

जैन, रितेश (2015)[अपप]. ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **जॉनसन एवं खत्री (2015)**[अपपप]. ने अध्ययन में पाया कि– 40% छात्राओं में वृक्षों एवं वातावरण सम्बन्धी जानकारी का स्तर उच्च पाया गया। 50% छात्राओं में जानकारी का स्तर बिल्कुल निम्न पाया गया। **श्रीवास्तव (2015)** ने निष्कर्ष के रूप में पाया गया– विज्ञान समूह के विद्यार्थियों का व कला समूह विद्यार्थियों की पर्यावरणीय

जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है। **अस्थाना, शैलजा एवं द्विवेदी, डी0के0 (2015)**[पग] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– उत्तराखण्ड के देहरादून जिले के बी0एड्0 विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता उच्च स्तर पर पायी गयी। **ढोले, ज्योति (2015)**[ग] ने अध्ययन निष्कर्ष में पाया गया कि– कला विभाग के 80 प्रतिशत विद्यार्थी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं वही 20 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे भी हैं जो जल बचाने का प्रयास भी नहीं करते। **वर्मा, मधुलिका (2015)**[गप] ने निष्कर्ष रूप में पाया कि–समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता कार्यक्रम सार्थक रूप से प्रभावी रहा क्योंकि दिये गए उपचारात्मक शिक्षण में चार्टों द्वारा विद्यार्थियों में जागरूकता उत्पन्न करायी गयी।

श्रीवास्तव, शिवानी (2015)[गपप] ने शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि– शासकीय विद्यालयों के कक्षा 11 के छात्रों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। **रेड्डी एवं तिवारी (2017)**[गपपप] ने निष्कर्ष में पाया कि– उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। **सिंह, प्रमिला (2017)**[गपअ] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– पर्यावरण शिक्षा द्वारा बालक को स्वयं प्राकृतिक तथा जैविक वातावरण की समस्याओं को खोजने में असमर्थ बनाया जाता है, एवं उसका समाधान स्वयं करता है, जिससे जीवन का विकास होता है। शिक्षा के विभिन्न आयामों, विधियों, प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। वास्तविक समस्या के कारण प्रभाव को पहिचानना एवं औपचारिक– अनौपचारिक शिक्षा द्वारा समस्याओं का समाधान करना जिससे मनुष्य में गुणवत्ता लायी जा सके। पर्यावणीय जागरूकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। **बलौदा, सुमन (2018)**[गअ] ने निष्कर्ष के रूप में पाया कि– माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी विद्यालय के बालक एवं बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति संचेतना की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष– पूर्व अध्ययनों के आधार पर पाया गया कि– माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता समान रूप से पायी गयी तथा कुछ अध्ययनों में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता में अन्तर भी पाया गया। अतः पूर्व अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति शत्–प्रतिशत जागरूक नहीं है। अतः उन्हें पर्यावरण के प्रति और अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।

माध्यमिक विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता हेतु सुझाव–

- विद्यार्थियों को धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक परम्पराओं और प्राचीन प्रथाओं/रिवाजों के माध्यम से सही कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाना बहुत आवश्यक है।
- पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से विद्यार्थियों को पेड़–पौधों को संरक्षित एवं सुरक्षित हेतु किये जाने वाले कार्यकलापों हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को वायु, जल भूमि, वाहन तथा ध्वनि प्रदूषण के बारें में शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए तथा उससे होने वाली हानि के बारें में जानकारी देना आवश्यक तथा उसके निस्तारण हेतु उपायों की भी जानकारी देना आवश्यक है।
- साधारण जन–मानस को पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराकर उनसे हो सकने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी जानी चाहिए।

- सरकार द्वारा पर्यावरण प्रदूषण के किये गये प्रावधानों एवं बनाये गये नियमों के बारें में शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति अपने कर्त्तव्यों को जान सके।
- विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मानसिकता बदलने की आवश्यकता है क्योंकि आज भौतिकता एवं अर्थवादी होते जा रहे लोग केवल शिक्षा प्राप्त कर पैसा के पीछे भाग रहे हैं।
- **विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति** नैतिक दायित्व भी जानकारी देना आवश्यक है क्योंकि वे पर्यावरण आचार संहिता के बारें में जागरूक हो सके तथा पर्यावरण के प्रति कठोरता से स्व–पालन कर सके।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति बनाये गये कानूनों एवं नियमों की जानकारी होना आवश्यक है क्योंकि कानूनों एवं प्राविधानों के बारें में जानकारी होने से वह पर्यावरण संरक्षण में अपनी अहम् भूमिका दे पायेंगे।
- विद्यार्थियों को पर्यावरण क्षरण करने वालों के प्रति कौन से कानून एवं प्रावधान बनाये गये के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- विज्ञान और टेक्नोलॉजी की निरन्तर प्रगति ने पर्यावरण क्षेत्र को कई नई दिशाएं दी है तथा कई समस्याओं को हल करने की पेशकश भी की है जिन्हें इसलिए प्रयोग में नहीं लिया जा सका है क्योंकि वह मँहगी है। अतः विद्यार्थियों को इसमें नयी खोज करने हेतु प्रयोगशाला का निर्माण कराया जाना आवश्यक है।
- स्वच्छ भारत अभियान जो कि सफाई के प्रति देश में जागरूकता फैलाने के लिए चलाया गया है माध्यमिक विद्यार्थियों को इसके प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
- विद्यार्थियों को शुद्ध पानी, स्वच्छ भोजन, निरापद वायु, साफ–सुथरा आवास और बिना किसी प्रदूषण के वातावरण एक अच्छे पर्यावरण के आवश्यक घटक के बारें में जागरूक करने की आवश्यकता है और उन्हें यह भी जागरूक करने की आवश्यकता है स्वस्थ्य व्यक्ति ही मानसिक रूप से स्वस्थ होता है और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही जीवन में अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ सूची

[i] महेश कुमार मुछाल (2007). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (न्यूपा), नई दिल्ली, वर्ष 14, अंक 2, पृ0 39–54

[ii] सुभाष सिंह (2008). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण बोध, परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक संदर्भ, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, वर्ष 15, अंक–2, पृ0 84–92

[iii] विश्वकर्मा, उमाशंकर (2009). माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरणीय जागरूकता हेतु संस्थागत प्रयास का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

[iv] दिवाकर, श्वेता (2012). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

[v] रंजना (2013). उच्च स्तर के विद्यार्थियों में अनिवार्य पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिरूचि का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध, इलाहाबादः नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय।

[vi] गायत्री, ए., रेड्डी, बी. येला व रेड्डी सुधाकर (2014). ए स्टडी ऑफ एनवॉयरमेण्डल अवेयरनेस एमंग सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेण्ट्स इन रिलेक्शन टू कास्ट. फादर ऑकूपेशन, क्लास ऑफ स्टडी इन चित्तूर डिस्ट्रिक्ट. इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च. 3(2).

[vii] जैन, रितेश (2015). इन्वायरमेन्टल अवेरनेस एमंग सीनियर सेकेण्डरी लेवल स्टूडेन्ट्स (महेश्वर एण्ड मण्डलेश्वर, डिस्ट्रिक्ट खरगाँव (म0प्र0). सोशल इश्शू एण्ड इन्वायरमेन्टल प्राब्लम्स, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च–ग्रन्थालय, पृ0 1–3

[viii] जॉनसन, मालिनी एवं खत्री, अमृता (2015). महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं में पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का स्तर, सोशल इश्शू एण्ड इन्वायरमेन्टल प्राब्लम्स, वाल्यूम–3, इश्शू–9, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च–ग्रन्थालय, पृ0 1–2

[ix] शैलजा, अस्थाना एवं डी0के0 द्विवेदी (2015). ए स्टडी ऑफ इन्वायरमेण्ट्ल अवरनेस एमंग बी0एड0 स्टूडेन्ट्स ऑफ देहरादून डिस्ट्रिक, उत्तराखण्ड, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इनोवेटिव रिसर्च, 3(1), 75–79

[x] ज्योति ढोले (2015). विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता : एक अध्ययन'' (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संदर्भ में), इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, ए नॉलेज रिस्प्रोटरी, सोशल इश्शूस एण्ड एन्वायरमेण्टल प्रॉब्लम्स, 3(9), 1–4

[xi] मधुलिका वर्मा (2015). नवीं कक्षा के विद्यार्थियों का कुक्षी में चल रहे समग्र स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता का विकास, सोशल इश्शूस एण्ड एन्वायरमेण्टल प्रॉब्लम्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च, ग्रन्थालय, 3(9), 1–3

[xii] शिवानी श्रीवास्तव (2015). उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों एवं छात्राओं की पर्यावरण के प्रति जागरूकता, सन्दर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 5(1 एवं 2), जून एवं दिसम्बर 2015, पृ0 31–44

[xiii] डिम्पल रेड्डी एवं संजीत कुमार तिवारी (2017). रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 2(2), मार्च 2017, पृ0 23–25

[xiv] प्रमिला सिंह (2017). रीवां विकासखण्ड के हाईस्कूल स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता उत्पन्न करने में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशन एण्ड रिसर्च, 2(4), 271–274

[xv] सुमन बलौदा (2018). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण का तुलनात्मक अध्ययन, इन्पायर–जर्नल ऑफ मॉर्डन मैनेजमेन्ट एण्ड इण्टरप्रिन्यूशिप, 8(1), 573–576

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

महाकाव्यजानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययोः राजनीतिः, अर्थनीतिः, राजधर्मः, सार्वभौमत्वं विज्ञानम्

डॉ. सीता राम शर्मा

प्रोफेसर (साहित्य) राजकीय धुलेश्वर आचार्य, (पी.जी. संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर, जयपुर)

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2

Page Number : 87-94

Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

शोधसारः-जानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययोः राजनीतिविज्ञानम् इति गवेषणानिबंधे उभयत्रमहाकाव्यद्वयगतायाः राजनैतिकावस्थायाः स्वातन्त्रेण व्यष्टिरूपेण तुलनात्मकविचारेण च सम्पादिता अस्माभिः । अत्र दण्डनीतेस्तथ अखिलराजधर्ममूलत्वेन अर्थनीतेरपि परिचयः आलोच्यमहाकाव्यद्वयगतोपादानानि संकलय्य उपपादयितुं प्रयत्नः कृतः। पर्यालोचनस्य समग्रस्य स्पष्टीकरणार्थं याथातथ्येन च समुपस्थापनार्थं प्राचीनराजनीतिशास्त्राणि अनुगमकतयानुसृतानि पर्यवेक्षतानि च। सम्भवतः ख्रीष्टिय- षष्ठशतके आविर्भूतस्य कविकुमारदासस्य जानकीहरणमहाकाव्ये तथा अर्वाचीने पण्डितप्रवराभिराजराजेन्द्रमिश्रस्य जानकीजीवन-महाकाव्ये च प्राक्तनकविनाट्यकाराणां कालिदास - भट्टी भाषादीनां काव्यनाट्येषु राजनैतिकवैशिष्ठानां प्रभावे अपि निवेदितो अस्माभिः। प्राचीननवीनयोः महाकाव्ययोः चित्रितस्य राजनैतिकधर्मस्य मानदण्डः आधुनके अपि राष्ट्रशासने अनुसरणयोग्यतामार्हतीत्यवधेयम् ।

कूटशब्दाः- राजनीति, अर्थनीतिः राजधर्म, सार्वभौमत्वं राष्ट्रतत्वम्, सामन्ततन्त्र, मन्त्रीपरिषदः, दूतः, सभा, सभासदः, करनिर्धारणनीतिः, राष्ट्रशासनकर्तृत्व- मुत्तराधिकारसूत्रेण प्रजाकर्तृक निर्वाचनमुखेन वा राज्याभिषेकः दिग्विजययात्रा, विचरव्यवस्थ, युद्धं विश्वशान्तिश्च, शिक्षानतः, आजीविका, षाड्गुण्यमपायचतुष्टय, राजमण्डलं, कल्यानमूलकराष्ट्रशासनं राजनैतिकमैत्री आपत्प्रतिकारोपायचिन्तनम्।

शोधः (मुख्यांशः) अस्मदनुसन्धेयमहाकाव्यद्वयस्थं राजनीतिविषयोपस्थापनम् अभिप्रेतम् । राजनीतिसम्बन्धिनो विषया वैदिकसंहिता सुब्राह्मणेषु राजधर्म - विषयकशास्त्रेषु च सादरं समुपवर्णिता उपलभ्यन्ते । तेषां सर्वतः समाकलनेन एकत्रनिबन्धनम् अस्माकमिष्टम् । परन्तु आकारगतपरिमाणतया विषयगत वैचित्र्यबाहुल्यात् च सांप्रतं सातिशयसंक्षेपेण राष्ट्रविषयकं तत्त्वं किञ्चिन्मात्रमेव समुद्धृत्य उदाहरणरूपेण उपस्थापयामः । वैदिककाले तदुत्तरकाले च राजतन्त्रं राष्ट्रनीतौ सर्वोपरि स्वमहिम्ना विराजते स्म । अतः राष्ट्र राज्ये वा राज्याभिषिक्तः राजा वा श्रद्धया च गृहीतः आसीत्। ततस्तु राज्यस्तुतिः राजस्तुतिर्वा साकूतमुल्लिखितं वेदेषु । उत्तरकाले काव्यजगति नाट्यजगति च लौकिक-संस्कृतवाङ्मये राजतन्त्रस्यैव विजयगीतिडिण्डिमः श्रूयते । विशेषतस्तु 'गद्यपद्य-मयी राजस्तुतिः काव्यस्य विशिष्टरूपमाधाय विरूदसंज्ञया प्रथिता दृश्यते । '

ऋग्वेदसंहितायां दशममण्डले 173 - संख्यके सूक्ते च मन्त्रषट्के राजस्तुति- विधीयते।" अविचलितस्वतन्त्रप्रभुसत्तायां प्रतिष्ठितः प्रजाहितैषी राजा प्रजानाम् अभिमततमरूपेण वर्णितः उपलभ्यते । अथर्ववेदसंहितायामपि राज्याभिवर्धनं राजकर्तृकं शत्रुघातनं शत्रुसम्मोहनं च सम्यक् वर्णित मास्ते । स्वराज्यच्युतस्य राज्ञः पुनःस्थापनं, प्रजाकर्तृकं राज्ञः वरणं राज्ञः राज्यलाभः तस्य च राजकृत्या - नुष्ठानम् इत्येते विषयाः ऋग्वेदीयमन्त्रषट्के उपनिबद्धा वर्तन्ते । अपि च अथर्ववेदे एकस्मिन् सूक्ते राजसूययागेन राज्याभिषेकवर्णनं तथा सेनानिरीक्षणं, सेनासयोजनं,

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

संग्रामविजयादिवर्णनमपि सहृदयानां प्रीतिजननाय समुपन्यस्तं उपलभ्यते । ऐतरेय ब्राह्मणे 33 – 39 – संख्यकेषु अध्यायेषु राजसूययागे राज्ञः राज्याभिषेकवर्णनं तस्य प्रजापालनं राज्यसंरक्षणं प्रजाकल्याणाय राज्यस्य समृद्धिसाधनं तत्र तत्र वर्णितं विद्यते । राज्यस्य कल्याणाय ब्राह्मणपुरोहितस्य संस्थापनम् अपि चत्वारिंशेऽध्याये समुपन्यस्तं दृश्यते । 38 – तमे अध्याये द्वितीयेखण्डे राज्यात् प्रभृति साम्राज्यं यावत् भूखण्डानां परिणतिवैचित्र्यात् अधिकारवैचित्र्यात् उच्चावचपदभाजां विविधत्वं नामतः उल्लिख्य प्रदर्शितम् । अतः राजानोऽपि उत्कृष्टापकृष्टपदाधिकारितया भोज – स्वराट् – विराट् – परमेष्टि–राजेत्यादिभिः संज्ञाभिः संज्ञिता भवन्ति ।

एवमेव अखिलवैदिकसंहितासम्बद्धेषु ब्राह्मणेषु राजतन्त्रसंश्लिष्टाः केचन यागाः प्रसिद्धाः सन्ति । ते हि विशिष्टयागाः राजसूय– वाजपेय–अश्वमेध–विश्वजिदित्यादि–नाम्ना प्रसिद्धिम् आप्नुवन्ति । एतेषां यागानामनुष्ठानेन क्रमेण 'राजसूयेन राजा' भवति, वाजपेयेन सम्राट् भवति, अश्वमेधेन सार्वभौमः भवति, विश्वजिता च विश्वाधिपतिर्भवति। एतेषामनुष्ठानेन तारतम्येन राष्ट्राधिकारलाभादपि तेषु अनुष्ठानेषु एव अभिषिक्तानां अधिपानां स्वराज्यं प्रति स्वप्रजापुञ्जं प्रति च संरक्षणाभ्युदयादिकर्तव्य– पालनशपथस्यापि ग्रहणम् अवश्यं कर्तव्यमिति विहितं दृश्यते । राजनीतिविधायकमालोचनं मनुप्रभृतिविरचितेषु विंशतिसंख्यापरिमितेषु स्मृतिशास्त्रेषु अपि समुपलभ्यते । विशेषतः मनुसंहितायाः सप्तमाध्याये तथा याज्ञवल्क्यस्मृतौ आचाराध्याये राजधर्मप्रकरणे सविस्तारं वर्णितमस्ति । प्रख्यातेषु राजनीतिशास्त्रेषु बृहस्पति–शुक्राचार्य–कामन्दक– कौटिल्य–प्रमुखविरचितेषु वैशद्येन प्राक्तनाचार्यमतोपन्यासपूर्वकं सुनिबद्धं राष्ट्रतत्त्वं समुपलभ्यते ।

महापुराणेषु उपपुराणेषु च राजनीतिशास्त्रमधिकृत्य विमर्शः सविशदम् अस्माभिः उपलभ्यते । तेषां संग्रहेण आलोचनमपि बृहदायतनं स्यात् । महाभारते आर्षमहाकाव्ये विशेषतः शान्तिपर्वणि राजनीतेः अर्थनीतेश्च द्वयोरेव सुविस्तृतमालोचनम् अस्माकं दृष्टिपथं अवतरति । रामायणे अपि तथैव। अतः जानकीहरणमहाकाव्ये जानकी– जीवनमहाकाव्ये च राजधर्मविवरणस्य उपस्थितिः अवश्यमेव सम्भावनापक्षं न परिहरति। कोशलाधिपतेः दशरथस्य पुत्रः रामचन्द्रः राज्याभिषेकव्याघातात् प्रत्यवायवशात् निर्वासितोऽभूत्। तदनन्तरं रावणवधादिकर्म परिसमाप्य अयोध्यां प्रत्यागत्य राज्ये राजरूपेण अभिषिक्तः बभूव । तत्र च बालिवधेन किष्किन्धाराज्ये सुग्रीवस्य अभिषेचन, तथा च रावणवधात् अनन्तरं विभीषणस्य राज्याभिषेकः तत्र तत्र प्रदर्शितः । यथा कोशलदेशाधिपतिः आदौ पिता दशरथ पश्चाच्च पुत्र रामचन्द्रः एवं मिथिलाधिपति जानकीजनकः राजर्षिजनकश्च महाकाव्यद्वये सार्वभौमनरपतिरूपेण यथाशास्त्रमभिषिच्य स्थापितः । वशिष्ठेन शतानन्देन च ऋषिणा पृथक् पृथक् सर्वेषां दशरथ–रामचन्द्र– राजर्षिजनक – बालि–सुग्रीव – रावण – विभीषणेति राज्याधिपानां सामान्यविशेषतश्च राज्याभिषेकपूर्वकं राज्याधिकारं प्राप्य राजधर्मपालनप्रक्रिया समासता व्यसतो वा समुल्लिखिता प्राप्यते । एतेषां राज्ञां राजनैतिकव्यवहारा आलोच्यमहाकाव्यद्वयतः समुदाहृत्य समीक्षणम् इष्टम् । विंशतिसर्गात्मके जानकीहरणमहाकाव्ये प्रायेण सर्वत्र, एवं एकविंशतिसर्गात्मके जानकीजीवने च तत्र तत्र प्रासंगिकतया वर्णिता उपात्ता च राजनीतिः कदाचित् ऋजुणा मार्गेण क्वचित् च कुटिलगत्या घटनाचक्रान्तर्वर्तितया प्रवहति स्म इति उपलब्धुं शक्नुमः वयम् । अस्मिन्न् क्षणे ग्रन्थ–गौरवभिया सविस्तरं सोदाहरणं च तत् राष्ट्रतत्त्वस्वरूपं वर्णयितुं प्रेरणाविमुखा वयमिति सर्वं सहृदयविदुषां करुणार्द्रचित्तानां स्नेहदृष्टिं अस्मान् प्रति अपेक्षामहे ।

वाल्मीकीयरामायणं कुमारदासीयजानकीहरणम् अभिराजराजेन्द्रमिश्रप्रणीत– जानकीजीवनं च त्रिवेणी संगमरूपं महातीर्थस्थानमिति प्रतिभाति अस्माकं चित्तदर्पणे । वाल्मीकीयरामायणतः प्रेरणाप्रस्रवणधारा कविवरस्य कुमारदासस्य अभिराजराजेन्द्र मिश्रस्य च हृदयबुद्धिकन्दरमवगाह्य शाखाद्वयेन विभज्य कालव्यवधानेन जानकीहरणं जानकीजीवनञ्चेति नाम्ना प्रख्यातेन महाकाव्यद्वायरूपेण विवर्तितं विपरिणतं च परिलक्ष्यते। महाकाव्यद्वये चेतनास्रोतसा बहुनि सामाजिको– पादानानि तरंगभंगलीलया लिलायितानि समुपलभ्यन्ते । तेषु उपादानबहुलेषु राष्ट्रतत्त्वचिन्तनं पर्यवेक्षणविषयतया साम्प्रतम् अस्माकम् ईप्सिततमम् । राष्ट्रतत्त्वे राजनीतिविषयः राजधर्मो वा प्रधानतया प्रतिपाद्यः उपलभ्यते। आलोच्यमहाकाव्यद्वयेविदेह – कौशल – लङ्काराज्यभूमिश्चेति राज्यत्रयं मुख्यतया राजनीतितत्त्वसमीक्षणे समुपस्थितं भवति । गौणतया च मुख्यवृत्तान्तसम्बद्धतया किष्किन्धाऋष्यमूकप्रसङ्गोऽपि उपेक्षितुं न शक्यते । राष्ट्रतत्त्वे भूमण्डलगतस्य विशिष्ट भूखण्डस्य जनसमाजस्य प्रभूत्वस्य च सम्बन्धः संयुक्तः समुपलभ्यते । राष्ट्रशासनतन्त्रस्य सार्वभौमस्वातन्त्र्यम् अर्थात् एकातपत्रप्रभूत्वम् ईप्सितमेव । कदाचित् कुत्रचित् च एतद् तथा न भवति । सामन्तनृपादीनां सार्वभौमराजादधीनत्वात् तेषां सार्वभौमस्वातन्त्र्यं न भवितुम् अर्हति । वाल्मीकीयरामायणे आलोच्यमहाकाव्यद्वयेऽपि समाजतन्त्रस्य

गणतान्त्रिकस्य प्रजातन्त्रस्य वा प्रवर्तनं प्रचलनं वा दृष्टिपथं नावतरति । राष्ट्रपरिपालकरूपेण शासनव्यवस्थाया: प्रवर्तकरूपेण उत्तराधिकारबलेन अथवा प्रजागणद्वारा निर्वाचमुखेन यो भवति राज्यशासक: स एव राजा इति अभिधीयते राजनीतिशास्त्रेषु । अत्र राज्ञ: राज्यप्रशासनं निर्धारितनीतिवलेनैव प्रचलति स्म । स एव राजधर्म: इति पारिभाषिकशब्देन परिचीयते ।

जानकीहरणमहाकाव्ये जानकीजीवनमहाकाव्ये च राष्ट्रतत्त्वसमीक्षणं कार्यम- स्माकम् । कालक्रमानुरोधेन पूर्वभावित्वात् जानकीहरणस्य राजनीतितत्त्वपर्यवेक्षणम् आदौ निष्पाद्यम्। रघूणाम् अन्वये वर्तमानस्य अजनन्दनदशरथस्य' समृद्धायाम् अयोध्यानगर्यां प्रजाशासनचरितचित्रणं रम्यं बुद्धिवेद्यञ्चेति वर्णितं कविना । कौशलराज्यस्य राजधानी अयोध्यानगरी । तत्राभिषिक्त: राजा दशरथ: । स हि शास्त्रानुगामी इन्द्रियजयी प्रजाहितव्रती विजीगिषुश्चेति । स हि नीत्यनुसारत: निर्धारितेभ्य आयस्थानेभ्य: करादानेन जातिवर्णनिर्विशेषं प्रजानां दु:खहर्ता गुरुवशिष्ठेन सह तथा अष्टसंख्यकोपेतमन्त्रिमण्डलीतोऽपि मन्त्रणापूर्वकं राज्यशासनकार्यनिर्वाहकर्ता परराज्य- विजयेन प्रभूतधनरत्नसंग्रहकारी स्वप्रजानां हितकारीति प्रतीयते ।' मृगयाव्यसन्यप्यसौ राजा दशरथ: दिग्विजययात्राया' समधिक: समुत्सुक: आसीत्। तत एव कोशलराष्ट्रस्य प्राच्यां दक्षिणस्यां च दिशि नृपतेस्तस्य दिग्विजययात्रा प्रारब्धा । चतुर्दिगन्तेषु तस्य विजयघोष: समजनि। विजितनृपतिभ्य: अपरिमेयसम्पदमाहृत्य राज्ञ: दशरथस्य अयोध्यायां प्रत्यावर्तनं राजमहिम्न: प्रद्योतकम् । एतेन परराज्याधिकारेण राज्यसीमाविवर्धनं धनरत्नादिवैभवसंग्रहणं च राजचक्रवर्तिहेतुकम् इति । राजनीतिशस्त्रे विजिगीषु नृपते: तथा सामान्यत: द्वादशात्मकराजमण्डलस्य विषय: उपपादितो दृश्यते । यागाद्यनुष्ठानं राजकर्तव्यं भवति प्रजाहिताय । राज्यशासननैपुण्ये अस्त्रविद्यया सह शास्त्रविद्याया: अपि अभ्यास: कर्तव्य: । अत: चतुर्थसर्गे रामं प्रति राजकर्तव्यतोपदेशकुशल- राजनीतिज्ञानस्य परिचायक: । राज्ञ: दशरथस्य चतुर्थसर्गे युद्धविषयमाश्रित्य औचित्यानोचित्यविचार: उत्थापित: । तत्रविश्वशान्तिप्रयोजनहेतुकं युद्धमपि अनिवार्य भवति क्वचित् कदाचित् चेति सिद्धान्त: उपलभ्यते । पञ्चमसर्गे राक्षसै: सह रामस्य युद्धं वर्णितम् । तत्र राजनीतिशास्त्रोक्तं युद्धकौशलं प्रतिविम्बितं दृश्यते । अपि च धनुर्धारिण श्रीरामचन्द्रस्य धनुर्विद्याया: युद्धक्षेत्रे शत्रुवधे प्रयोगकौशलमपि प्रदर्शितमास्ते । अत्र वैशम्पायनविरचिते नीतिशास्त्रे नीतिप्रकाशिकायां द्वितीयाध्याये धनुर्वेदविद्याविषयकं तत्त्वविवरणम् अवधेयम्।' जानकीहरणस्य षष्ठसर्गे नीतिशास्त्रसम्मत करादानव्यवस्थाया: ' संकेत: उपलभ्यते । तत्रैव वृद्धावस्थायां राजभृत्यानां भरणपोषणकर्तव्यतोपेश: समुपलभ्यते । दरिद्रान् प्रति औदार्यं भरणपोषणव्यवस्थाकरणमपिराज्ञ: कर्तव्यम् इत्यप्यनुशासनमुपलभ्यते । शत्रूणामपि स्त्रिय: प्रति रक्षाभारवहनं राज्ञ: कर्तव्यपक्षे औचित्येन वर्तते इत्यपि समुल्लिखितम् । नवमसर्गे क्षत्रियनृपतीनां धनुर्विद्याभ्यासपरिचय: उपलभ्यते । दशमसर्गे राज्ञ: दशरथस्य राज्यशासननीति: वर्णिता । तत्र विजयाभिलाष: राजनीतेरङ्गमिति प्रतीयते । शत्रुमित्रोदासीनसम्बद्धराजमण्डलस्य उल्लेख: दशमे सर्गे एव सम्प्राप्यते । साम-दान-भेद-दण्डचतुष्टयस्य सुविहितप्रयोग: राजनीतेरङ्गम् । एतत्प्रसङ्गेनषाड्- गुण्यनीतिरपि उपयुज्यते । आदर्शराजनीतिविषयकमन्त्रणा - पूर्वकराजनीते: प्रयोग: साफल्यप्रदायको भवति ।

चतुर्थसर्गे श्रीरामचन्द्रस्य ताडकादिराक्षसवधकार्यं नीतिमूलकं क्षात्रशौर्यविज्ञापकं सर्वजनहितकरञ्चेति प्रतीयते । पितु: सकाशात् विश्वामित्रसान्निध्यतश्च अस्त्रशस्त्रादि- विषयकं राज्यशासनविषयकञ्च अनुशासनं तेनाधिगतम् ।

उत्तरकाले सुग्रीवादिभि: सह मैत्रीबन्धनं किष्किन्धाधिपते: वानरराजस्य बालिन: हननं श्रीरामचन्द्रस्य राजनीतिज्ञानस्य परिचायकम् । चतुर्दशसर्गे नीतिज्ञवानरप्रधानै: सह सीतान्वेषणविषयकम् आलोचनं रामचन्द्रस्य राजनैतिकप्रज्ञासूचकमेव । पञ्चदशसर्गे लङ्काप्रवेशनिमित्तं साम-दान- भेद - दण्डरूपात्मकस्य उपायचतुष्टयस्य प्रयोगनीति : राजनीतिरेव अङ्गभूता। ततश्च लङ्काधिपतिना रावणेन सह युद्धप्रसङ्गे आदौ दूतसंप्रेषणं पश्चाच्च युद्धोद्यम: । युद्धविजयश्च अभिज्ञराजनीतितत्त्वज्ञस्य युद्धविशारदस्य च नीतिनैपुण्यपरिचायक: इति प्रतिभाति । पञ्चदशसर्गे एव दूतरूपेण प्रेषितस्य अङ्गदस्य रावणराजसभायां राजनैतिक भाषणं रावणमातामहस्य नीतिज्ञमाल्यवत: सामद्युपाय- चतुष्टयमूलकं षाडगुण्यप्रयोगमूलकं भाषणं च अभिज्ञराजनीतिविज्ञानस्य परिचायकम् एवेति प्रतीयते। सप्तदशसर्गे औचित्येन राजनीतौ प्रवर्तमानस्य रामस्य परिचय: उपलभ्यते। प्रसङ्गेन अनेन रामस्य उन्नतराज्यप्रशासनपरिचयस्य उपलब्धिरपि पञ्चदशसर्गे वर्णिता अस्ति ।

लङ्काधिपतिरावणस्य सभाभवने सभासदाम् उपस्थिति: आलोचनं तथा रणनीतिकौशलमपि सर्वमेव राजनीतिविषयकमेवेति । अष्टादशसर्गे लङ्काकायुद्धं वर्णितम् । तत्रैव अखण्डवीरता राजनैतिकव्यवहारकुशलता च वर्णिता अस्ति । तत्रैव च सर्गे आपदां प्रतीकारस्य च प्रसङ्ग:

उत्थापित: । एकोनविंशसर्गे रावणबधानन्तरं रामकर्तृक- सुग्रीवस्य राज्याभिषेक: वर्णित: । तदनन्तरं विंशतितमे सर्गे श्रीरामचन्द्रस्य अयोध्या-प्रत्यावर्तनं तस्य राज्याभिषेकश्चेति महाकाव्यस्य समाप्ति समुद्घोषयति । एवं विंशतिसर्गात्मकस्य जानकीहरणमहाकाव्यस्य संक्षेपत: राजनैतिकशास्त्रानुसारत: राजनैतिकतत्त्वसमीक्षणे अस्माकं प्रयत्न: प्रद्रशित: । '

जानकीजीवनम् -

एकविंशतिसर्गात्मकं जानकीजीवनं नाम महाकाव्यं विरचितं कविना अभिराज - राजेन्द्रमिश्रेण। महाकाव्येऽस्मिन् राजनैतिकोपादानानुसन्धानमस्माकमभिप्रेतम्। राज्यशासन- तन्त्रविषयकमालोचनमत्र मुख्योद्देश्यतया वर्तते । राज्यभूमि: प्रजासमूह: राज्यप्रशासनकर्ता च परस्परं सम्बन्धविशेषेण सम्बद्धा भवन्ति । नियन्तु: शासकस्य अभावात् कस्मिन्नपि भू-खण्डे वसतां जनानां भोग: न सम्भवति । परस्परसंघर्षेण बलवता दुर्वलस्य समुत्पीडनं भवत्येव। अत: समुत्पीडिता: जना: वास्तुच्युता: सन्त: सपशुद्रव्यसञ्चयमपि बलवत् पीडकहस्ते निक्षिप्य कदाचित् प्राणानोऽपि परित्यज्यन्ति कदाचिच्च जीवन्तोऽपि इतस्तत: भयात् परिभ्रमन्त: क्लेशसन्ततिमनुभवन्ति । अत: हेतो: विशिष्टभू- खण्डवर्तिनां सर्वेषां जनानां रक्षणविधानाय कस्यचित् अस्य भू-खण्डस्य प्रजाजनस्य च नेतृरूपेण पालक: आवश्यको भवति । अत: प्रजानां कल्यानहेतो: निर्दिष्टभू-खण्डस्य भूपालस्य च सुतरामेव आवश्यकतास्ति । अत्रैव राज्यशासकस्य राज्ञ: समुत्पत्ति: उपलभ्यते । राजा च राष्ट्रपालक: दण्डसहायेन शिष्टप्रतिपालनं दुष्टदमनं च विदधाति ।

जानकीजीवनमहाकाव्ये प्रथमसर्गे विदेहराज्यस्य राजधानी मिथिलेति नाम्ना प्रख्याता आविर्भवति । तत्रविदेहाधिपति: निमिनन्दन: सीरध्वज:' (राजर्षिजनक :) समागतां दैवीम् आपदं प्रतिकर्तुम् उद्वेगाकुल: समुपलभ्यते । दु:खसहस्राणां भुञ्जानानां प्रजानां जीवनयन्त्रणाम् असहमान: शोकदीर्णहृदय: राजर्षिजनक: प्रधानामात्येन सह मन्त्रणापूर्वकं गौतमपुत्रस्य गुरुशतानन्दस्य तपोवनं गत:। गुरो: शतानन्दस्य उपदेशेन आपत्प्रतीकाराय यज्ञमियेष विदेहराज: सीरध्वज: । यज्ञप्रसङ्गेन हलकर्षणमुखेन सीताया: उपलम्भ: । अत: विदेहराज्यं तस्य राजधानी मिथिला मिथलाराज्यस्य प्रजाजना : विदेहराज: राजर्षिजनक: प्रधानामात्य: राजपुरोहित: गौतमपुत्र: गुरुशतानन्द: इत्येति विषया: परस्परं राजनैतिकेन सम्पर्केण राज्यशासनसूत्रेण च प्रजारक्षणविधानसम्बन्धेन च समुपस्थापिता । चतुर्थसर्गे कोशलराज्यस्य राजधानी अयोध्येति विश्रुता लोके इति समुपवर्णिता । तत्र कोशलराज: अजन्दनदशरथ: तस्य प्रधानामात्य: सुमन्त्रश्च निरन्तरं राज्यस्य प्रजानां च मङ्गलार्थिनौ । एताभ्यां सह गुरुमहर्षिवशिष्ठ: अपि राज्यमङ्गलव्रत नित्यदीक्षितो दृश्यते। अत्र राजामात्यपुरोहितरूपसम्बन्ध - विशिष्टाराजनैतिकसम्बन्धस्य बलवती चित्ररेखा अस्माकं दर्शनमथमवतरति । सप्तमसर्गे मिथिलायां स्वयम्बरमहोत्सवे रामकर्तृकहरधनुभङ्ग: क्षत्रियराजपुत्रस्य धनुर्विद्यापाटवं सूचयति । पुनरपिनवमसर्गे अयोध्यापुर्या: वैभवातिशयपरिचय: वर्णितो दृश्यते । दशमसर्गे राज्ञ: दशरथस्य रामचन्द्रमधिकृत्य राज्याभिषेकचिन्ता समुदिता ।' दशमे च सर्गे राज्याभिषेके अन्तराय: समुद्गत:। फलत: ससीतालक्ष्मणरामचन्द्रस्य वनवासयात्रा परिलक्ष्यते । एकादशे च सर्गे जानकीहरणं, द्वादशे च अशोकवने सीताया: अवस्थानम् । त्रयोदशे सर्गे सीतानुसन्धाने रामस्य ऋष्यमूकपर्वते गमनं, सुग्रीवेण सह मैत्रीस्थापनं तत: वालिबध: तत: सीतान्वेषणे सुग्रीवकर्तृकवानरसैन्यसम्प्रेषणम्, हनुमता च अशोकवाटिकायां सीतादर्शनम् इत्येवं वृत्तान्तजातं समुपलभ्यते । चतुर्दशसर्गे वानरसैन्यै: सह रामस्य लङ्काप्रवेश: ततश्च लङ्कायुद्धं रावणविनाशश्च संभृत्य: । ततश्च पञ्चदशसर्गे रावणबधादन्तरं आर्यधर्मस्य पुन: प्रतिष्ठा, विभीषणस्य च राज्याभिषेकश्च सम्पादित: श्रीरामचन्द्रेण । राज्याभिषेकसमकालञ्च विभीषण: श्रीरामचन्द्रस्य सचिवरूपेण नियुक्त: अभूत् इत्यपि वार्ता एकविंशतितमे सर्गे उपलभ्यते । पञ्चदशसर्गे एव सीताया: अग्निपरीक्षा दृश्यते । षोडशसर्गे धर्मानुसारत: विभीषणं प्रति लङ्काशासनस्य उपदेश: श्रीरामचन्द्रेण । तत: श्रीरामचन्द्रस्य सीतया लक्ष्मणेन च सह अयोध्यायां प्रत्यावर्तनम् । ततश्च राज्याभिषेक: रामस्य अत्रैव सर्गे वर्णित: दृश्यते । राजनैतिकदृष्ट्या प्रथमसर्गे चतुर्थसर्गे नवमसर्गे अष्टादशसर्गे एकोनविंशतितमे सर्गे च कोशलाधिपते: दशरथस्य शासनतन्त्रस्य शिष्टपरिचय: उपलभ्यते। राज्ञ: दशथस्य आसन् अष्टसङ्ख्यका मन्त्रिण: मन्त्रणाकार्येषु सातिशयं निपुणा: । पुरोहितानां मध्ये महर्षिगुरुवशिष्ठ: आसीत् प्रधानतम: । सुमन्त्र: आसीत् राज्ञ: दशरथस्य प्रधानमन्त्री, सर्वविधराजकार्येषु नितरां निष्णात: । प्रजापालनं राज्यस्य अन्तर्वहि सुरक्षाव्यवस्थासम्पादनं च उक्तानाम् अमात्यानां गुरुवशिष्ठप्रमुखानां च मन्त्रानुसारत: सुसिद्धं भवतिस्म । दैवी मानुषी च आपत्प्रतीकार: अमात्यानां ऋत्विजानां च साहाय्येन अपाकृतं समुपलभ्यते । अत: नृपते: दशरथस्य आदर्शराज्यशासनपद्धति:' प्रजानां हिताय सुखाय च निरन्तरं जागरूका

आसीत् इति प्रतीयते। विदेहराजस्य सीरध्वजस्य राज्यमपि प्रजानां शान्तिसुखसम्पत्तये एव कल्पते स्म । सर्वापदां प्रतीकारे प्रधानामात्यस्य अन्येषां च धी- सचिवानां कर्मसचीवानां तथा प्रधानपुरोहितस्य गौतमपुत्रस्य गुरुशतानन्दस्य साहाय्यं सातिशयं हितकरम् अभवत् इत्युपलभ्यते । राजर्षिजनकस्य रामसीतयो: विवाहबन्धनेन राज्ञा दशरथेन सह सम्बन्धस्थापनं राजनैतिकप्रज्ञाया: एव परिचयं सूचयति । प्रजानाम् आपत्प्रतीकारे समुत्कण्ठा उपयुक्तोद्यमश्च लोकतन्त्रस्य प्रतिनिधिरूपेण विदेहाधिपते: न केवलं प्रशासनपटुत्वम् अपि तु प्रजाकल्याणव्रतित्वमपि विज्ञापयति । अत: राजर्षिजनकस्य राजचरित्रमहिमा समुज्ज्वलेति प्रतिभाति । श्रीरामचन्द्रस्यापि राज्यशासनकौशल: प्रकर्षस्य चरमकोटिमधिरोहति। तस्य सुशासनफलं प्रजानां शान्तिसुखदायकमित्येवं चित्रं कविना आलिखितं प्रतीयते जानकीजीवनमहाकाव्यस्य विंशतितमे सर्गे । तत्रैव सर्गे अश्वमेध - यज्ञानुष्ठानप्रसङ्गात् श्रीरामस्य विजिगीषा स्पष्टत: प्रतिभाति । अनुष्ठानेन अनेनय ज्ञफलरूपेण यज्ञफलभोक्ता यजमान: श्रीरामचन्द्र: कुलाधिराजपदे राजचक्रवर्तिपदे वा अभिषिक्तोऽभूत्। अश्वमेधयागे आमन्त्रिता: अभूत् भारतवर्षस्य अन्तर्वर्तिनस्तथा वहिर्वर्तिनश्च राजान: । अयमपि शिष्टाचार: राजनैतिकप्रज्ञापरिचायक : प्रतिभाति । अश्वमेधयागद्वारेण स्वाधीननृपतीणामपि अधीनतापाशेन सामन्तिकीकरणं तेभ्यश्च धनरत्नादिबहुमूल्यद्रव्याणाम् आहरणं राज्ञ: श्रीरामचन्द्रस्य स्वराजपदमर्यादावि - बृद्धिकरं कोशसञ्चयोन्नयनसम्पादकं च भवत: तथैव प्रजानां हिताय आहतानां धनानां विनियोग: प्राचीनभारतीयार्यराजनैतिकसंस्कृते: महिमानमेव द्योतयति । एकविंशतितमे सर्गे पुनरपि अयोध्यावर्णनप्रसङ्गेन कोशलराज्यस्य सुशासनस्य तत्फलतस्य प्रजानां सुसमृद्धे: वर्णनं समुपलभ्यते। तत्रैव कोशलाधिपते: दशरथस्य रामचन्द्रस्य वा अष्टसङ्ख्यकानाम् अमात्यानां वर्णनं समुपलभ्यते । अत्रैव च सर्गे ऋत्विजानामपि अष्टसङ्ख्यकानां समुल्लेख: दृश्यते। अयमपि रामराज्यकालीनराजनैतिकव्यवस्थापरिचायक एव । अष्टादशसर्गे सीताविषयकजनापवादप्रसङ्गेन लोकतन्त्राधिपते: प्रजानुरञ्जकस्य श्रीरामचन्द्रस्य जनमतं प्रति सम्मानपुरस्कृतम् आस्थाप्रदर्शनं गणतान्त्रिकमूल्यवोधस्य परिचायकमिति प्रतीयते । रामराज्यस्य महिमा लोकतन्त्ररूपेण कियान् आसीत् तस्योपलब्धि एक विंशतितमसर्गस्य अन्तभागे गुरुवशिष्ठेन अभिभाषिता ।

धीवरराजगुहेन सह मैत्री सुग्रीवेण सह च मैत्री राक्षसवधेन ऋषीणां तपोवनानां वनवासिनां च सर्वेषाम् रक्षाविधानं श्रीरामचन्द्रस्य महनीयकीर्ते: उज्ज्वलतमम् उदाहरणम् अत्र राजकर्तव्ये क्षात्रतेजस: प्रदर्शनं दुर्लभमिति राजनैतिक क्षेत्रेऽपि सुतरामेव अभिमतम्। रावणवधेन सीतोद्धारेण च राजधर्मस्य न्यायनीतिनिष्ठस्य आर्यधर्मस्य च श्लाघनीयपदम् उत्तुंगम् आरोहति। युद्धप्रसङ्गे नचतुरङ्गसेनापति: च अवश्यमेव अपेक्षते । तत्र साम-दान-भेद - दण्डप्रमुखोपायचतुष्टयस्य' षाडगुण्यस्य च प्रयोग: युद्धविजये अपरिहार्य: । चतुरङ्गसेनाया: युद्धक्षेत्रे व्यूहरचनाऽपि अपेक्षितैव।' पुरुषार्थचतुष्टयसाधनं तु राज्यशासनस्य मूलमन्त्र: । अवसानत: प्रजासुखे राजसुखं प्रजाहिते राजहितम् इत्येव रीति: श्रीरामराज्ये विराजित: उपलभ्यते । जनमतम् समादृतं न कदापि उपेक्षितम् इत्यपि परिलक्ष्यते जानकीजीवनमहाकाव्येऽस्मिन् । अत्र कविवर्यस्य अभिराजराजेन्द्रमिश्रस्य राजनीतिविषये विशेषाभिधित्सा सुस्पष्टं प्रतिभाति । जानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययो: तुलनात्मकसमीक्षणम्-

जानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययो: नामकरणभेदेऽपि मूलाख्यानं यत् वाल्मीकीयरामायणान्तर्गतं तदेव कवियुगलस्य स्वाभिप्रायानुसारत: प्रसृतम् उपलभ्यते । मूलरामायणस्य काण्डषट्कमाश्रित्य महाकाव्यद्वयं विरचितम् । महाकाव्यद्वये अयोध्यायां राज्ञ: दशरथस्य तदनन्तरं श्रीरामचन्द्रस्य राज्यशासनचित्रं तथा मिथिलायां मिथिलाधिपते: जानकीजनकस्य राज्ञ: सीरध्वजस्य राज्यशासनं प्रजानाम् अनुरञ्जने कल्याणसाधनेन च प्रवर्तमानम् दृश्यते। लङ्काधिपते: रावणस्यापि स्वराज्यशासनं राक्षसहिताय वै परिकल्पितं समुपलभ्यते। यथा अयोध्यायां तथैव लङ्कायामपि वैभवसीमा उच्चतमकोटीम् अधिरोहति स्मेति परिलक्ष्यते । तथापि अयोध्यायाम्र राजशासनं लोकतन्त्रानुगतं जनहितकरं न्यायधर्मप्रतिष्ठामूलकम् आर्यधर्मानुगतमेवेति अनुभूयते । लङ्कायां तु आर्यधर्मद्वेषिण: राज्ञ: रावणस्य अपरिमेयवैभवाधिकारिणोऽपि सुनीति विमुखतया दुष्कृतौ प्रवृत्ति: प्रदर्शितेति स्पष्टं प्रतीयते । राजनीतिमार्गे साङ्गोपाङ्गराजनीतिविषयकोपादानसाहित्यम् अयोध्यायां लङ्कायां च उभयत्र समानमेव दृश्यते । परन्तु नीतिमार्गे उपन्यस्त: विषमभेद:। राज्यशासनप्रसङ्गेन राजधर्मसङ्गतानि उपादानानि समानतन्त्रन्यायेन जानकी- हरणाख्ये महाकाव्ये जानकीजवनाख्ये महाकाव्ये च उपस्थापितानि । तथापि जानकीजीवनमहाकाव्यस्य निर्मातु: कविवर्यस्य ख्रिष्टीयविंशशतके लब्धजन्मन: रामराज्यपरिकल्पनायां रामराज्यशासननीतौ आर्यधर्मप्रतिष्ठायाम् अधिकतम: समुत्सुक: परिलक्ष्यते। महाकाव्यद्वयस्य नामनिर्देशक: कविकुमारदासस्य जानकीहरणविषये कवे: अभिराजराजेन्द्रमिश्रस्य च जानकीजीवनविषये पक्षपात: सुस्पष्टं प्रतीयते । अत: महाकाव्यद्वयस्य न

केवलं मुख्यप्रतिपाद्यविषयगतदृष्टिभेद: अपि तु राज्यशासनस्य उद्देश्यगतदृष्टिभेदोऽपि परिलक्ष्यणीय । राज्यशासननीतौ कविकुमारदासस्य नीतिशास्त्रानु- सारत: राजधर्मपालने एव आदर्शप्रतिष्ठा उपलभ्यते । परन्तु कविवरराजेन्द्रमिश्रस्य राजनीतौ आर्यधर्मानुकुलराजधर्मप्रतिष्ठैव आदर्शरूपेण प्रतिभाति। एतद्विषये विद्वत्तल्लजानां कविवर्याणां तत्रभवताम् अभिराजराजेन्द्रमिश्राणां स्वाभिमतानुगादर्श: जानकीजीवन- महाकाव्यस्य पञ्चदशसर्गस्य सप्तमश्लोके महता कण्ठेन समुद्घोषित । तदनन्तरमपि रामराज्यप्रतिष्ठादर्शोऽयम् एकविंशतितमसर्गे रघुकुलगुरुश्रेष्ठ: महातापस: सर्वज्ञकल्प: महर्षिवशिष्ठमुखादपि वैशद्येन समुपस्थापित: ।'

जानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्ययो: राजनैतिकावस्थापर्यालोचनाप्रसङ्गात् उभयोरुद्भवसूत्रस्थनीयं वाल्मीकीय रामायणं यथास्माकं स्मृतिपथमवतरति तथैव महाकविकुमारदासात् प्राग्भूतं कालीदासीयं रघुवंशं भट्टिविरचितं रावणवधाख्यं महाकाव्यं च । मनोभूमौ उद्दीपकदीपालोकरूपेण समुपतिष्ठते । ऊनविंशसर्गात्मके रघुवंशे रघुवंशीयानां नृपतीनां दिलीपमारभ्य अग्निवर्णं यावत् राजत्वकालपरम्परा चित्रिता दृश्यते। रघुवंशमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गे सप्तदशसङ्ख्यकश्लोकमारभ्य त्रिंशत्सङ्ख्यकश्लोकपर्यन्तं नृपतिदिलीपप्रसङ्गेन रघुवंशीयानां राज्ञां राजधर्मविद्भि: मनुप्रभृतिभि: मान्यम् आदर्शराजनैतिकाचरणं समुल्लिखितमुपलभ्यते । दशरथराज्यशासने श्रीरामचन्द्रस्य राज्यशासने अपि अयमेव राजधर्मव्यवहार: अनुसृत: । मनुप्रभृतीनां राजधर्ममार्गमुल्यङ्घ्य उत्पथेन दशरथो वा श्रीरामचन्द्रो वा न कदाचित् प्रवर्तते स्म । भट्टिकाव्येऽपि राजधर्माचरणे अयमेव सुनीतिमार्ग: अवलम्बित: । एतादृशी राजधर्माचरण- व्यवस्था कविकुमारदासीयजानकीहरणमहाकाव्ये तथा कविवर्यस्य अभिराजराजेन्द्रमिश्रस्य महाकाव्येऽपि द्रष्टुं पार्यते । प्रसङ्गोऽयं शोधकार्यस्य विस्तरभिया नेह प्रतन्यते । अनल्पजल्पनात् विरतापि रामायणकथाश्रिताय : विचित्ररूपाखिलकाव्यसृष्टे: प्रभवस्थानरूप-वाल्मीकीयरामायणसम्पृक्तं राजधर्माचरणं समासत: प्रदर्शयितुं इच्छामि ।

सप्तकाण्डात्मकं रामायणं महर्षिवाल्मीकिविरचितम् । सर्वेषामेव महाकवीनां हृदयतन्त्रमालोडयति। शाश्वतकालीनावेदनममूलकमिदं महाकाव्यं देशकालसीमामतिक्रम्य सर्वमानवानां मनोभूमौ सुदृढरूपेण स्वाधिष्ठानं स्थापयितुं सक्षमम् इत्यत्र न कश्चित् शङ्कावसर:। अत: रामायणस्य आदिकाण्डमारभ्य युद्धकाण्डं यावत् राजधर्मस्य वर्णनं मनु-याज्ञवल्क्यप्रमुखानां राजधर्मनीतिम् अनुसृत्यैव प्रवर्तनं दृश्यते । उत्तरकालीनानां शुक्राचार्य-कामन्दक- कौटिल्यादीनां राजनीतिशास्त्रान्यपि तत्र समानुगतानि समुपलभ्यन्ते । अत: मनु-याज्ञवल्क्यादिनिबद्धेषु स्मृतिशास्त्रेषु राजधर्मप्रकरणे तथा शुक्राचार्य-कामन्दक- कौटिल्यादि प्रणीतेषु राजनीतिशास्त्रेषु सर्वत्र राजनैतिकव्यवस्थाया: वर्णितं यच्चित्रमुपलभ्यते तदेव वाल्मीकीये रामायणे काण्डपट्के सुस्पष्टं सुविशदं च आख्यानप्रवाहगतिमुखेन प्रासङ्गिकतया समुल्लिखितं प्राप्यते । बहुमुखविचित्रराजनैतिक- विषयाणां रामायणवर्णितानां पर्यालोचनं विहाय अतिसंक्षेपेण यत् किञ्चिदेव उपात्तविशालराजनैतिकोपादानभाण्डारात् समाहृत्य विशिष्टोदाहरणरूपेण उपस्थापयाम: वयम्। आदौ राजोत्पत्ते: कारणं प्रयोजनञ्चेति वर्णनीयम् । तत एव राजधर्मचर्चा विधेया । आदर्शराजधर्मविधय: अयोध्यानृपते: दशरथस्य तथा राज्याभिषिक्तस्य श्रीरामचन्द्रस्य प्रसङ्गेन रामायणस्य आदिकाण्डे / बालकाण्डे तथा अयोध्याकाण्डे प्रस्तावनारूपेण समुद्दिष्टा उपलभ्यते । अयोध्याकाण्डस्य 67 - तमे सर्गे 38 - संख्यकेषु श्लोकेषु अराजकदोषवर्णनात् राजोत्पत्तिविषय: समुपस्थापित: । अयमेव विषय: मनुसंहितायां सप्तमाध्याये तृतीयश्लोके स्पष्टत: समुल्लिखितो वर्तते । रामायणस्य आदिकाण्डान्तर्गते पञ्चमसर्गे अयोध्यावर्णने षष्ठसर्गे राज्ञ: दशरथस्य राज्यपरिपालनवर्णने सप्तमसर्गे अमात्यवर्णने अष्टमसर्गे अश्वमेधयज्ञवर्णने च कोशलराज्यस्य दशरथाधिष्ठितस्य समृद्धतमं राजनैतिकावस्थावर्णनं समुपलभ्यते । अयोध्यावर्णने उच्चतमराजनैतिकावस्थाकोटित: सम्पद्समृद्धिपरिचयात् आधुनिकनगरसभ्यतापि ततो न्यूनतापन्नेति प्रतीयात् । एवमेव राज्यपरिपालनव्यवस्था धीसचिववर्गसहायेन कर्मसचिववर्गसहायेन च यादृशी प्रचलिता आसीत् इत्युपलभ्यते सा तु आधुनिकानामपि राजनैतिकचेतनासम्पन्नानां जनानां विस्मयमावहेत् । राजनैतिकावस्थाविषयकवर्णनमिदं पूर्वोक्तपञ्चम- षष्ठ- सप्तमाष्टमसर्गेभ्य: विशेषेण ज्ञातव्य: । अयोध्याकाण्डे अरण्यकाण्डे किष्किन्धकाण्डे सुन्दरकाण्डे युद्धकाण्डे च मनु- याज्ञवल्क्यादिवर्णितराजधर्मप्रकरणस्य विषयाणां विस्पष्टोदाहरणानि कथामुखेन तथा मुख्यवृत्तान्तप्रवाहान्तर्गतघटमानविषयतया यथोपयुक्तं यथायुक्तञ्चेति समुपलभ्यते । काण्डषट्कमनुसृत्य उदाहरणमुखेन राजधर्मोपदेशमूलकविषयनिर्देशेन च आलोचनं राजनैतिकव्यवस्थाया: एकं सुरम्यं सुरुचिरं सुनीतिमयं चित्रं स्यादिति मन्यमाना अपि वयं तथा वर्णनात् विरमामह: ।

एतावत्पर्यन्तं कृत्स्नमालोचनं जानकीहरणजानकीजीवनमहाकाव्यद्वयान्तर्गत- राजनैतिकावस्थाया: वर्णनमाश्रित्य स्वातन्त्र्येण व्यष्टिरूपेण तुलनात्मकविचारेण च कृतम् अस्माभि:। पर्यालोचनस्यैतस्य स्पष्टीकरणार्थं याथातथ्येन च समुपस्थापनार्थं प्राचीनराजनीतिशास्त्राणि आलोचितानि ईक्षितानि च वाल्मीकीयरामायणकालदासीयरघुवंश भट्टिविरचितरावणवधाख्यानि महाकाव्यानि भासविरचितनाटकद्वयं भवभूतिविरचितं नाटकुयगलञ्चेति राजनीतिविषयकज्ञानसमृद्धानि । साकल्येन समुदितानां पर्यवेक्षणेन समुद्भासितानां तथ्यानां विवरणेन आलोच्यमहाकाव्यद्वये उपात्तराजनैतिकावस्था ऋजुपथसेविता सुगम्या च प्रतिभाति । अस्मिन् लेखे जानकीहरणजानकीजीवनमहाकव्ययो: उपवर्णिता: राजनीतिविज्ञानविषया: निरुपिता: । तत्र राजधर्म: करनीति:, राष्ट्रशासनम् इत्यादिविषयाणां तुलनात्मकरूपेण विचार: कृत: अस्ति ।

सन्दर्भसूची

1. आचार्य:, पंचाननतर्करत्न: (सम्पादक :), विष्णुपुराणम्, कोलकातायाम् : नवभारतप्रकाशनम्, 1960 बंगाबद: ।
2. उंकारनाथ:, सीतारामदास: श्रीमद्वाल्मिकीयरामायणम् (बंगानुवादसहितम्), कोलकातायाम् : आर्य्यशास्त्र - प्रकाशनम्, 19651
3. गंगानाथ:, मनुसंहिता, देहल्याम् : परिमलपब्लिकेशन, 1992 ।
4. मिश्र:, अभिराजराजेन्द्र:, जानकीजीवनम्, इलाहावादनगर्याम् : बैजयन्त- प्रकाशनम्, 1988।
6. मिश्र:, यदुनन्दन: (सम्पादक :), महाकविकुमारदासविरचितजानकीहरणम् (एकसांस्कृतिक एवं समालोचनात्मक अध्ययन्), राणस्याम् : चौखम्बा ओरियान्टालिया, 1997।
7. शुक्ल:,वेदव्यास: (सम्पादक:), महाकविकुमारदासकृतजानकीहरणम् (प्रथम- द्वितीयसर्गात्मकम्), वाराणस्याम् : चौखम्बा सूरभारती प्रकाशनम्, 1999।
8. सातवेलकर:, श्रीपाददामोदर: (सम्पादक :), ऋग्वेद संहिता (सायणाचार्यकृत- भाष्यसमेतम्), पारडयाम् : वसन्त श्रीपाद - सातवलेकरप्रकाशनम्, 19311
9. सिंह:, सत्यव्रत: (सम्पादक :), विश्वनाथाचार्यकृतसाहित्यदर्पण:, वाराणस्याम्: चौखम्बा विद्याभवनम् ।
10. त्रिपाठी, राधावल्लभ:, संस्कृतकथाशास्त्र और काव्यपरम्परा, देहल्याम्: प्रतिभा प्रकाशनम्, द्विर.सं. 2004 1
11. त्रिपाठी, राधावल्लभ:, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, वाराणस्याम्:
विश्वविद्यालयप्रकाशनम्, तृ.सं. 20101
13. Achāryā, M. Krsnam. History of Classical Sanskrit Literature. Delhi : M.L.B.D. 1970
14. Altekar, A.S. State and Government ofAncient India, Delhi: M.L.B.D. 2001.
15. Altekar, A.S. Position of Women in Hindu Civilization, Delhi: M.L.B.D. 1958.
16. Bandopadhyāyaḥ, Nārāyaṇa. Chandra. Development of Hindu polity and Political Theories. Kolkata: R. Combray & Co. 1927.
17. Banerjee, Pramathanatha. Public Administration in Ancient India. London: Macmillan & Co. 1920.
18. Johari, J.E. Principals of Modern political science. New Delhi: Sterling.2002.
19. Kanjilāl, Dilip. Kumār. ed. Chandomanjarī of Gangādāsa. Kolkātā : Modern BookAgency. 2nd edition, 1970.
1. साहित्यदर्पण: 6/313
2. ऋग्वेदसंहिता, 10/173,174, पृ. 760-761
3. अथर्ववेदसंहिता, 1/6/1-2; 3/1/1-5
4. अथर्ववेदसंहिता, 4/7/1; 6/11/1; 6/13/1

5. ऐतरेयब्राह्मणम् 38/3 पृ. 933-934
6. जानकीहरणम्, 1/12-13
7. तत्रैव, 1/10-11
8. तत्रैव, 1/14
9. तत्रैव, 1/16-251
10. तत्रैव, 1/45-721
11. तत्रैव, 1/16-251
12. जानकीहरणम्, 1/901
13. तत्रैव, 10, 4/67-691
14. नीतिशास्त्रम्।
15. जानकीहरणम्, 6/391
16. तत्रैव 6, 15, 17,18, 19, 20/53-551
17. मनुसंहिता, 7/1-3, 13-151
18. जानकीजीवनम् 4/41
19. तत्रैव, 10/10-111
20. तत्रैव, 10, 15, 21, 18, 20/1-5, 21/154-160,163,1661
21. जानकीजीवनम् प्रथमसर्ग: ।
22. जानकीजीवनम् 21/7-40, अयोध्यावर्णनम्। 21 / 149, कोशलजनपदवर्णम् ।
23. जानकीजीवनम् 21, 13, 18, 21/241
24. मनुसंहिता, 127-171।
25. जानकीजीवनम् 21/241
26. जानकीजीवनम्, 18/44-48, 21/158-1681

Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

अनुसूचितजाति-जनजातिच्छात्राणां शैक्षिकसामाजिकविकासे पर्यावरणस्य महत्त्वम्

प्रमोद कुमार दास
शोधच्छात्रः, शिक्षाविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः

Article Info

Publication Issue :
March-April-2023
Volume 6, Issue 2
Page Number : 95-98
Article History
Received : 07 March 2023
Published : 15 April 2023

शोधसारांशः- पर्यावरणशिक्षायाः अवसरः अतीव वर्तते। तदर्थं छात्राणां पाठ्यक्रमे परिसरशिक्षायाः अवसरः कल्पनीयः भवतीति। विद्यालये दृश्यश्रव्योपकरणानां द्वारा अपि प्रत्यक्षरूपेण पर्यावरणविज्ञानस्य महत्त्वं ज्ञापयितं शक्यते। सङ्ग्रहालयेनापि पर्यावरणशिक्षायाः प्रदानं ज्ञानार्जनं च कर्तुं शक्यते। एवं परिसरशिक्षायाः उपरि विशेषव्याख्यानमालायाः अवसरः कल्पनीयः भवति। एवं सम्पूर्णोचितपर्यवारणसंरक्षणेन अस्माकं जीवनं सफलं भवति।

मुख्यशब्दाः- अवसरः, अनुसूचितजातिछात्राः, जनजातिच्छात्राः, शैक्षिकः, सामाजिकविकासः, पर्यावरणः।

भूमिका भारतीयसंस्कृतौ प्रकृतेः महात्त्वपूर्णस्थानमस्ति। प्रकृतिः आदरणीया पूजनीया च भवति। भारतीयाः प्रतिनित्यं प्रकृतिं पूजयन्ति। वयं मानवाः प्रकृतेः सन्ततिरिति जानीमः। विचारणे ज्ञानं भवति यत् पर्वतः नदी तटाकः शस्यश्यामलभूमिः सुवासितवायुः परिशुद्धजलम् अपेक्षितसौन्दर्यात्मकजीवनं च प्रकृतेः वरमिति। प्रकृतिः अस्माकं माता भवति। मातृवत् अस्मान् रक्षति पालयति च। प्रकृतिः परिस्थित्यनुसारं मातृवत् अध्यापकवत् च मार्गप्रदर्शनं करोति।

सामान्यतः एवम् अभिप्रायः अस्ति गङ्गा पापविनाशिनी भवति इति। गङ्गायाः जलं पवित्रं भवति। यावत् पर्यन्तं गङ्गानद्याः जलप्रवाहः भवति तावत् पर्यन्तम् अस्माकं संस्कृतिः सभ्यता च पुष्पितातथा पल्लविता भवति। किन्तु तस्याः नद्याः जलं दूषितम् अभवत्। तथा मानवानां जीवने उपभोग्यं न भवति। अस्माकं सामाजिकविकासस्य मानदण्डः औद्योगिकीकरणम् अभवत्। औद्योगिकीकरणस्य द्वितीयं नामधेयं भवति वातावरणकालुष्यमिति। दूषितपदार्थैः, कलुषितजले, औद्योगिकविषपूरितवस्तुभिश्च वातावरणं विषपूरितं जायमानम् अस्ति। तथा पर्यावरणमपि अस्माकं सम्पूर्णजीवनविकासे प्रतिबन्धकम् अभवत्। न केवलं जलसम्पत्, किन्त वनसम्पदपि कालुष्यं प्राप्नोति। यतः वनसंरक्षकाः एव वनभक्षकाः जाताः। न केवलं वनसम्पदः विषये किन्त वन्यमृगसंरक्षणस्थानेऽपि वन्यपशूनां घातकाः भक्षकाश्च जाताः। एतादृशव्यवहारेण पर्यावरणं दूषितम् अभवत्। ततः पर्यावरणे समतुल्यता नास्ति। एवम् अस्माकं जीवने परिशुद्धजलं स्वच्छवायुः च न मिलति। स्वास्थ्यमिति समीचीनं नास्ति। तेन जीवनं सम्पूर्णं न भवति।

पर्यावरणशिक्षायाः अर्थः- पर्यावरणशिक्षा पर्यावरणमाध्यमेन, पर्यावरणविषये पर्यवारणसंक्षणाय भवति। पर्यावरणं चेतनाचेतनयोः शिक्षाप्रदायिन भवति। यथानुकूलं पर्यावरणस्य उचितप्रकारेण अनुपयोगेण समाजहितं न भवति। पर्यावरणं मानवानां कार्यक्रमे यथानुकूलं प्रभावोत्पादकप्रोत्साहनं करोति। पर्यावरणम् अस्माकं सन्तोषजनक–आह्लादकरजीवनसम्पादने

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

संरक्षणे महान् आदर्शः पूर्णशिक्षकः भवति। शिक्षकस्य कार्यं भवति यत् छात्रेषु यथातेषां मूलप्रवृत्तीनां संशोधनेन जीवनसाफल्यं भवति तथापर्यावरणमहत्त्वं ज्ञापनीयम्।

प्रत्यक्षतया पर्यावरणमाध्यमेन पर्यावरणशिक्षायाः विकासः भवति चेत् मानवानां कृते अधिकाधिकलाबः भवति। यथा बालकः पशुपक्ष्यादीन् तथा सुन्दरकृतीन् दृष्ट्वा आकर्षितो भवति तथा तादृशानां विषयाणां ज्ञापनं भवेत्। वातावरणमाध्यमेन शिक्षायाः विकासः भवेत्। शिक्षायाः महत्त्वपूर्णः उपयोगः यथा भवति तथा शिक्षाप्रदानं भवेत्।

मानवाः तेषां जीवनसम्पादनाय सरक्षणाय एवम् अभिवृत्यर्थं प्रतिदिनं पर्यावरणसाहाय्येन कार्यं सुसम्पन्नं कुर्वन्ति। परिवारे तस्य जन्म भवति तत्रैव तस्य पालनं पोषणं भवति। परिवारः तस्य प्राथमिकसमूहः भवति। यदा सः शैशवावस्थां प्रपूर्य कौमारवस्थां प्रति आगच्छति तदा सः सामाजिकसमुदाये आगच्छति एवं सम्पर्कं प्राप्नोति। सः तत्र क्रियाकलेषु भागं गृह्णाति। एवं प्रकारेण वातावरणविषये तस्य प्रवेशः तथा ज्ञानं भवति। जान् ड्यूवी महाशयस्य कथनमस्ति यत् समस्तशिक्षायाः वैय्यक्तिकप्रभावेन सामाजिकचेतनायां भागग्रहणे प्रारम्भः भवति। (All education proceeds by the participation of the individual in the social consciousness of the race – John Dewey)

मानवाः प्राकृतिकपर्यावरणेन जानन्ति यत् मानवखाद्यसामग्री कुतः तदा केन प्रकारेण प्राप्ता भवतीति तथा इयं सामग्री यस्मिन् प्रदेशे उत्पन्ना भवतीति। एवं तेषां स्वास्थ्यार्थं प्राकृतिकपर्यावरणस्यावश्यकता वर्तते। एवं प्राकृतिकसौन्दर्यं रमणीयात्मकं भवति। पर्यावरणेन यत् वयं जानीमः तदेव पर्यावरणशिक्षा भवति।

❖ पर्यावरणशिक्षायाः उद्देश्यानि

- **पर्यावरणशिक्षायाः सामान्योद्देश्यानि**

पर्यावरणशिक्षायाः सामान्योद्देश्यानि निम्नलिखितानि भवन्ति। यथा –

1. प्रकृतेः संरक्षणम्।
2. कालुष्यनिवारणम्।
3. स्वास्थ्यसंरक्षणम्।
4. वनसम्पत्संरक्षणम्।
5. वन्यमृगसंरक्षणम्।
6. प्रकृतेः सौन्दर्यसंरक्षणम्।
7. दूषितवातावरणनिवारणम्।
8. उद्यानवनसंरक्षणम्।
9. स्वस्थसुखमयजीवनयापनम्।

- **पर्यावरणशिक्षायाः ज्ञानात्मकोद्देश्यानि**

1. तात्कालिकपर्यावरणस्य ज्ञानप्राप्यर्थं सहायताप्रदानम्।
2. दूरस्थपर्यवारणस्य ज्ञानप्राप्यर्थं सहायताप्रदानम्।
3. चेतनायाः अचेतनायाः च अवगाहने सहायताप्रदानम्।
4. जीवनस्य अन्योन्याश्रिततायाः अवबोधने सहयोगप्रदानम्।

5. भविष्यप्रपञ् अनियन्त्रितजनसंख्याभिवृद्धेः नियन्त्रणकार्यक्रमस्य सम्पादनम्।
6. जनसंख्याभिवृद्धेः प्रवृत्तीनां ज्ञापनम्।
7. भौतिक–मानवीयसंसाधनानां मूल्याङ्कनम् उपचारात्मकसंस्कारप्रदानं च।
8. सामाजिकप्रदूषणानां दूरीकरणाय उपयुक्तोपायानां प्रसारः।

- **पर्यावरणशिक्षायाः भावात्मकोद्देश्यानि**

1. समीपदूरस्थपर्यावरणे निहितवनस्पति–जीवजन्तूनां विषये रुचिप्रदर्शने सहायताप्रदानम्।
2. प्रकृतेः प्रशंसनम्।
3. विभिन्नजातीनां, प्रजातीनां, धर्माणां संस्कृतीनां च विषये सहनप्रदर्शनम्।
4. समानतायाः, स्वतन्त्रतायाः, तथा न्यायस्य महत्त्वप्रदानम्।

- **पर्यावरणशिक्षायाः क्रार्यात्मकोद्देश्यानि**

1. पर्यावरणशिक्षाद्वारा भ्रमण–यात्रेत्यादिकार्याक्रमाणां माध्यमेन क्रियात्मकोद्देश्यानी पूर्तिः कर्तुं शक्यते।

एवं वयं सर्वे जानीम– यत् मानवानाम् अस्तित्वसम्पादनाय एवं भौतिक–सामाजिक–मानसिकेत्यादिविकासाय यानि तत्त्वानि आवश्यकानि भवन्ति तानि प्रकृत्यां सन्ति। परन्तु प्रकृतेः सन्तुलितमहत्त्वपूर्णतत्त्वानां द्वारा व मानवविकासः भवति। तदर्थं सन्तुलितपर्यावरणपरिरक्षणम् अस्माकं कर्तव्यं भवति। सन्दर्भेऽस्मिन् डा. विद्यानिवासमिश्र महाशयस्य उचितं कथनम् अस्ति यत् प्रकतेः संरक्षणम् अस्माकं सर्वेषां महत्त्वपूर्णं कर्तव्यं भवतीति। येन अस्माकं जीवनं स्वास्थ्यपूर्णं सुखप्रदम् आनन्दमयं मनोलञ्जकं च भवति।

पर्यावरणशिक्षायाः महत्त्वम् - अस्मिन् भूमण्डले पर्यावरणप्रभावेनैव मानवानां जीवनस्य सर्वतोमुखविकासः भवति। यथा शारीरक–मानसिक–सांस्कृतिक–सामाजिक–बौद्धिक–रचनात्मक–सर्जनात्मक–सौन्दर्यात्मक–कलात्मकादिविकासाः भवन्ति। यथा विकासः तथैव उद्देश्यस्य साफल्यं भवति। उद्देश्यस्य सफलतायै सुशिक्षितबालकानां निर्माणम् आवश्यकं भवति। एते भाविनागरिकाः, भाविसंरक्षकाः नवसमाजनिर्मातारः भवन्ति। तादृशबालकानां कृते परिशुभ्रक्षेत्रे विद्यालयस्य भवननिर्माणम् अपेक्षितं भवति। यत्र शुद्धजलं, स्वच्छवायुः, प्रकाशः, आह्लादजनकपरिमलभरितपरिसरः भवति तत्र विद्यालयस् भवननिर्माणम् आवश्यकं वर्तते। तेन बालकाः आकृष्टाः भवन्ति। यतः तेषां प्रभावोत्पादकोचितव्यवहारणैव राष्ट्रस्य उन्नतिः समृद्धिः च भवति। स्वस्थे शरीरे स्वस्थ्यं मनः इति वचनानुसारेण मनोनिर्मलपरिपूर्णस्वस्थबालकानां निर्माणार्थं परिशुभ्रपर्यावरणं, तदनुकूलवातावरणं चापेक्षितं वर्तते। तादृशबालकानां कृते पर्यावरणशिक्षायाः शिक्षणावसरः वर्तते। एवं वयं जानीमः यत् विद्यालये तादृशव्यवस्था परिकल्पनीया इति।

पर्यावरणं नाम परितः विद्यमानः प्रदेशः प्रान्तं वेति वक्तुं शक्यते। यदा पर्यावरणं परिशुभ्रं शुद्धवायुसहितं कालुष्यरहितं भवति तदा अस्माकं मनः अपि निष्कल्मषं निर्मलम् आह्लादजनकं मनोरञ्जकं च भवति। यत्र मनः निर्मलम्, आनन्दजनकं, मनोरञ्जकम्, आह्लादकरं, विनोदात्मकं, सुन्दरं, शोभनं भवति। तत्रैव मानवानां जीवनं सफलं मोदप्रमोदानन्दमयं भवति। यः आनन्दमयः भवति स एव मानवः समाजहिताय, मावकल्याणाय, परोकाराय सर्वोत्तमरूपेण सेवां करोति। तादृशपरिसरे एव शारीरिक–मानसिक–बौद्धिक–नैतिक–विकासाः सन्ति। अतः विद्यालये यथा समाजे पर्यावरणशिक्षायाः व्यवस्था सम्पादनीया भवति।

उपसंहार:- एवमुपर्युक्तप्रकारेण अस्माभि: ज्ञायते यत् पर्यावरणशिक्षाया: अवसर: अतीव वर्तते। तदर्थं छात्राणां पाठ्यक्रमे परिसरशिक्षाया: अवसर: कल्पनीय: भवतीति। विद्यालये दृश्यश्रव्योपकरणानां द्वारा अपि प्रत्यक्षरूपेण पर्यावरणविज्ञानस्य महत्त्वं ज्ञापयितं शक्यते। सङ्ग्रहालयेनापि पर्यावरणशिक्षाया: प्रदानं ज्ञानार्जनं च कर्तुं शक्यते। एवं परिसरशिक्षाया: उपरि विशेषव्याख्यानमालाया: अवसर: कल्पनीय: भवति। एवं सम्पूर्णोचितपर्यवारणसंरक्षणेन अस्माकं जीवनं सफलं भवति।

सहायकग्रन्थसूची

1. शर्मा, डा0 आर्. ए., Environmental Education, सूर्या पब्लिकेशन्, 2006.
2. ए.पि., एम्. आर्., Environmental Science Education, स्टार्लिं पब्लिकेशन् प्राइभेट् लिमिटेड्, न्यू दिल्ली,1996.
3. सिं, डा0 रामपाल:, Environmental Psychology, विनोद पुस्तक् मन्दिर्, आगरा, 2002.
4. वाना, डा0 राजीव:, Environment Education, रिसर्च् पब्लिकेशन्, न्यू दिल्ली, 1999
5. ईंगिल्सन्, डि. सि.; इयोकार्स् डि. एइच्, A Guide to Curriculum Planning in Environmental Education, मिल्वौकी, 1994.
6. सिंह, एस्., Environmental Geography, प्रयाग पुस्तक् भवन्, इलाहावाद्, 1995.
7. कुमार:, भि.के., A Study in Environmental Pollution, तारा बुक् एजेन्सी, वाराणसी, 1982.

शोधशौर्यम्

Publisher

Technoscience Academy
(The International open Access Publisher)
Website : www.technoscienceacademy.com

Email: editor@shisrrj.com